हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • गुरुवार • 03.07.2025 • वर्ष : 15 • अंक : 339 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

चाईबासा से 18,000 डेटोनेटर बरामद बम निरोधक दस्ते ने मौके पर किया नष्ट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पश्चिमी सिंहभूम : पश्चिमी सिंहभूम जिले के टोन्टो थाना क्षेत्र अंतर्गत हुसिपी गांव के जंगल-पहाड़ी इलाके में सुरक्षा बलों को नक्सलियों के खिलाफ अभियान में बड़ी सफलता मिली है। चाईबासा पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के संयुक्त सर्च ऑपरेशन के दौरान नक्सलियों द्वारा छिपाए गए लगभग 18,000 डेटोनेटर बरामद किए गए। सुरक्षा कारणों से इन सभी डेटोनेटरों को बम निरोधक दस्ते ने मौके पर ही नष्ट कर दिया। पुलिस अधीक्षक कार्यालय, चाईबासा को गुप्त सूचना मिली थी कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा (माओवादी) ने टोन्टो थाना क्षेत्र के हुसिपी गांव के आसपास के जंगलों में भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री छिपा रखी है। बताया गया कि नक्सली इन डेटोनेटरों का इस्तेमाल सुरक्षा बलों पर हमले और विध्वंसक गतिविधियों के लिए करने की योजना बना रहे थे।

इस सूचना के आधार पर चाईबासा पुलिस, सीआरपीएफ की 60वीं बटालियन, कोबरा और झारखंड जगुआर की संयुक्त टीम ने क्षेत्र में व्यापक सर्च ऑपरेशन चलाया। अभियान के दौरान जंगल-पहाड़ी इलाके में नक्सलियों के छिपाए गए लगभग 18,000 डेटोनेटर बरामद किए गए, जिन्हें मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। पुलिस ने इस कार्रवाई को नक्सलियों के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी बताया है। अधिकारियों के अनुसार, यह अभियान नक्सलियों की विध्वंसक योजनाओं पर करारा प्रहार है और इससे उनकी गतिविधियों को बड़ा झटका लगा है।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार, भाकपा (माओवादी) के शीर्ष नक्सली नेता जैसे मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन, पिंटु लोहरा, चंदन लोहरा, अमित हांसदा उर्फ अपटन, जयकांत, रापा मुंडा सहित कई अन्य माओवादी फिलहाल सारंडा और कोल्हान क्षेत्र में सक्रिय हैं। इन क्षेत्रों में नक्सल विरोधी अभियान को और अधिक तेज करने की रणनीति पर कार्य किया जा रहा है। पुलिस, सीआरपीएफ, कोबरा और झारखंड जगुआर की टीमें लगातार संयुक्त अभियान चला रही हैं ताकि नक्सलियों के ठिकानों, संसाधनों और नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त किया जा सके।

टीएसपीसी के जोनल कमांडर की गोली मारकर हत्या

हजारीबाग : हजारीबाग जिले के केरेडारी थाना क्षेत्र में मंगलवार की देर रात एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गयी। बुधवार को केरेडारी-बुंडू रोड पर गेरुआ नदी के पास युवक का शव मिला। स्थानीय लोगों ने शव देखने ही पुलिस को मामले की सूचना दी। युवक के सीने में गोली मारी गयी है। मिली जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान टीएसपीसी उग्रवादी संगठन के सब जोनल कमांडर अनीश अंसारी के रूप में हुई है। अनीश रांची जिले के बुढ़मू थाना क्षेत्र के मतवे गांव का निवासी था। घटना के समय गेरुआ नदी में बालू लोडिंग का काम चल रहा था। अचानक तीन राउंड गोली चलने की आवाज सुनाई दी। इससे वहां मौजूद ट्रैक्टर चालक और मजदूर भाग गए। पुलिस के अनुसार, यह आपसी वर्चस्व की लड़ाई का मामला हो सकता है। पुलिस ने बताया कि अनीश अंसारी पर कई आपराधिक मामले दर्ज थे। उसकी हत्या के बाद पुलिस ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर जांच शुरू कर दी है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है।

गडकरी आज रातू रोड एलिवेटेड कॉरिडोर और रेहला फोर लेन रोड का करेंगे उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राजधानी रांची वासियों को आज बड़ी सौगात मिलने वाली है। केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी आज गुरुवार को रातू रोड एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन करेंगे। उद्घाटन को लेकर तैयारियां जोरों-शोरों से चल रही है। मंत्री रांची के साथ ही गढ़वा में भी एनएचएआइ की योजनाओं का उद्घाटन करेंगे।

गढ़वा में करेंगे फोर लेन सड़क का उद्घाटन

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी आज सुबह 10:40 बजे दिल्ली से रांची आयेंगे। इसके बाद गढ़वा के हूर गांव जायेंगे। वहां दिन के 12 बजे मंत्री रेहला फोर लेन सड़क का उद्घाटन करेंगे। यहां आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने के बाद वह हेलीकॉप्टर से

दिन के 2:15 बजे रांची लौटेंगे।

3 बजे होगा एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन

रांची में मंत्री नितिन गडकरी सबसे पहले बिरसा चौक स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे। यहां से रातू रोड पहुंचेंगे और करीब 3 बजे एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन करेंगे। मोटरसाइकिल जुलूस के साथ मंत्री ओटीसी ग्राउंड पहुंचेंगे और सभा को संबोधित करेंगे।

झारखंड के लिए एनएच परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे मंत्री

गडकरी झारखंड के लिए एनएच परियोजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे। इस मौके पर एनएचएआइ के कई अधिकारी मौजूद रहेंगे। यहां पर सभा भी की जायेगी। यहां आयोजित कार्यक्रम के दौरान गडकरी फ्लाइओवर का भी जायजा लेंगे। इसके बाद होटल रेडिशन ब्लू जायेंगे। वहां पर अधिकारियों के साथ एनएच की परियोजनाओं की समीक्षा करेंगे। इस बैठक में ट्रांसपोर्ट के मुद्दे पर भी अधिकारियों को आवश्यक दिशानिर्देश देंगे। शाम 6:45 बजे एयरपोर्ट जायेंगे और फिर वहां से वापस चले जायेंगे।

माइक्रोसॉफ्ट ने 9000 कर्मचारियों की छंटनी का किया ऐलान, दुनियाभर में टीमों पर असर

वाशिंगटन : टेक्नोलॉजी दिग्गज माइक्रोसॉफ्ट ने एक बार फिर बड़े पैमाने पर छंटनी का ऐलान किया है। Seattle Times की रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी अपने कुल वैश्विक कार्यबल के लगभग 4 फीसदी यानी कि 9000 के पास कर्मचारियों की छंटनी करने जा रही है। यह 2023 के बाद कंपनी की सबसे बड़ी छंटनी मानी जा रही है। जून 2024 तक माइक्रोसॉफ्ट में करीब 2,28,000 कर्मचारी कार्यरत थे। हालांकि, इस नई छंटनी की पुष्टि के लिए कंपनी ने रॉयटर्स के सवालों का जवाब नहीं दिया। जून में Seattle Times की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि माइक्रोसॉफ्ट विशेष रूप से सेल्स (बिक्री) विभाग में हजारों कर्मचारियों की कटौती की योजना बना रही है। इससे पहले, मई 2025 में भी कंपनी ने करीब 6,000 कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखाया था। माइक्रोसॉफ्ट अकेली ऐसी कंपनी नहीं है जो इस तरह के फैसले ले रही है। अमेरिका में कई बड़ी कंपनियों ने आर्थिक अनिश्चितता और संचालन लागत में कटौती के चलते 2025 में छंटनियों का सिलसिला तेज किया है। कंपनियां अपनी संरचना को दुबारा व्यवस्थित कर अधिक कुशल बनने की कोशिश कर रही हैं।

एक नजर

सड़क हादसे में पिता-पुत्र सहित तीन की मौत

गिरिडीह : गिरिडीह-देवघर मुख्य मार्ग पर बेंगाबाद थाना क्षेत्र के मधवा टोल टैक्स के समीप मंगलवार रात एक सड़क हादसा हुआ। वहां एक तेज रफ्तार ट्रक ने स्विफ्ट डिजायर कार को जोरदार टक्कर मार दी। इस भयावह हादसे में पिता-पुत्र सहित तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कार में सवार दो महिलाएं सोनी देवी और संगीता देवी गंभीर रूप से घायल हो गई। मृतकों की पहचान लिलो तुरी, छोटू तुरी और राजन तुरी के रूप में की गई है। बताया जा रहा है कि छोटू तुरी और राजन तुरी आपस में पिता-पुत्र थे। सभी लोग लिलो तुरी के भतीजी के घर अषाढ़ी पूजा के अवसर पर प्रसाद खाने गए थे।

मंत्री योगेंद्र प्रसाद के भाई का निधन मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने जताया शोक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड सरकार के कैबिनेट मंत्री योगेंद्र प्रसाद के भाई भरत कपूर का आकस्मिक निधन हो गया। हैदराबाद में उनका इलाज चल रहा था। वहां वह एआईजी में भर्ती थे। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने भरत कपूर के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में मुख्यमंत्री ने कहा, राज्य सरकार में साथी मंत्री योगेंद्र प्रसाद के भाई भरत कपूर के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार मिला। मरांग बुरु दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुःख की घड़ी सहन करने की शक्ति दे। मुख्यमंत्री सहित कई मंत्री

और जनप्रतिनिधियों ने भी मंत्री योगेंद्र प्रसाद के प्रति संवेदना प्रकट की है। इस कठिन समय में पूरा झारखंड उनके साथ खड़ा है। मंत्री दीपिका पांडेय ने भी शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि हैदराबाद में मंत्री योगेन्द्र प्रसाद के अनुज भरत कपूर के असामयिक निधन का दुःखद समाचार मिला। यह अत्यंत पीड़ादायक क्षति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिजनों को इस दुःख की घड़ी में संबल एवं शक्ति प्रदान करें। ॐ शांति। बेरमो विधायक कुमार जयमंगल ने भी इस पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा है कि झारखण्ड के उत्पाद एवं मद्य निषेध मंत्री तथा गोमिया विधानसभा से विधायक भाई योगेन्द्र प्रसाद महतो जी के अनुज भरत कपूर जी के आकस्मिक निधन की खबर से स्तब्ध हूँ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और सभी परिवारजनों को संबल दे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

बोइंग विमान मिनटों में 26,000 फीट नीचे आया, ऑक्सीजन मास्क गिरे, 191 लोग थे सवार

एजेंसी

टोक्यो : चीन के शंघाई से जापान की राजधानी टोक्यो जा रही एक फ्लाइट में बैठे 191 यात्रियों की जान उस वक्त सांसे अटक गई, जब विमान ने अचानक 26,000 फीट की ऊंचाई से तेजी से नीचे गिरना शुरू कर दिया। यह घटना 30 जून को जापान एयरलाइंस और उसकी लो-कॉस्ट पार्टनर स्प्रींग जापान की फ्लाइट में हुई।

क्या हुआ फ्लाइट में?

शंघाई पुडोंग एयरपोर्ट से उड़ान भरने के बाद, फ्लाइट जब करीब 36,000 फीट की ऊंचाई पर थी, तभी अचानक तकनीकी खराबी आ गई। विमान 10 मिनट के अंदर

लगभग 10,500 फीट की ऊंचाई पर आ गया। इस दौरान ऑक्सीजन मास्क अपने आप बाहर आ गए और विमान में मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया।

यात्रियों का डर

एक यात्री ने बताया, मैंने एक धीमा धमाका सुना और कुछ ही सेकंड में ऑक्सीजन मास्क नीचे गिर गए। एयर होस्टेस रोते हुए चिल्ला रही थीं कि तुरंत मास्क पहन लो, प्लेन में खराबी आ गई है। कुछ लोग उस समय सो रहे थे और डर से जागे। कई यात्री इतने घबरा गए कि उन्होंने अपना वसीयतनुमा मैसेज, बैंक के पिन नंबर और इंश्योरेंस डिटेल्स परिवार को भेजना शुरू कर दिया। एक यात्री ने कहा, मैंने रोते हुए अपनी बीमा और कार्ड की जानकारी मैसेज कर दी, ऐसा लग रहा था कि अब बचना मुश्किल है।

फ्लाइट को किया गया डायवर्ट

पायलट ने तुरंत इमरजेंसी घोषित की और फ्लाइट को ओसाका के कांसाई इंटरनेशनल एयरपोर्ट की ओर मोड़ दिया गया। फ्लाइट शाम 8:50 बजे सुरक्षित लैंड कर गई। गनीमत रही कि किसी को कोई चोट नहीं आई। एयरलाइंस ने सभी प्रभावित यात्रियों को 15,000 येन (करीब ₹6,900) ट्रांसपोर्ट मुआवजा और एक रात की रहने की सुविधा दी है।

अंतरराष्ट्रीय ड्रग रैकेट का भंडाफोड़, 4 महाद्वीपों में फैला था नेटवर्क

एजेंसी

नयी दिल्ली : अवैध दवा व्यापार के खिलाफ अब तक की सबसे व्यापक कार्रवाइयों में से एक के तहत नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) मुख्यालय की ऑपरेशंस यूनिट ने एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग तस्करी सिंडिकेट को सफलतापूर्वक ध्वस्त कर दिया है। यह सिंडिकेट, एन्क्रिप्टेड डिजिटल प्लेटफॉर्म, ड्रॉप शिपिंग मॉडल और क्रिप्टोकरेंसी का उपयोग कर चार महाद्वीपों में नियंत्रित दवाओं की तस्करी कर रहा था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 'एक्स' प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में कहा, एनसीबी और अन्य एजेंसियों ने ग्लोबल ड्रग कार्टेल का भंडाफोड़ किया है। जांच एजेंसियों ने मल्टीएजेंसी समन्वय का एक शानदार उदाहरण पेश किया है। इसके परिणामस्वरूप 8 गिरफ्तारियां हुईं। 5 खेप जब्त हुईं, 4 महाद्वीपों और 10 से अधिक देशों में संचालित गिरोह के खिलाफ अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में कार्रवाई हुई है। गृह मंत्री ने कहा कि हमारी एजेंसियां लगातार इन गिरोहों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले क्रिप्टो भुगतान और गुमनाम ड्रॉप शिपर्स जैसे तरीकों की निगरानी कर रही हैं।

नई दिल्ली की बंगाली मार्केट के पास वाहनों को रोक कर जांच करने की एक नियमित प्रक्रिया के रूप में शुरू हुई यह कार्रवाई एक परिष्कृत आपराधिक नेटवर्क को उजागर करने में बदल गई, जो भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप में फैला हुआ था। यह अवैध फार्मा नेटवर्क की वैश्विक पहुंच और समन्वित अंतरराष्ट्रीय प्रवर्तन कार्रवाइयों का नेतृत्व करने की एनसीबी की क्षमता को दर्शाता है। इस ऑपरेशन ने 04 महाद्वीपों और 10 से अधिक देशों में फैले एक वैश्विक नेटवर्क का खुलासा किया। 25 मई को एक गुप्त सूचना के आधार पर एनसीबी मुख्यालय की ऑपरेशन्स टीम ने दिल्ली में मंडी हाउस के पास एक कार को रोका। कार में सवार दो व्यक्तियों, जो नोएडा के एक प्रतिष्ठित निजी विश्वविद्यालय से बी. फार्मा स्नातक थे, उनके कब्जे से 3.7 किलोग्राम ट्रामाडोल टैबलेट जब्त किए गए। पकड़े गए व्यक्तियों ने स्वीकार किया कि वे एक प्रमुख भारतीय बी2बी प्लेटफॉर्म पर वेंडर प्रोफाइल संचालित कर रहे थे, जहां से वे अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में ग्राहकों को फार्मास्यूटिकल गोलियां बेचते थे।

पूछताछ से प्राप्त सुरागों ने जांच टीम को रुड़की में एक स्टॉकिस्ट तक पहुंचाया। इसके बाद दिल्ली के मयूर विहार में एक प्रमुख सहयोगी को गिरफ्तार किया गया, जिसने कर्नाटक के उडुपी में एक संपर्क का खुलासा किया। यह अमेरिका के लिए थोक ऑर्डर और शिपमेंट का इंतजाम करता था। उडुपी से एनसीबी ने 50 अंतरराष्ट्रीय खेपों के डेटा का पता लगाया, अमेरिका से अमेरिका तक 29 पैकेज, ऑस्ट्रेलिया से ऑस्ट्रेलिया तक 18 पैकेज और एस्टोनिया, स्पेन और स्विट्जरलैंड को 1-1 पैकेज, शामिल थे। उपरोक्त जानकारी वैश्विक समकक्षों और इंटरपोल के साथ साझा की गई, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका के अलबामा में अमेरिका के ड्रग एन्फोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा एक थोक री-शिपर और मनी लॉन्डरर की पहचान और गिरफ्तारी हुई। इसके साथ ही नियंत्रित दवाओं का एक विशाल भंडार जब्त किया गया।

इस सिंडिकेट ने टेलीग्राम जैसे एन्क्रिप्टेड संचार प्लेटफॉर्म पर काम किया, क्रिप्टोकरेंसी, पेपैल और वेस्टर्न यूनियन के माध्यम से भुगतान प्राप्त किया, और मामले का खुलासा होने से बचाव के लिए अनाम अंतरराष्ट्रीय ड्रॉप शिपर्स का उपयोग किया। डिजिटल फोरेंसिक जांच से नई दिल्ली और जयपुर से दो और भारतीय नागरिकों की गिरफ्तारी हुई, जो लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति-संबंधी कार्यों को संभालते थे। ऑपरेटरों ने कभी अपने गृह देशों में शिपमेंट नहीं किया और कानूनी परिणामों से बचने के लिए नेटवर्क में अन्य ड्रॉप-शिपर्स के माध्यम से समन्वय किया। अंतरराष्ट्रीय संबंधों और वित्त से जुड़े कामकाज देखने वाले मुख्य सरगना की पहचान हो चुकी है और वह यूएई में स्थित है। इस मामले में एनसीबी, यूएई के अधिकारियों के साथ मिलकर सक्रिय रूप से काम कर रहा है।

ऑस्ट्रेलिया में एक गुप्त गोली निर्माण इकाई का पता चला, जो इस सिंडिकेट से सीधे जुड़ी थी। ऑस्ट्रेलिया में कानून प्रवर्तन एजेंसी ने इस इकाई को सफलतापूर्वक ध्वस्त कर दिया। अन्य क्षेत्रों में ऑपरेशन अभी भी जारी हैं। एनसीबी द्वारा साझा की गई खुफिया जानकारी से उत्पन्न एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में अमेरिका के ड्रग एन्फोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन ने एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग तस्करी नेटवर्क के एक प्रमुख सरगना को पकड़ा है। अलबामा में स्थित एक प्रमुख री-शिपर, जोएल हॉल, को समन्वित ऑपरेशन के बाद गिरफ्तार किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 17,000 से अधिक नियंत्रित दवाओं की गोलियां जब्त की गईं। इस कार्रवाई के दौरान, अधिकारियों ने सिंडिकेट से जुड़े कई क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट और सक्रिय पार्सल भी उजागर किए, जो एक परिष्कृत और तकनीक-सक्षम तस्करी ऑपरेशन की ओर इशारा करते हैं।

श्रावणी मेला में भीड़ नियंत्रण की पुख्ता व्यवस्था बनाएं : मुख्य सचिव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राजकीय श्रावणी मेला 11 जुलाई से शुरू हो रहा है। यह 9 अगस्त तक चलेगा। इस दौरान लगभग 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के बाबा नगरी और बाबा बासुकी नाथ धाम आने की संभावना है। श्रद्धालु बाबा धाम से सुखद अनुभव लेकर लौटें, इसकी तैयारियां विभिन्न स्तरों पर व्यापक तरीके से चल रही हैं।

बुधवार को मुख्य सचिव अलका तिवारी ने तैयारियों को लेकर सभी संबंधित विभागों के प्रमुख और देवघर तथा दुमका के उपायुक्त, एसपी व अन्य अधिकारियों के साथ समीक्षा की। इस दौरान ठोस निर्णय लिए गए और उसका अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जवाबदेही तय की गई। मुख्य सचिव का फोकस लाखों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा पर थी। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था पुख्ता बनायें। आपात स्थिति से निपटने के लिए जो जहां तैनात हों, वे प्रशिक्षित, जवाबदेह और संवेदनशील हों। मुख्य सचिव ने कहा कि भगदड़ की स्थित नहीं

बने, इसके लिए तय मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करें। श्रद्धालु एक जगह अधिक संख्या में इकट्ठे नहीं हों। इसके लिए ऐसी व्यवस्था बनाएं कि वे छोटे-छोटे समूह में रहें। सुरक्षा व्यवस्था में तैनात कर्मी शिफ्ट बदलने पर तभी अपना स्थान छोड़े, जब उनका विकल्प वहां आ जाये। भीड़ नियंत्रण के लिए एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन आदि के फुटेज की लगातार मॉनिटरिंग हो और लगे कि कहीं भीड़ ज्यादा हो रही है, तो बिना समय जाया करे तत्काल उसे नियंत्रित करें। इसके अलावा यह सुनिश्चित करें कि श्रद्धालुओं का मार्ग समतल हो, ताकि ठोकर लग कर गिरने की आशंका खत्म हो जाये। जहां सीढ़ी आदि हो वहां फिसलन नहीं हो। श्रद्धालुओं के आने-जाने की अलग व्यवस्था हो। अचानक बिजली गुल नहीं हो। बिजली कटने के साथ उसकी पुनर्बहाली की वैकल्पिक व्यवस्था भी तैयार रखें। कहीं भी बिजली का नंगा तार नहीं हो और वह नीचे की ओर झूलता हुआ नहीं हो। इंट्री प्वाइंट पर मेटल डिटेक्टर से लोगों को गुजारने के दौरान इसका विशेष ध्यान रखा जाए कि वहां अत्यधिक भीड़ की स्थिति नहीं बने। वहीं पूर्व में मंदिर का कपाट खुलने के साथ भीड़ का दबाव बढ़ने का अनुभव रहा है। इसे देखते हुए जिले के उपायुक्त और एसपी उस समय अपनी मौजूदगी सुनिश्चित करते हुए व्यवस्था नियंत्रण की बागडोर संभाले। साथ ही रविवार और सोमवार को श्रद्धालुओं की तदाद काफी बढ़ती है, इसे भी संज्ञान में रखते हुए व्यवस्था बनायें।

एक नजर

ग्रामीणों ने मवेशी लदा पिकअप वैन पकड़ा पुलिस को सौंपा

बरही : मंगलवार देर रात बरही प्रखंड के सुदूरवर्ती पंचायत भंडारों में ग्रामीणों ने पशु तस्करी की आशंका पर दो मवेशी लदा पिकअप वैन संख्या जेएच 02 एक्यू 0482 पकड़ लिया। ग्रामीणों ने तुरंत इसकी सूचना बरही पुलिस को दी। सूचना मिलते ही बरही थाना से पुलिस अवर निरीक्षक दीपक कुमार दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस के पहुंचने तक चालक मौके से फरार हो चुका था। पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से मवेशियों से लदी पिकअप वैन को कब्जे में लेकर थाना परिसर ले आई। इस संबंध में बरही थाना में कांड संख्या 241/25 के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। बरही पुलिस चालक व वाहन मालिक के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की जांच में जुट गई है।

सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

हजारीबाग : सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, मालवीय मार्ग, हजारीबाग के वंदना सभा में आज 39 वीं नेशनल सब जूनियर ताइक्वांडो प्रतियोगिता के स्वर्ण पदक विजेताओं के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधन समिति के माननीय सचिव ज्ञानचंद प्रसाद मेहता, प्रधानाचार्य संजीव कुमार झा एवं स्वर्ण पदक विजेता बहनों ने दीप प्रज्वलन,भारत माता पूजन एवं मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। इस अवसर पर ताइक्वांडो के प्रशिक्षक सह पुरातन छात्र राजशेखर सिन्हा एवं स्वर्ण पदक विजेता बहन - शोभा कुमारी,चाहत कुमारी एवं रजनी कुमारी को विद्यालय के माननीय सचिव ने मेडल एवं साहित्य की पुस्तक प्रदान कर सम्मानित किया । इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में माननीय सचिव ने कहा कि बहनों ने अपने शानदार प्रदर्शन के बदौलत राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालय को गौरवान्वित किया है । यह शानदार उपलब्धि विद्यालय के लिए गर्व का विषय है । उन्होंने स्वर्ण पदक विजेताओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि आप सभी भविष्य में भी इसी तरह अपनी सफलता का परचम लहराएंगे। गौरतलब है कि हरिद्वार में दिनांक 23 जून से 25 जून 2025 तक आयोजित 39 में राष्ट्रीय सब जूनियर ताइक्वांडो चैंपियनशिप प्रतियोगिता में विद्यालय की बहनों ने अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।विदित हो कि इन खिलाड़ियों का चयन झारखंड ताइक्वांडो संघ द्वारा धनबाद में आयोजित 25 वीं झारखंड स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने के आधार पर किया गया था। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य संजीव कुमार झा ने स्वर्ण पदक विजेता बहनों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना किया। बहनों के इस शानदार उपलब्धि से विद्यालय में हर्ष का माहौल है।

दिलीप कुमार रवि बने अनुसूचित जाति के प्रदेश सचिव

हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी अनुसूचित जाति के प्रदेश अध्यक्ष केदार पासवान ने हजारीबाग सुलमी निवासी दिलीप कुमार रवि को झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी अनुसूचित जाति का प्रदेश सचिव मनोनीत किया है । जिला के मीडिया अध्यक्ष निसार खान ने बताया कि रवि के मनोनयन पर जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव वरिष्ठ कांग्रेसी लाल बिहारी सिंह, राजू चौरसिया, अजय गुप्ता, जावेद इकबाल, परवेज अहमद, भैया असीम कुमार, विजय कुमार सिंह, अमृतेष रंजन, अनिल कुमार भुईंया, अर्जुन नायक, मिन्हाज अंसारी, राम अनुज सिंह, सरयु यादव, नरसिंह प्रजापति, अर्जुन रविदास, सदरूल होदा के अतिरिक्त कई कांग्रेसियों हर्ष व्यक्त किया है और रवि को बधाई दी है ।

चौपारण में उत्पाद विभाग की बड़ी कार्रवाई 40 पेटी अवैध बियर और स्प्रिंट बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण प्रखंड अंतर्गत उत्पाद विभाग ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए बुधवार को भारी मात्रा में अवैध शराब जब्त की है। यह छापेमारी चोरदाहा पंचायत के दनुवा हाई स्कूल के पीछे के इलाके में की गई, जहां से अलग-अलग ब्रांड के करीब 40 पेटी बियर और स्प्रिंट जिस पर फॉर सेल इन पंजाब लिखा हुआ बरामद किया गया हैं। यह छापेमारी एसआई सुमितेश कुमार के नेतृत्व में की गई, जिन्होंने अपने दल-बल के साथ मौके पर पहुंचकर कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इस दौरान क्षेत्र में सघन जांच अभियान भी चलाया गया। सूत्रों के अनुसार,

यह कार्रवाई गुप्त सूचना के आधार पर की गई। बताया जा रहा है कि बरामद की गई सभी पेटियां गैर कानूनी तरीके से झारखंड में लायी गई थीं। शराब की पेटियों पर पंजाब राज्य में बिक्री के लिए अधिकृत होने का संकेत स्पष्ट रूप से अंकित था, जिससे यह साफ है कि इनका झारखंड में बिक्री अवैध थी। खबर लिखे जाने तक छापेमारी जारी थी और अधिकारियों द्वारा इलाके में सघन जांच की जा रही थी। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि इन शराब की पेटियों के पीछे कौन लोग शामिल हैं, लेकिन मामले की तहकीकात की जा रही है। इस कार्रवाई के बाद स्थानीय लोगों के बीच हड़कंप मच गया। इलाके में चर्चा है कि यह स्थान लंबे समय से शराब के अवैध भंडारण के लिए प्रयोग किया जा रहा था, लेकिन पहली बार इतनी बड़ी मात्रा में बरामदी हुई है। उत्पाद विभाग ने बताया कि यह कार्रवाई गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई है। मौके से भारी मात्रा में अवैध शराब जब्त की गई है। छानबीन की जा रही है, दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। जल्द ही इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर दोषियों की गिरफ्तारी की जाएगी। और इस बात की जांच की जा रही है कि यह खेप कहां से आई और किनके लिए लायी जा रही थी। संभावना है कि पूरे नेटवर्क का पदार्फाश जल्द हो सकता है।

अदाणी फाउंडेशन ने 80 टीबी मरीजों के बीच बांटे नि:शुल्क पोषण किट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : गोंदुलपारा खनन परियोजना के तहत अदाणी फाउंडेशन ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में टीबी रोगियों के लिए निःशुल्क पोषण किट वितरण किया गया। इस अवसर पर इलाजरत 80 टीबी मरीजों को पोषण किट वितरित किया गया। मौके पर मेडिकल ऑफिसर डॉ. मिथु हलदार ने टीबी बीमारी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला । उन्होंने अदाणी फाउंडेशन की ओर से लगातार चलाए जा रहे इस कार्यक्रम की सराहना की। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में अदाणी फाउंडेशन ने बड़कागांव स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधिकारियों ने समन्वय स्थापित कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पोषण किट वितरण कार्यक्रम में गैर सरकारी संस्था हेल्पेज इंडिया के डॉ बीपी श्रीवास्तव, सीनियर ट्रीटमेंट सुपरवाइजर दीपक कुमार, सोशल प्रोटेक्शन ऑफिसर विक्रम कुमार, फार्मासिस्ट ब्रजेश कुमार समेत अन्य लोग मौजूद थे।

रोशन लाल चौधरी ने सतबहिया पुल का निर्माण कार्य करवाया हुआ शुरू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के कांड़तरी पंचायत अंतर्गत महूदी गांव के सतबहिया टोला शिवाडीह हेंदेगिर मुख्य सड़क पर बना पुल भारी बारिश के कारण बह जाने से आवागमन बाधित हो गया था। जिससे क्षेत्र के ग्रामीणों को काफी परेशानी हो रही थी। जिसकी खबर प्रातः आवाज अखबार में प्रमुखता से छापा गया था। वहीं ग्रामीणों के द्वारा बड़कागांव के विधायक रोशन लाल चौधरी से पुल के निर्माण को लेकर मांग की गई थी। ग्रामीणों की समस्या को ध्यान में रखते हुए विधायक रोशन लाल चौधरी ने तत्परता दिखाते हुए 29 जुन 2025 को हजारीबाग उपायुक्त को पत्र

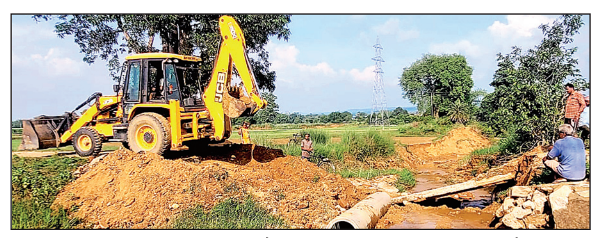

लिखकर अवगत कराया था। और स्वयं हजारीबाग उपायुक्त से मिलकर प्रमुखता से पुल के निर्माण को लेकर बात रखा था। साथ ही साथ उपायुक्त से उन्होंने हफुवा - बुंडू मार्ग , हेंदेगिर केरेडारी मार्ग कोती नदी , बुंडू - बचरा मार्ग सरैयादाह नाला , बटुका-खपिया मार्ग पर बने पुल भारी बारिश में बह जाने को लेकर अवगत कराया था।और कहा था कि अतिशीघ्र पुल का निर्माण किया जाए तथा वर्तमान में अविलंब वैकल्पिक पुल का निर्माण किया जाए। फिलहाल विधायक के पहल पर सतबहिया पुल पयुम पाइप लगाकर निर्माण कार्य करवाना शुरू कर दिया गया है। विधायक ने आगे कहा कि जल्द ही पक्की पुल का निर्माण करवाया जाएगा। फिलहाल व्यकल्पिक पुल का निर्माण कार्य जल्द शुरू हो जाने से ग्रामीणों को राहत महसूस हो रही है।

हाथियों ने दर्जनों किसानों के खेतों को रौंदा भारी नुकसान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड में हाथियों का उत्पात निरंतर बढ़ता जा रहा है। बुधवार की सुबह 27 की संख्या हाथियों की झुंड ने गंगा दोहर और हरली में जमकर तबाही मचाई है। गंगादोहर गांव में लगभग 50 एवं हरली गांव के 35 किसानों के खेतों में लगी फसलों को खा गया एवं बुरी तरह से रौंद दिया। हाथी बुधवार गंगादोहर के बडीसिमर बागी में शाम 7:00 तक डेरा जमाए हुए था।हालांकि हाथियों को भगाने के लिए वन विभाग के द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहा है । परंतु हाथी के दो बच्चों ने हाथीओं के आगे बढ़ने की गति को बिल्कुल रोक कर रखा है। कारण यह है कि 5 -6 रोज पूर्व हथनीयों ने दो नवजात हाथी के बच्चे जन्म दिया है। थोड़ी ही दूरी तय करने के बाद हाथी के बच्चे तुरंत थक जा रहे हैं, जिसके कारण हाथी का झुंड आगे बढ़ नहीं पा रहा है। दोनों नवजात हाथी के बच्चों को हाथियों ने चारों तरफ से घेरे रहते हैं ताकि बच्चे को किसी प्रकार कोई नुकसान नहीं हो। पूरे प्रखंड में हाथियों का आतंक बड़का गांव में चर्चा का विषय बना हुआ है। हाथी के बच्चे को देखने के लिए ग्रामीणों ने जान जोखिम में डालकर हाथी के करीब पहुंच जा रहे हैं। जबकि वन विभाग के द्वारा ग्रामीणों को हाथी के करीब जाने एवं उन्हें छेड़ने की मनाही की गई है। हाथियों के द्वारा बुधवार को 85 किसानों के खेतों को बुरी तरह से रौंद दिया गया। जिसमें गंगादोहर गांव के किसान देवनारायण महतो, दशरथ महतो, आनन्द कुमार, टुकेशवर महतो, भादो महतो, गोपाल महतो, बालमुकुंद प्रसाद, भुनेश्वर नारायण महतो, जितेन्द्र प्रसाद, संतोष महतो, प्रेम महतो, मोहित महतो, संजय महतो, मिथलेश महतो, दसरथ प्रसाद, सेवक महतो, रंजीत कुमार, पंचम महतो, नन्दलाल महतो, राजुकुमार मेहता, अजीत कुमार आदि वही हरली गांव के त्रिवेणी महतो, सहेश्वर महतो, गणेश महतो, कार्तिक महतो, नरेश महतो, तुलसी महतो, शंकर महतो रूदन महतो, खिरोधर महतो, रविंद्र महतो, नथू महतो, गुरदयाल महतो, विनोद महतो, प्रसाद महतो, लीलू महतो, दुलेश्वर महतो, कुंज बिहारी महतो के अलावा अन्य किसानों के खेतों को हाथियों ने भारी नुकसान पहुंचाया है।

नीड फाउंडेशन का एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण कार्यक्रम संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : प्रखंड के नापोखुर्द पंचायत अंतर्गत इंदिरा मोड़ में बुधवार को अनुसूचित जनजाति उपयोगी योजना के अंतर्गत आयोजित एकदिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।यह कार्यक्रम केंद्रीय वर्षा आधारित उपजाऊ भूमि चावल अनुसंधान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प. केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक, उड़ीसा के सहयोग से आयोजित किया गया।कार्यक्रम में क्रुरुस के प्रमुख वैज्ञानिकों की विशेष उपस्थिति रही। जिनमें मुख्य रूप से डॉ. एस. एम.प्रसाद, डॉ. एस. भगत , डॉ. बी. सी. वर्मा, डॉ. प्रियमेधा,के द्वारा किसानों को धान की उन्नत किस्म सी आर 807 के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। और बताया गया कि खरपतवार सहनशील है और वर्षा आधारित खेतों के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बड़कागांव जिला परिषद सदस्य गीता देवी और जिप प्रतिनिधि सह समाज सेवी दीपक करमाली अपनी उपस्थिति दर्ज किसानों को वैज्ञानिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के आयोजन में नीड फाउंडेशन के अध्यक्ष शिव शंकर दयाल, सदस्य सिद्धार्थ कुमार ने कार्यक्रम को सफल बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया। कार्यक्रम में भारी संख्या में किसानों भागीदारी रही।सभी ने वैज्ञानिकों से प्रत्यक्ष संवाद कर आधुनिक खेती की तकनीकों को समझा और अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

भामाशाह सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में डिजिटल बोर्ड का डीएसपी ने किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : भामाशाह सरस्वती शिशु विद्या मंदिर बरही में बुधवार को डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्मार्ट बोर्ड का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार विमल रहे। उनके साथ विद्यालय के अध्यक्ष अमित कुमार एवं प्रधानाचार्य रजनीश कुमार पाण्डेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की और स्मार्ट बोर्ड का अनावरण किया।कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत एवं स्वस्ति वाचन से हुआ। इस दौरान प्रधानाचार्य रजनीश कुमार पाण्डेय ने उपस्थित अतिथियों का परिचय कराया और विद्या भारती

की रीति-नीति से सबको अवगत कराया। मुख्य अतिथि एसडीपीओ अजीत कुमार विमल ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि वे इस विद्यालय में आकर अत्यंत प्रसन्न हैं। यहां शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में संस्कारों का समुचित विकास होता है, जिसकी झलक स्वागत गीत और स्वस्ति वाचन में स्पष्ट दिखाई दी। उन्होंने कहा कि आज के युग में आधुनिक शिक्षा जरूरी है, लेकिन अपनी पुरातन संस्कृति को साथ लेकर चलना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के शिकागो सम्मेलन के प्रसंग को उदाहरण स्वरूप रखते हुए बताया कि कैसे उन्होंने भारत की संस्कृति को दुनिया के सामने गौरवपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया था। विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष अमित कुमार ने कहा कि तकनीकी शिक्षा की वर्तमान आवश्यकता को देखते हुए विद्यालय निरंतर डिजिटल साधनों को बढ़ावा दे रहा है। फिलहाल विद्यालय में दो स्मार्ट बोर्ड लगाए गए हैं और भविष्य में और भी सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के संरक्षक त्रिवेणी साहू, कोषाध्यक्ष रोहित साहू, साहू समाज के मुखिया सह पदेन सदस्य सुरेश साहू एवं सदस्य कुंदन साहू की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

संक्षिप्त खबरें

योगेंद्र साव ने इलाजरत गुरुजी शिबू सोरेन से दिल्ली में की मुलाकात

बड़कागांव : पूर्व किस कृषि मंत्री योगेंद्र साहू नई दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में इलाजरत पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को देखने के लिए पहुंचे। इस दौरान योगेंद्र साहू ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात कर विस्तृत रूप से गुरु जी की तबीयत के बारे में हाल-चाल जाना। पूर्व मंत्री ने कहा कि शिबू सोरेन के अस्वस्थ होने का समाचार अत्यंत पीड़ादायक है, वे झारखंड को अलग राज्य दिलाने में सबसे अग्रणी भूमिका निभाई हैं। गुरु जी के आंदोलनकारी नेतृत्व से काफी प्रेरणा मिली है। जिसके कारण बड़कागांव विधानसभा वासियों के हक अधिकार दिलाने हेतु मैंने भी संघर्ष किया है। योगेंद्र साव ने बताया कि झारखंड की कण कण से जुड़े हुए ऐसे व्यक्तित्व का अस्वस्थ होना पूरे झारखंड वासियों के लिए काफी गहरी चिंता का विषय है। गुरु जी के उत्तम स्वास्थ्य के लिए वे खुद विशेष पूजा अर्चना भी कर रहे हैं।

माइक्रो फाइलेरिया से बचाव के लिए शिविर का हुआ आयोजन

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के तलसवार पंचायत में फाइलेरिया हाथी पांव से बचाव हेतु जिला स्वास्थ समिति हजारीबाग एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़कागांव के प्रभारी चिकित्सक प्रभारी डॉ अविनाश कुमार के द्वारा संयुक्त टीम पलाडू, कोयलंग के टोला परेवातरी, लंबकीटांड़, निमियाटोला ,सिमरातरी में रात्रि 8बजे के बाद फाइलेरिया रात्रि रक्त पट कार्यक्रम किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य फाइलेरिया का उन्मूलन करना है। जिसकी जानकारी भी बी डी सुपरवाइजर तरूण शर्मा ने दी, तलसवार पंचायत मुखिया गीता देवी के द्वारा इस कार्यक्रम का उदघाटन किया गया और लोगों से अपील की गई कि पंचायत के लोग जांच अवश्य कराए। शिविर में कुल 522 लोगों का ब्लड सैम्पल जांच के लिए लिया गया। मौके पर उपस्थित वार्ड सदस्या काजो देवी, स्वास्थ्य उपकेंद्र पलांडू के सी एच ओ मुकेश गोस्वामी, मनोज, नितेश, कमलेश, अवधेश, मुकेश, प्रीति, राखी, सबिता एल टी सहिया मंजू, उषा, रीना, कंचन, मीना, कंचन,अनीता, जीरवा, नमिता, ग्रामीणों में अजय कुमार, नारायण प्रसाद, रंजीत कुमार, नागेश्वर महतो, कैलाश महतो, पारसनाथ, रेखा देवी, बसंती, तिलासो, आरती सहित सैकड़ों महिलाएं एवं पुरुष मौजूद थे।

झारखंड कॉलेज के 11वीं की परीक्षार्थियों का रिजल्टशत प्रतिशत

बड़कागांव : झारखंड कॉलेज बड़कागांव में इंटरमीडिएट ग्यारवीं के सभी संकाय के सभी परीक्षार्थियों ने शत प्रतिशत सफलता प्राप्त की। विज्ञान में 24 , आर्ट्स में 210, और वाणिज्य में 6 विद्यार्थी ने परीक्षा में शामिल हुए । विज्ञान में सौरभ कुमार ने 224 अंक, आर्ट्स में नेहा कुमारी ने 210 अंक, वाणिज्य में मोहम्मद आदिल 171 अंक लाकर कॉलेज टॉपर बना। अन्य विद्यार्थी में करण कुमार 218, अनुज कुमार दांगी 215, राहुल कुमार 214, शिवम राज213, बादल कुमार तिवारी 194, आनंद कुमार 206, मोनिका कुमारी 197, मून कुमारी 194, जया यादव 191, सोनू कुमार 194, लुबना निशात182, दिनेश कुमार यादव177, पूजा साहू 177, मनीषा कुमारी187, लक्ष्मी कुमारी 157, गोपी कुमार 151, सरस्वती कुमारी 170, चितरंजन कुमार 175 अंक लाकर कॉलेज का नाम रौशन किया। कॉलेज प्राचार्य विनोद यादव ने सभी सफल विद्यार्थियों की उज्जवल भविष्य की कामना की एवं बताया कि झारखंड कॉलेज बड़कागांव लगातार 12 वर्षों से बेहतर रिजल्ट देने का काम करते हुए आ रहा है। कॉलेज सचिव श्याम सुंदर तिवारी, प्रबंधक मोहम्मद शमशेर अंसारी, प्रो रंजीत कुमार साव, मुदस्सर आलम, सुरज कुमार दास, धर्मनाथ कुमार, सत्यनारायण साव, किरण कुमार, सफाईकर्मी हुलास देवी सभी परीक्षार्थियों की उज्जवल भविष्य कि कामना की।

मुहर्रम जुलूस को लेकर चौपारण थाना की अपील, समय रहते लाइसेंस के लिए दें आवेदन

चौपारण : चौपारण थाना क्षेत्र के अंतर्गत मुहर्रम पर्व को लेकर जुलूस निकालने की तैयारी में जुटे सभी अखाड़ा कमिटियों और आयोजकों से थाना प्रशासन ने विशेष अपील की है। थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने जानकारी देते हुए कहा कि प्रत्येक जुलूस के लिए नया लाइसेंस लेना अनिवार्य है। इसके लिए सभी लाइसेंसधारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अविलंब अपना आवेदन पत्र थाना में समर्पित करें। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि विलंब से प्राप्त आवेदन पर समय पर लाइसेंस निर्गत करना संभव नहीं होगा, जिससे संबंधित जुलूस के आयोजन में बाधा उत्पन्न हो सकती है। थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने कहा कि किसी प्रकार की परेशानी से बचने के लिए सभी आयोजक कल तक अपना आवेदन थाना में अनिवार्य रूप से जमा कर दें। उन्होंने यह भी कहा कि मुहर्रम के अवसर पर विधि व्यवस्था बनाए रखने हेतु प्रशासनिक तैयारी प्रारंभ कर दी गई है और सभी आयोजकों का सहयोग अपेक्षित है।

द्वितीय भाषा को सिखाने में भी रखे शौक : डॉ रिजवान अहमद

हजारीबाग : विनोबा भावे विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अंग्रेजी विभाग द्वारा बुधवार को द्वितीय भाषा सीखने पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ रिजवान अहमद ने किया। मौके पर कई विद्यार्थियों ने अपने अपने विचार रखे। छात्र शमशेर आलम ने द्वितीय भाषा सीखने के क्रम में उम्र, पर्यावरण (एनवायरनमेंट) एवं सामाजिक ताना बाना कहाँ तक प्रभावित करता है उस पर अपने विचार रखे। आनंद ने द्वितीय भाषा सीखने के क्रम में किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है उस पर चर्चा की। राजबाला ने साईमुल्टेनियस लर्निंग के गुण एवं उसके अवगुण के बारे में बताया। अंजुम शाहीन ने द्वितीय भाषा को सीखने के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ रिजवान अहमद ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा की हममें दूसरी भाषाओं को भी सीखने का शौक होना चाहिए। द्वितीय भाषा सीखने में कठिनाइयों का सामना कैसे किया जाए उस पर उन्होंने विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने समकालिक 'साईमुल्टेनियस' एवं अनुक्रमिक 'सीक्वेंशियल' लर्निंग पर भी विस्तृत जानकारी दी। मंच संचालन क्लास रिप्रेजेंटेटिव कमीज फातिमा ने किया। इस अवसर पर दोनों ही समझ सत्र के विद्यार्थी अच्छी संख्या में उपस्थित हुए।

मुहर्रम को लेकर राज्यभर में अलर्ट, डीजीपी अनुराग गुप्ता ने की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुहर्रम पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से बुधवार को झारखंड पुलिस मुख्यालय में एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता ने की। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य के सभी प्रक्षेत्रीय व क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी, वरीय पुलिस अधीक्षक और पुलिस अधीक्षक बैठक में शामिल हुए। बैठक में डीजीपी ने साफ निर्देश दिए कि पर्व के दौरान विधि-व्यवस्था से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने सभी जिलों को संभावित संवेदनशील स्थलों पर सुरक्षा बलों की तैनाती करने, निरोधात्मक कार्रवाई पहले से सुनिश्चित करने

और अप्रत्याशित हालात से निपटने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया दल तैयार रखने के निर्देश दिए।

जुलूस मार्ग का सत्यापन अफवाहों पर कार्रवाई

डीजीपी ने सभी एसएसपी और एसपी से कहा कि जुलूस मार्ग का भौतिक सत्यापन कर लें। संवेदनशील इलाकों में उउळश कैमरे लगाएं, ड्रोन से निगरानी रखें और जुलूस के दौरान वीडियोग्राफी सुनिश्चित करें। साथ ही, सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहों पर तत्काल कार्रवाई करने को भी कहा गया। उन्होंने निर्देश दिया कि सभी जिलों में शांति समिति की बैठकें आयोजित हों, जिला नियंत्रण कक्ष पूरी तरह सक्रिय रहे और ऊख या किसी भी साउंड सिस्टम से भड़काऊ गानों के प्रसारण पर रोक लगाई जाए।

बलों के लिए सुविधा मेडिकल टीम अलर्ट

डीजीपी अनुराग गुप्ता ने सुरक्षा बलों के लिए भोजन, पानी, आवास और मेडिकल टीम की व्यवस्था पुख्ता करने के निर्देश दिए। सभी पुलिसकर्मियों को बॉडी प्रोटेक्टर और अन्य दंगा नियंत्रण उपकरणों से लैस रखने की बात कही गई। बैठक में एडीजी मुख्यालय प्रिया दुबे, आईजीपी रांची मनोज कौशिक, आईजीपी विशेष शाखा प्रभात कुमार, आईजीपी अभियान डॉ. माइकलराज एस, डीआईजी विशेष शाखा शैलेन्द्र वर्णवाल, और एसपी विशेष शाखा मुमल राजपुरोहित भी उपस्थित रहे। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से सभी जिलों के पुलिस प्रमुखों ने भाग लिया।

आरपीएफ ने चलाया रांची रेलवे स्टेशन पर विशेष सघन जांच अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने रांची रेलवे स्टेशन पर विस्फोटक पदार्थों की जांच को लेकर विशेष सघन अभियान चलाया। आरपीएफ पोस्ट रांची की ओर से आरपीएफ डीएससी पवन कुमार के निदेर्शानुसार रांची रेलवे स्टेशन पर विस्फोटक पदार्थों की जांच और विध्वंस विरोधी उपायों के तहत एक विशेष सघन जांच अभियान संचालित किया गया।

इस अभियान के दौरान प्लेटफॉर्म पर यात्रियों के सामान, बैग, स्टेशन परिसर में स्थित कूड़ेदान, मुख्य प्रवेश द्वार, स्टेशन के आगमन क्षेत्र, पार्किंग में खड़े सभी वाहनों और ट्रेनों का विधिवत निरीक्षण किया गया। इस अभियान का उद्देश्य रेलवे स्टेशन एवं यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था। अभियान के दौरान कोई भी संदिग्ध वस्तु अथवा विस्फोटक सामग्री बरामद नहीं हुई। आरपीएफ ने कहा कि रेल प्रशासन यात्रियों की सुरक्षा के प्रति सदैव तत्पर है। ऐसे सघन जांच अभियान भविष्य में भी समय-समय पर जारी रहेंगे।

शराब घोटाला : एसीबी की बड़ी कार्रवाई, प्रिज्म होलोग्राफी के एमडी विधु गुप्ता गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में 70 करोड़ से अधिक के शराब घोटाला मामले में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने बड़ी कार्रवाई की है। बुधवार को एसीबी की टीम ने प्रिज्म होलोग्राफी कंपनी के प्रबंध निदेशक (एमडी) विधु गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया है। विधु गुप्ता मूल रूप से उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के रहने वाले हैं। एसीबी ने विधु गुप्ता को 20 मई को दर्ज हुए कांड संख्या 09/25 के तहत गिरफ्तार किया है। यह शराब घोटाले में एसीबी द्वारा की गई आठवीं गिरफ्तारी है।

छत्तीसगढ़ घोटाले की तर्ज पर हुआ झारखंड में भी खेल

इस घोटाले की जड़ें छत्तीसगढ़ में हुए इसी तरह के घोटाले से जुड़ी हुई है। गिरफ्तार कारोबारी सिद्धार्थ सिंघानिया ने ही प्रिज्म होलोग्राफी और उसके

निदेशक विधु गुप्ता को झारखंड में अवैध जनशक्ति मॉडल के सक्रिय संचालक के रूप में पेश किया था। इस घोटाले में आबकारी लाइसेंस धारकों और झारखंड स्टेट बेवरेजेज कॉरपोरेशन लिमिटेड की निविदाओं के लिए विधु गुप्ता की एजेंसी के माध्यम से फर्जी जनशक्ति की लगातार तैनाती की गई। सार्वजनिक धन का गबन करने के लिए फर्जी दस्तावेजों और बढ़ाए गए वेतन दावों का भी इस्तेमाल किया गया। जांच में यह भी सामने आया है कि विधु गुप्ता के नियंत्रण में ठेकेदारों, आबकारी अधिकारियों और जनशक्ति एजेंसियों को शामिल करते हुए विभिन्न राज्यों में एक संरचित नेटवर्क काम कर रहा था। यह गिरफ्तारी झारखंड शराब घोटाले की जांच में एक महत्वपूर्ण मोड़ मानी जा रही है। आने वाले दिनों में और भी गिरफ्तारियां होने की संभावना है।

हर एक लाठी और हर एक अन्याय का हिसाब लिया जाएगा : बाबूलाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने भोगनाडीह लाठी चार्ज मामले को लेकर हेमंत सरकार पर निशाना साधा है। मरांडी ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा है कि जिस धरती से सिद्धो-कान्हू उठे थे, उस धरती पर ये अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हर एक लाठी और हर एक अन्याय का हिसाब लिया जाएगा।

मरांडी ने सोशल मीडया पर कहा कि हेमंत सरकार आज जनरल डायर की भूमिका निभाती नजर आ रही है। जिस तरह जलियांवाला बाग में बैसाखी मना

रहे लोगों पर जनरल डायर ने गोलियां चलवाई थीं, उसी तरह हूल दिवस पर अपने शहीदों को याद कर रहे आदिवासियों पर लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोले बरसाए गए। सरकार की तानाशाही यहीं नहीं रुकी। अब हेमंत सोरेन ने यह तय कर लिया है कि जो भी उनके अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएगा, उसे गिरफ़्तार कर डराने की कोशिश की जाएगी।

उन्होंने कहा कि असल में हेमंत सोरेन डरते हैं। उन्हें डर है कि अगर आदिवासी समाज ने बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ एक संगठित आंदोलन शुरू कर दिया तो उनका तुष्टिकरण का महल ढह जाएगा। वह इस बात से घबराए हुए हैं कि कहीं आदिवासी समाज यह न पूछ बैठे कि हमारे अधिकार छीन रहे हैं और आप किसके हित की राजनीति कर रहे हैं। इसलिए वे अब उस हर आवाज को कुचलना चाहते हैं। लेकिन आदिवासी समाज न भूलेगा, न माफ करेगा।

ऑटो चालाकों को सीएनजी आसानी से उपलब्ध कराए सरकार : संघ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड प्रदेश सीएनजी ऑटो चालक महासंघ ने कहा है कि पूर्व में राजधानी रांची में डीजल ऑटो और पैट्रोल ऑटो का परिचालन होता था, लेकिन तब किसी ऑटो चालकों का डीजल की किल्लत या कमी नहीं होती थी। लेकिन जब से सीएनजी ऑटो का रजिस्ट्रेशन शहरी क्षेत्रों में किया गया है। इससे ऑटो चालाकों को चार से छह घंटे लाइन लगाकर सीएनजी गैस लेना पड रहा है। ऐसे में उनकी रोज-रोटी मारी जा रही है।

इस संबंध में संघ के अध्यक्ष दिनेश सोनी ने राज्य सरकार और जिला प्रशासन से सीएनजी गैस आसानी से ऑटो चालकों को उपलब्ध कराने की मांग की है। उन्होंने कहा

कि घंटों लाइन लगाने से ऑटो चालकों की दिनभर की कमाई मारी जा रही है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार सीएनजी आसानी से उपलब्ध नहीं करा पाती है तो ऑटो चालकों को पूर्व की तरह की डीजल ऑटो चलाने की छूट दे। यदि सरकार उपरोक्त दोनों मांगों पर जल्द विचार नहीं करती है तो संघ सडक पर उतरकर आंदोलन करेगा। उल्लेखनीय है कि रांची में डीजल और सीएनजी ऑटो की संख्या 20 हजार से भी अधिक है।

एनएचएम और डाक विभाग में योजनाओं के प्रसार पर मंथन

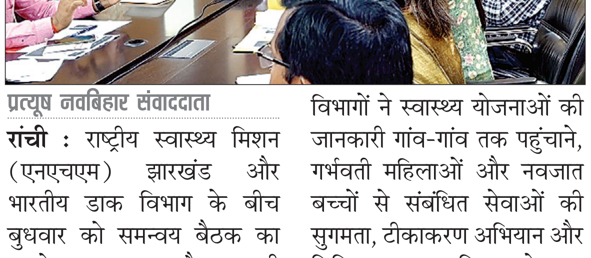

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) झारखंड और भारतीय डाक विभाग के बीच बुधवार को समन्वय बैठक का आयोजन हुआ। बैठक की अध्यक्षता एनएचएम के अभियान निदेशक शशि प्रकाश झा ने की। इस दौरान दोनों विभागों के अधिकारियों ने राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं के प्रचार-प्रसार और सुविधाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की दिशा में संयुक्त रूप से काम करने पर जोर दिया।

बैठक में भारतीय डाक विभाग की ओर से सहायक निदेशक और डाक अधीक्षक ने भाग लिया। दोनों विभागों ने स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी गांव-गांव तक पहुंचाने, गर्भवती महिलाओं और नवजात बच्चों से संबंधित सेवाओं की सुगमता, टीकाकरण अभियान और डिजिटल स्वास्थ्य मिशन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सामूहिक रणनीति तैयार करने पर चर्चा की। मौके पर अभियान निदेशक शशि प्रकाश झा ने डाक विभाग की संरचना और नेटवर्क का लाभ उठाकर राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि दोनों विभागों के संयुक्त प्रयास से लोगों में जागरूकता बढ़ेगी।

गर्ल्स स्कूल को रोटरी क्लब ने लिया गोद, बनेगा हैप्पी स्कूल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रोटरी क्लब ऑफ रांची ने सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हुए थडपखना स्थित छोटानागपुर गर्ल्स प्राइमरी और उच्च विद्यालय को गोद लिया है। क्लब ने इस विद्यालय को शैक्षणिक संसाधनों से समृद्ध कर एक हैप्पी स्कूल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है। बुधवार को आयोजित समारोह में कक्षा दो के बच्चों के लिए 10 नए डेस्क-बेंच और एक अलमारी भेंट की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अजय छाबड़ा और राजीव मोदी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। मौके पर रोट्रैक्ट क्लब ऑफ राइजिंग की ओर से बच्चों के लिए तकनीक, कला, कौशल विकास और सामान्य ज्ञान पर आधारित नियमित कक्षाएं शुरू करने की

घोषणा की गई।

इस दौरान बच्चों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण भी किया गया। विद्यालय के खेल मैदान को बैडमिंटन कोर्ट और फुटबॉल मैदान में बदलने की योजना है, ताकि विद्यार्थियों के शारीरिक विकास को भी बढ़ावा मिल सके। क्लब अध्यक्ष अमित अग्रवाल ने कहा कि सत्र 2025-26 में हैप्पी स्कूल का निर्माण हमारा प्रमुख लक्ष्य है।

कार्यक्रम में डॉ अनिल पांडेय, आस्था बेहल, शाहिद पाल, कांता मोदी, प्रकाश सरावगी सहित कई सदस्य शामिल हुए।

एक नजर

नदी से एक व्यक्ति का शव बरामद

रांची : जिले के चुटिया थाना क्षेत्र के तपोवन मंदिर के समीप स्थित नदी से एक 40 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति का शव पुलिस ने बुधवार को बरामद किया है। आशंका जताई जा रही है कि लगातार हो रही बारिश के कारण शव पानी के बहाव में बहकर यहां आया और मंदिर के पास बने पुल के नीचे फंस गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकलवाया और पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। थाना प्रभारी लक्ष्मीकांत ने बताया कि एक व्यक्ति का शव बरामद किया गया है। आसपास के लोगों से पहचान कराने पर किसी ने भी उसकी शिनाख्त नहीं की। फिलहाल पूरे मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

गुरुजी के जल्द स्वास्थ्य लाभ को लेकर अंतू तिर्की ने की पूजा-अर्चना

रांची : राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के शीघ्र स्वास्थ्य एवं दीघार्यु की कामना करते हुए बुधवार को तेतर टोली सरना स्थल मोरहाबादी में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के अंतू तिर्की ने वैधानिक तरीके से पूजा अर्चना की। तिर्की के नेतृत्व में सरना स्थल पर पूरे विधि विधान से मोरहाबादी मौजा के मुख्य पाहन सनी मुंडा की ओर से पूजा अर्चना किया गया। अंतु तिर्की ने कहा हम सबों के आदर्श दिशुम गुरु शिबू सोरेन पर सरना माता की कृपा बनी रहेगी। और वे शीघ्र स्वास्थ्य होकर वापस लौटेंगे। उनके शीघ्र स्वास्थ्य एवं दीघार्यु के लिए विशेष प्रार्थना एवं पूजा अर्चना की गई। अनुष्ठान में कार्तिक तिर्की, राम सहाय सिंह मुंडा, बीरू साहू, विनोद तिर्की, महादेव मुंडा, बजरंग लोहरा, विलियम रिचर्ड रोशन सहित अन्य लोग मौजूद थे।

एचसी के फैसले का श्रमिक संघ ने किया स्वागत

रांची : आउटसोर्सिंग व्यवस्था में काम कर रहे कर्मचारियों को अब न्यूनतम वेतन का अधिकार मिलेगा। झारखंड उच्च न्यायालय (एचसी) की ओर से पारित इस ऐतिहासिक आदेश का झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ ने जोरदार स्वागत किया है। संघ ने इसे श्रमिक अधिकारों की दिशा में मील का पत्थर बताया है। संघ के केंद्रीय अध्यक्ष अजय राय ने बुधवार को प्रेस रिलीज जारी करते हुए कहा कि वर्षों से सरकारी संस्थानों में ठेकेदारों के माध्यम से कार्यरत हजारों श्रमिकों को न्यूनतम वेतन तक नहीं मिल रहा था। न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि कोई भी श्रमिक, चाहे वह प्रत्यक्ष रूप से नियुक्त हो या एजेंसी के माध्यम से, उसे सम्मानजनक पारिश्रमिक मिलना उसका संवैधानिक अधिकार है। राय ने राज्य सरकार से सभी विभागों में कोर्ट आदेश का त्वरित अनुपालन सुनिश्चित करने की मांग की है।

कांग्रेस नेताओं ने मनाया सुबोधकांत का जन्मदिवस

रांची : पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय का 74 वां जन्म दिवस प्रदेश कांग्रेस के कार्यालय में केक काटकर नेताओं और कार्यकर्ताओं ने बुधवार को मनाया। इस अवसर पर उपस्थित प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने उनके दीघार्यु जीवन की कामना करते हुए कहा कि अपने सफल राजनीतिक जीवन में समाज के सभी वर्गों के विकास लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री अहम भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सुबोधकांत सहाय हमेशा गलत नीतियों का विरोध करने के लिए युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इस अवसर पर उपस्थित कांग्रेस विधायक दल नेता प्रदीप यादव और पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने उनके उत्तम और स्वस्थ जीवन लाभ की कामना करते हुए कहा कि युवाओं के हमेशा से प्रेरणास्रोत रहे सुबोधकांत सहाय अपने प्रारंभिक राजनीतिक जीवन से ही संघर्षों का प्रतीक रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

हूल क्रांति के समय भाजपा ने दिया था अंग्रेजों का साथ : इरफान

रांची : स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने कहा कि भाजपा ने हूल क्रांति के समय अंग्रेजों का साथ दिया था। अंग्रेजों के साथ मिलकर आदिवासियों को गुमराह करने का काम किया। मंत्री ने सोशल मीडिया एक्स बुधवार को लिखा है कि कई तरह की साजिशे रचकर आदिवासियों का अस्तित्व समाप्त करने का काम किया गया। लेकिन हूल दिवस पर आदिवासी मुद्दों पर नकली चिंता जता रहे हैं। यह सब भाजपा का दिखावा है। मंत्री ने कहा कि सबों को हूल दिवस के विशेष महत्व और इसके पीछे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना महत्वपूर्ण है।

खाटू नरेश का केसर चंदन तिलक श्रृंगार

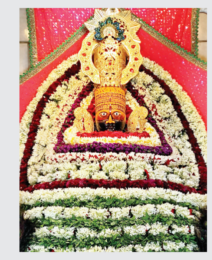

रांची : हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में बुधवार को अलग ही वातावरण था। केसर और चंदन की खुशबू से मंदिर परिसर महक रहा था। बाबा श्याम का भव्य केसर चंदन तिलक श्रृंगार मंडल के मंत्री श्याम सुंदर शर्मा के सानिध्य में किया गया। मंदिर के पट खुले तब भक्तों ने अपने आराध्य देव का दर्शन किया। आरती में भक्तों ने अपने आराध्य के आगे अर्जी लगाई। प्रातः कालीन प्रथम श्रृंगार में बाबा ने अपने प्रेमियों को श्यामल रूप में दर्शन दिया। इसके बाद श्रृंगार आरती में भक्त भाव विभोर होकर अपनी मनोहर अर्जी लगाई। श्रृंगार आरती के बाद जय जय जय खाटू के वासी जय जय बाबा श्याम से पूरा मंदिर परिसर गुंजायमान था। विश्राम आरती के बाद पट लगा दिए गए। दोपहर के विश्राम के बाद मंडल के मंत्री श्याम सुंदर शर्मा ने मंदिर के आचार्य के साथ बाबा श्याम का अनुपम केशर चंदन तिलक श्रृंगार किया। श्याम बाबा को नवीन पोशाक बागा पहनाया गया। पंचमेवा का भोग लगाया गया तत्पश्चात भक्तों के बीच इसका वितरण किया गया। भक्तों ने अपने बाबा के अनुपम दर्शन किए। मयंक अग्रवाल के द्वारा नवीन पोशाक बागा की सेवा निवेदित की गई थी। दर्शन के उपरांत सभी भक्तों के बीच प्रसाद का वितरण किया गया। आज के ग्वाल आरती में बड़े पैमाने पर भक्तों ने दरबार में हाजिरी लगाई।

राष्ट्रीय कलाकार संघ की अध्यक्ष बनी आभा भारती

रांची : अंतरराष्ट्रीय हिन्दी साहित्य भारती झारखंड प्रदेश की अध्यक्ष डॉ अरुण सज्जन की पुत्री आभा भारती को उनकी बहुआयामी रचनात्मक योगदान के लिए राष्ट्रीय कलाकार संघ की ओर से दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया है। आभा भारती अंग्रेजी और फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर हैं और बिहार सरकार से पंजीकृत शाकुंतलम कला संस्कृति मंच की संयोजक भी हैं। कोरोना काल के दौरान आभा भारती ने अंतरराष्ट्रीय कला चित्रांकन अभियान और फाइन आर्ट्स समूह के संयोजन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उन्होंने देश-विदेश के अनेक कलाकारों को एक मंच पर जोड़ा। आभा भारती की कला प्रदर्शनी अब तक मुजफ्फरपुर, पटना और दिल्ली जैसे प्रमुख शहरों में आयोजित हो चुकी है, जहां उनकी प्रतिभा को व्यापक सराहना मिली है। आभा भारती को राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय अनेक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में आभा भारती दिल्ली के उत्तम नगर, राजापुरी स्थित अपने मंच भारती एकाडमी के माध्यम से कला प्रेमी छात्र-छात्राओं को नियमित प्रशिक्षण दे रही हैं और नई पीढ़ी में सांस्कृतिक चेतना का संचार कर रही हैं। उनकी इस उपलब्धि पर साहित्य और कला जगत में हर्ष की लहर है। अंतरराष्ट्रीय हिन्दी साहित्य भारती, झारखंड, रांची जिला हिंदी साहित्य भारती सहित राज्य के कई संस्थानों के पदाधिकारीयों और सदस्यों ने आभा भारती को बधाई दी है।

बिरसा उच्च विद्यालय में सैकड़ों विद्यार्थियों के बीच पौधों का हुआ वितरण

रांची : नगर निगम रांची की अगुवाई में बुधवार को कांके रोड वार्ड एक स्थित बिरसा उच्च विद्यालय रिलेशंस मिशन लाईफ के तहत पर्यावरण संरक्षण पर सेमिनार का आयोजन हुआ। इसके साथ ही विद्यार्थियो के बीच 100 से अधिक फलदार वृक्षों का वितरण किया गया। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि रांची नगर निगम के उप प्रशासक गौतम कुमार साहू, सौरभ केशरी सहायक अभियंता स्कूल कि प्राचार्या सुषमा तिवारी, रिलेशंस के निदेशक आशुतोष द्विवेदी, टीम ग्रीन के शुभम चौधरी , रांची नगर निगम के राजकुमार सुपरवाईजर, हॉटी कल्चर सेल समेत कई लोग मौजूद थे। छात्र-छात्राओ को संस्था की ओर से पर्यावरण संबंधित कई महत्त्व पूर्ण जानकारियां दी गई। इस अवसर पर मुख्य रूप से सुधाकर यादव, रौशन कुमार सहित स्कूल के कई शिक्षक शिक्षिकाएं एवं अन्य लोग मौजूद थे।

सद्गुरु कृपा आश्रम में ट्रस्ट ने निराश्रितों को कराया भोजन

रांची : प्रणामी ट्रस्ट के तत्वावधान में विगत 18 माह से चल रहे मंगल राधिका सदानंद सेवाधाम पुंदाग के परिसर में बुधवार को सद्गुरु कृपा अपना घर आश्रम में पार्थ सारथी के सौजन्य से आश्रम में रह रहे मंदबुद्धि निराश्रितों को भोजना कराया गया। मंदबुद्धि निराश्रितों में अन्नपूर्णा सेवा भोजन कराया गया। अपना घर आश्रम के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया कि मंगल राधिका सदानंद सेवाधाम सदगुरू कृपा अपना घर में डॉ प्रशांत कुमार, मोहनलाल जिंदल, अगस्त जायसवाल, सीताराम खेतान, दिलीप कुमार गुप्ता, रेणु सिंह सहित अन्य के सौजन्य से निराश्रितों की सेवा की गई। वहीं अन्नपूर्णा सेवा कार्य में ट्रस्ट के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, सचिव मनोज कुमार चौधरी, निर्मल छावनिका, सज्जन पाड़िया, पुर्णमल सर्राफ, शिव भगवान अग्रवाल सहित अन्य सदस्य शामिल हुए।

एक नजर

90 दिवसीय विशेष मध्यस्थता अभियान कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

कोडरमा : राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार नालसा एवं माननीय सर्वोच्च न्यायालय के मध्यस्थता और सुलह परियोजना समिति द्वारा चलाये जा रहे 90 दिवसीय विशेष मध्यस्थता अभियान (मेडीएसन फॉर द नेशन) कार्यक्रम के सफलता पूर्वक संचालन को लेकर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अध्यक्षता में व्यवहार न्यायालय में 01 जुलाई से 30 सितंबर तक विशेष मध्यस्थता अभियान की शुरूआत की गई है । इस अभियान को सफल बनाने के लिए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोडरमा के प्रकोष्ठ में सभी न्यायिक पदाधिकारियों की एक बैठक आज बुधवार को संपन्न हुई । बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष बाल कृष्ण तिवारी ने बताया कि 90 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण, सुप्रीम कोर्ट की मध्यस्थता और सुलह परियोजना समिति द्वारा शुरू किया गया है । अभियान के तहत जिला एवं अनुमंडल विधिक सेवा प्राधिकार, जिला अदालत से लेकर उच्च न्यायालयों तक समझौता के लिए सभी उपयुक्त मामलो को निपटाने का प्रयास किया जायेगा।

जलसहिया कर्मियों ने लंबित मानदेय भुगतान को लेकर सौंपा ज्ञापन

जयनगर : जिले की जलसहिया कर्मियों ने मंगलवार को जिला अध्यक्ष रूबी राणा के नेतृत्व में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कार्यपालक अभियंता अनूप कुमार को 5 सूत्री मांग को लेकर ज्ञापन सौंपकर अपनी समस्याओं से अवगत कराया। जिला जलसहिया कर्मचारी संघ की अध्यक्ष रूबी राणा, सचिव सचिव अनु देवी समेत अन्य ने बताया कि जलसहिया का मासिक मानदेय कई माह से लंबित है।ज्ञापन में कहा गया है कि जल जीवन मिशन के तहत झार जल ऐप से ऑनलाइन कार्य करने के बाद हमें सिर्फ जेजेएम मद से प्रोत्साहन राशि भुगतान किया गया है,एसबीएम(जी) का प्रोत्साहन राशि अभी तक बकाया है जो कि नवंबर 2023 से सितंबर 2024 तक का वेतन राशि अभी तक बकाया है, जबकि कैबिनेट में सितंबर 2024 को मानदेय घोषणा के बाद आज तक जून 2025 तक मानदेय लंबित हो गया है। कर्मियों ने आरोप लगाया कि मार्च 2022 में प्रत्येक पंचायत से एक जलसहिया सो चापाकल का जल जांच की थी जो बकाया हम सभी को अब तक प्राप्त नहीं हुई। सहित अन्य मांग किया गया।संघ ने जल्द ही लंबित मानदेय को जल्द भुगतान करने की मांग की है। मौके पर कोषाध्यक्ष अनीता देवी, उपाध्यक्ष सोनी देवी, महामंत्री गीता देवी सहित अन्य मौजूद थे।

राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस पर ब्लड डोनेशन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कोडरमा : राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब में एक महत्वपूर्ण ब्लड डोनेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें युवा भारत पतंजलि परिवार ने भी सहभागिता की। इस कार्यक्रम में योग क्रांतिकारी जोड़ी, योगाचार्य सुषमा सुमन और योगी प्रदीप कुमार सुमन ने रक्तदान किया। कोडरमा सदर अस्पताल के सिविल सर्जन, डॉक्टर अनिल कुमार और रोटरी क्लब के अध्यक्ष संतोष कुमार सिन्हा ने योग क्रांति जोड़ी को प्रशस्ति पत्र और बुके देकर सम्मानित किया। डॉक्टर अनिल कुमार ने रक्तदान करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया और कहा कि ₹आपका प्रयास स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का एक सराहनीय कार्य है। रोटरी क्लब के अध्यक्ष संतोष कुमार सिन्हा ने पतंजलि परिवार के उत्कृष्ट सहयोग की सराहना की।

अपने भीतर की मनुष्यता जीवित रख युवा संघर्ष को बनाएं अपनी ताकत : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : आप युवा ही राष्ट्र की शक्ति हैं। आपके लिए कुछ भी असंभव नहीं। भारत आपकी ओर टकटकी लगाए देख रहा है। अपनी रुचि के अनुसार आप सकारात्मक दिशा में अपनी ऊर्जा लगाएं तथा संघर्ष को अपनी पूंजी बनाते हुए राष्ट्र-निर्माण में सहयोग करें। केवल हासिल कर लेना ही सबकुछ नहीं, रास्ता सही होना चाहिए। अपने अंदर की मनुष्यता बरकरार रखें तथा समाज के जरूरतमंदों, गरीबों, दबे-कुचलों की सेवा पूरे सम्मान व आदर के साथ करें।' उक्त बातें जिले के उपायुक्त अजय नाथ झा (भाप्रसे) ने बुधवार को डीपीएस बोकारो के 39वें स्थापना दिवस समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहीं। एआई के इस दौर में चुनौतियों की चर्चा करते हुए श्री झा ने वेद, उपनिषद की बातों को आज भी प्रासंगिक बताया। कहा कि जीवन में सफलता सबको नहीं मिलती, लेकिन सफलता के रास्ते में किया गया हरेक प्रयास काफी महत्वपूर्ण है। बच्चे टूटे नहीं, बिखरे नहीं, हारे नहीं। संघर्ष करना, जूझना और लड़ना ही उनकी ताकत है। उन्होंने बच्चों के बीच आकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा डीपीएस बोकारो को शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण धरोहर बताते हुए इसके स्थापना दिवस पर अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम की सम्मानित अतिथि उप विकास आयुक्त शताब्दी मजूमदार (भाप्रसे) ने विद्यार्थियों को अपने समाज एवं विद्यालय के प्रति कृतज्ञ रहने तथा उनके उत्थान में सहयोग करने की अपील की। उन्होंने बच्चों को मोबाइल के अत्यधिक इस्तेमाल से बचने की भी सलाह दी। सम्मानित अतिथि जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार (भावसे) ने विद्यार्थियों की सफलता के पीछे शिक्षकों की बराबर की मेहनत पर चर्चा की तथा सदैव उनका सम्मान करने की प्रेरणा दी। आरंभ में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए. एस. गंगवार ने सभी अभ्यागतों का स्वागत करते हुए स्कूल के स्थापना-काल से लेकर अबतक की प्रमुख उपलब्धियों तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में संचालित गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति केंद्रित रहने की प्रेरणा दी तथा अभिभावकों से अपने बच्चों के साथ समय बिताने की अपील की। डॉ. गंगवार ने विद्यालय द्वारा निर्धन बच्चों के शिक्षार्थ संचालित दीपांश शिक्षा केंद्र एवं निशुल्क महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र कोशिश की गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। इसके पूर्व, विद्यालय के अश्वघोष कला क्षेत्र में उत्सव के रूप में आयोजित इस समारोह का शुभारंभ अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। छात्र-छात्राओं द्वारा स्वागत गान, वाइस हेड गर्ल मानसी पांडेय के स्वागत संबोधन एवं विभिन्न वाद्ययंत्रों पर मनोहारी आर्केस्ट्रा प्रस्तुति के उपरांत पुरस्कार वितरण किया गया। दीपांश शिक्षा केन्द्र की पहली कक्षा के बच्चों में पोशाक वितरण के बाद मुख्य अतिथि ने सत्र 2024-25 के लिए मेधा सम्मान के तहत पढ़ाई के अलावा खेलकूद, सांस्कृतिक, कला-शिल्प, अनुशासन, नैतिक मूल्यों, पर्यावरण-मैत्री सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करनेवाले लगभग 50 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया।

मुहर्रम को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

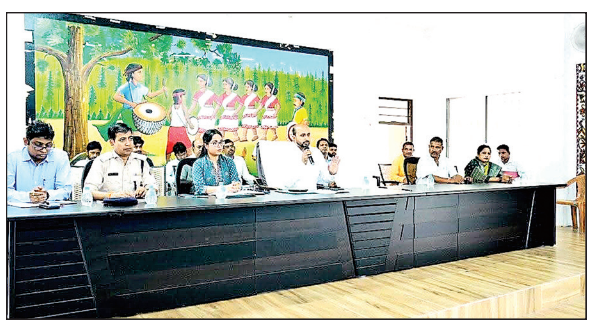

कोडरमा : मुहर्रम पर्व के मद्देनजर जिला स्तर पर शांति एवं विधि व्यवस्था संधारण को लेकर बिरसा सांस्कृतिक भवन में एक महत्वपूर्ण शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता उपायुक्त ऋतुराज ने की। बैठक में जिले के वरीय प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों के साथ-साथ समाज के प्रबुद्ध जन एवं शांति समिति के सदस्य उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने कहा कि, ह्लआप सभी समाज के लीडर हैं, अतः आपकी जिम्मेदारी है कि पर्व को शांतिपूर्ण और आपसी भाईचारे के साथ मनाया जाए। उन्होंने सभी मस्जिदों एवं इमामबाड़ों में शांतिपूर्ण रूप से इबादत करने तथा जुलूसों को निर्धारित मार्ग एवं समय के अनुसार निकालने की अपील की। उन्होंने थाना प्रभारियों एवं अंचल अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में शांति समिति की बैठकें करें एवं जुलूस मार्गों का ड्रोन सर्वे कर यह सुनिश्चित करें कि कहीं ईंट-पत्थर जैसी कोई आपत्तिजनक वस्तु न रखी हो। साथ ही जुलूस में भाग लेने वाली समितियों को यह निर्देश दिया गया कि भीड़ में कम-से-कम वालंटियर तैनात रहें। डीजे बजाने पर पूर्ण प्रतिबंध की बात दोहराते हुए उपायुक्त ने कहा कि हाईकोर्ट की गाइडलाइन के तहत भड़काऊ गीत, सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाना एवं ज्वलनशील या घातक वस्तुओं का उपयोग पूरी तरह से वर्जित रहेगा। किसी भी तरह की अप्रिय सूचना तुरंत जिला प्रशासन को देने की अपील की गई। उपायुक्त ने अंत में जिलेवासियों से अपील की कि वे जिला प्रशासन एवं पुलिस का सहयोग करें और मुहर्रम पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से मनाएं। हाईकोर्ट के रडढ का शत-प्रतिशत अनुपालन करने की भी अपील की गई। उपस्थिति इस बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, जिला परिवहन पदाधिकारी, उत्पाद अधीक्षक, विद्युत प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी, थाना प्रभारी समेत कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

उपायुक्त ने सदर अस्पताल का किया औचक निरीक्षण

कोडरमा : जिले की स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से उपायुक्त ऋतुराज द्वारा कल, दिनांक 1 जुलाई को देर रात सदर अस्पताल कोडरमा का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ओपीडी, मैटरनिटी वार्ड, ऑपरेशन थिएटर, जनरल वार्ड, जांच घर, फामेर्सी कक्ष समेत विभिन्न कक्षों की व्यवस्था का गहन अवलोकन किया। उपायुक्त ने अस्पताल की सफाई व्यवस्था पर असंतोष जताते हुए निर्देश दिया कि सभी वार्ड और शौचालयों की नियमित सफाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने खास तौर पर कहा कि शौचालयों की विशेष सफाई दिन में कम-से-कम दो से तीन बार होनी चाहिए। अस्पताल की साफ सफाई, ब्लीचिंग का छिड़काव नियमित रूप से करने का निर्देश दिया।

भारतीय जनता पार्टी का दिया हुआ बयान हताशा का परिचायक है : वीरेंद्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : हूल दिवस के मौके पर भोगनाडीह में भारतीय जनता पार्टी के द्वारा किया गया कु कृत्य नाकामि का हताशा का परिचायक है झारखंड के महापुरुषों का बलिदान भारतीय जनता पार्टी के लोगों के द्वारा हूल दिवस के मौके पर किया गया अपमान झारखंड मुक्ति मोर्चा कभी बर्दाश्त नहीं करेगी सिद्धू कान्हू फूलों जानो चांद भैरव भगवान बिरसा मुंडा तिलका मांझी इत्यादि ने सन 1855 मे अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हूल /विद्रोह का ऐलान किया था तब से अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ झारखंड के महापुरुषों ने झारखंड के मान और सम्मान के साथ समझौता नहीं किया और विद्रोह का रास्ता अपनाया कितने महापुरुषों ने अपनी बलिदानी दी लेकिन समझौता करने का काम नहीं किया परंतु भारतीय जनता पार्टी के लोगों को बताना चाहिए की झारखंड में भारतीय जनता पार्टी की सरकार को झारखंड की जनता ने 18 वर्षों तक सत्ता पर बैठने का काम किया लेकिन भारतीय जनता पार्टी के लोग सत्ता में मशगूल रहते हुए कितने महापुरुषों का बलिदान का सम्मान किया जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्य करता महापुरुषों की याद में उनकी अस्मिता और सम्मान देने का काम करती है साथ ही भारतीय जनता पार्टी के द्वारा भोगनाडीह मैं जिस तरह से साजिश रच कर संथाल को टारगेट बनाने का काम किया माननीय झारखंड के मसीहा दिसुम गुरु शिबू सोरेन की कर्मभूमि संथाल रहा है भारतीय जनता पार्टी की साजिश को झारखंड सहित संथाल में आम जनता एवं प्रशासन की सतर्कता से भारतीय जनता पार्टी को नाकामी हाथ लगी है।

पुलिस ने छापामारी कर 10 साइकिल और सोने के जेवरात किए बरामद, एक अपराधी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो के शहरी क्षेत्र में निरंतर घर में चोरी की घटना को देखते हुए पुलिस अधीक्षक बोकारो के वे निर्देश पर पुलिस उपाधीक्षक, नगर के नेतृत्व में एक टास्क फोर्स का गठन किया गया। इस टास्क फोर्स के द्वारा लगातार शहर में हो रही चोरी की बढ़ती घटनाओं में अंकुश लगाने को लेकर शहर के विभिन्न जगहों पर निरंतर छापामारी की जा रही थी और सूचना संकलन की जा रही थी । इसी क्रम में एक जुलाई को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि एक चोर सेक्टर-4 डी के तरफ रेकी कर रहा है और घर में चोरी करने के फिराक में है। ऐसे में शहर में चोरी की घटना को रोकने के लिए गठित की गई टास्क फोर्स के द्वारा इसकी सूचना तत्काल बोकारो एसपी को देते हुए छापामारी दल मौके पर पहुंची। उक्त सूचना पर छापामारी दल के द्वारा त्वरीत कारवाई करते हुए 53 वर्षीय अपराधकर्मी सोनु उर्फ आलम अंसारी उर्फ बादशाह खान को गिरफ्तार किया गया तथा उनके निशानदेही पर घर में चोरी की गई सोने के मंगलसूत्र,सोना जैसा चेन सहित बाली को बरामद किया गया। इसके साथ ही एक साईकिल सहित 10 साईकिल को बरामद किया गया। बोकारो के सेक्टर 4 थाना प्रभारी ने कहा की पकड़े गए अपराधी का अपराधिक इतिहास भी रहा है। आलोक रंजन सिटी डीएसपी,संजय कुमार, पु०नि० सह थाना प्रभारी सेक्टर-4 थाना, सुदामा कुमार दास, पु०नि० सह थाना प्रभारी बी०एस० सिटी थाना,पु०अ०नि० मुन्ना रमानी (अनुसंधानकर्ता),पु०अ०नि० अवेन्द्र कुमार साव (अनुसंधानकर्ता), पु०अ०नि० विवेक प्रशांत, स०अ०नि० सीदन हांसदा (अनुसंधानकर्ता), आदि लोग मौजूद रहे।

कथावाचक का अपमान, दलितों की पिटाई व महिला नेत्री पर अश्लील टिप्पणी के खिलाफ निकला प्रतिवाद मार्च

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झुमरीतिलैया : उत्तर प्रदेश के इटावा जिला के दादरपुर गांव में कथावाचकों के साथ जाति पूंछकर मुत्र छिड़कर अपमानित करने, उड़ीसा में गौ तस्करी के शक में दलित व्यक्ति के साथ अमानवीय बर्बरता एवं बिहार में महिला नेत्री सारिका पासवान पर अश्लील टिप्पणी के सामाजिक न्याय मंच के बैनर तले कला मंदिर से झंडा चौक तक प्रतिवाद मार्च निकाला गया. जहां मनुवाद मुदार्बाद के गगनभेदी नारों के बीच मनुस्मृति दहन किया गया। झंडा चौक पर आयोजित विरोध सभा में वक्ताओं ने पिछड़े, दलितों व अल्पसंख्यकों पर किए जा रहे हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि कथावाचकों के साथ जाति पूछकर बर्बरता की गयी, उन्हे बुरी तरह से पीटा गया, जबरिया उनके सिर के बाल मुड़वाये गये, उनके ऊपर एक व्यक्ति के पैरो पर नाक रगडवायी गयी, उन पर पेशाब भी डाली गयी। यह कृत्य भारत के संविधान में प्रदत्त व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने जैसे मौलिक अधिकारों के खिलाफ है।इस तरह की घटनाएं 2014 के बाद मोदी के नेतृत्व में आरएसएस - भाजपा की सरकार द्वारा समाज में नफरत फैलाने वाले तत्वों पर कार्रवाई नहीं करने के कारण बढ़ी है। वहीं उड़ीसा में दलित व्यक्ति के साथ गौ तस्करी के शक में घुटनों के बल पर चलवाना एवं बिहार में महिला नेत्री सारिका पासवान पर अश्लील टिप्पणी जैसी घटना पर कोई कार्रवाई नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है। देश में हिन्दू राष्ट्र के नाम पर संविधान की जगह मनुस्मृति लागू करने की साजिश हो रही है। बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में बनी भारतीय संविधान जो सबको बराबरी का अधिकार देता है. उससे बदलने की साजिश किसी भी कीमत पर बर्दास्त नहीं किया जाएगा। सभा की अध्यक्षता श्यामदेव यादव ने किया. जबकि महेन्द्र यादव, प्रकाश रजक, संजय पासवान, असीम सरकार, सईद नसीम, नारायण वर्णवाल, विजय पासवान, अर्जुन यादव, प्रकाश अम्बेडकर, उदय द्विवेदी, दामोदर यादव, कन्हाई यादव, प्रेम प्रकाश, रमेश प्रजापति, राजकुमार पासवान, राजकुमार यादव, एम चन्द्रा, बिरेन्द्र यादव, शंकर वर्णवाल, दिनेश रविदास, राजेन्द्र यादव, विकास कुमार ने संबोधित किया। मौके पर शमीम अंसारी राम प्रसाद यादव रवि शंकर यादव सुरेंद्र यादव अर्जुन यादव सिकंदर कुमार दशरथ पासवान रामेश्वर यादव असगर अली धीरज यादव चरणजीत शंकर दयाल यादव पंकज यादव समसुल अंसारी महेश यादव सिंह उर्फ मांगू विजय यादव कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विभिन्न राजनीतिक दलों, प्रगतिशील, सामाजिक व दलित संगठनों के कार्यकर्ता शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

मुस्कान हॉस्पिटल में डॉक्टर विधान चंद्र राय की जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई

बोकारो : उपनगर चास स्थित मुस्कान हॉस्पिटल के सभागार में मंगलवार को भारत रत्न डॉक्टर विधान चंद्र राय जी की जयंती एवं राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अस्पताल की वरीय स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. उषा सिंह ने केक काटकर कार्यक्रम की शुरूआत की। उनके साथ डॉ. इरफान अंसारी, डॉ. एस.सी. मुंशी, डॉ. शाहनवाज अनवर, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव समेत अस्पताल के अन्य चिकित्सक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में अस्पताल के लगभग सभी चिकित्सक, परिचारिकाएं, अधिशासी, नर्सिंग इंचार्ज उत्तम खवास, उप चिकित्सा अधीक्षक वंदना, सहायक संचालक एवं प्रबंधक श्रीमती रचना सिंह, वरिष्ठ लेखाकार संजीव कुमार सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए। इस मौके पर वक्ताओं ने डॉक्टर विधान चंद्र राय के जीवन और उनके चिकित्सा क्षेत्र में दिए गए योगदान को याद किया। साथ ही, चिकित्सकों ने अपने अनुभव साझा करते हुए समाज में डॉक्टरों की भूमिका को रेखांकित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने एकजुट होकर मरीजों की सेवा और मानवता के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने का संकल्प लिया।

प्रेम प्रसाद को न्याय दिलाने के लिए कैंडल मार्च, प्रशासन को 10 जुलाई तक अल्टीमेटम

बोकारो : प्रेम की मां न्याय कार्यक्रम के तहत सेक्टर 4 जाहेर गढ़ से प्रशासनिक भवन, बिरसा चौक होते हुए पुनः जाहेर गढ़ तक कैंडल मार्च निकाला गया। इस रैली में सैकड़ों विस्थापितों ने हिस्सा लिया। रैली का मुख्य उद्देश्य 3 अप्रैल को आंदोलन के दौरान सीआईएसएफ द्वारा लाठीचार्ज में मारे गए प्रेम प्रसाद को न्याय दिलाना था, क्योंकि अब तक उन्हें न्याय नहीं मिला है। संघ की मुख्य मांगें: प्रेम प्रसाद के नाम पर शहीद पार्क का निर्माण, जब तक स्थाई नियोजन नहीं मिलता, तब तक आवास, मेडिकल और 60 साल तक रोजगार की स्वीकृति। प्रशासन द्वारा प्रकाशित सूचना में इन मांगों पर कोई पहल नहीं की गई है। न आवास, न मेडिकल और न ही 60 साल की रोजगार की स्वीकृति की बात प्रशासन ने की है, जिसका संघ ने कड़ा विरोध किया है। रैली के माध्यम से जिला प्रशासन और प्रबंधक को 10 जुलाई तक अल्टीमेटम दिया गया है कि यदि शहीद प्रेम प्रसाद को न्याय और अप्रेंटिस की मांगों पर पहल नहीं होती, तो 10 जुलाई के बाद पुनः आंदोलन किया जाएगा। आंदोलन के दौरान आर-पार की लड़ाई की चेतावनी दी गई है, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन और प्रबंधक की होगी। इस कार्यक्रम में प्रेम की मां के साथ सैकड़ों विस्थापितों की उपस्थिति रही, जिससे माहौल भावुक और संघर्षपूर्ण रहा।

वाहन स्क्रैप पॉलिसी हेतु पहल की मांग को लेकर डीटीओ से मिले कुमार अमित

बोकारो : झारखण्ड में पुराने वाहनों के लिए राज्य स्तर पर परिवहन विभाग द्वारा स्क्रैप पॉलिसी बनाने हेतु पहल करने की माँग को लेकर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित बोकारो के ज़िला परिवहन पदाधिकारी वंदना सेजवलकर से मिले। कुमार अमित ने ज़िला परिवहन पदाधिकारी से मिल कर कहा कि पुराने वाहनों के लिए सरकार द्वारा स्क्रैप पॉलिसी बनाने से जहां सभी वाहन मालिकों को फायदा होगा वहीं सरकार को अतिरिक्त राजस्व की भी प्राप्ति होगी एवं सड़कों पर पुराने वाहनों की संख्या में भी कमी आएगी। इसके लिए ज़िला पदाधिकारी को विभागीय पहल करनी चाहिए। इसके अलावे भाजपा नेता ने ज़िला परिवहन पदाधिकारी से बोकारो में आए दिन बेतहाशा हो रही सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए भी आवश्यक कार्रवाई करने की माँग की। अमित ने कहा कि बोकारो ज़िला मे विगत तीन वर्षों के दरम्यान सड़क दुर्घटना में हुई अप्रत्याशित वृद्धि समाज के साथ-साथ प्रशासन के लिये भी चिंता का विषय है। इसे लेकर समाज और प्रशासन दोनों को जागरूक होना पड़ेगा। इसके अलावे कुमार अमित ने वर्ष 2019 के पहले के वाहनों में भी हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन नम्बर प्लेट लगाने, परिवहन विभाग द्वारा बोकारो में आम लोगों की आवागमन सुविधा के लिए सरकारी पब्लिक ट्रांसपोर्ट की भी व्यवस्था करने, ज़िला के बस संचालकों द्वारा यात्री किराया वसूली में की जा रही मनमानी पर लगाम लगाने आदि की भी माँग की। इस अवसर पर लालबाबू, गोविन्दा और सुरेन्द्र कुमार भी उपस्थित थे।

कँवारिया कुसुम साहू को फूल माला पहनाकर किया गया स्वागत

मरकच्चो : डोमचाँच प्रखंड अंतर्गत माथाडीह निवासी कुसुम साहू 30 जून को झरनाकुंड से 21 लीटर जल लेकर बाबा धाम (देवघर) जाने के क्रम मे 2 जुलाई को सुबह सावर्जानिक दुर्गा मंदिर बच्छेडीह नवलशाही के प्रांगण मे रुकी। वही शाम को पुनः बाबा नगरी देवघर के लिए पैदल यात्रा रवाना होने के क्रम मे बच्छेडीह पंचायत के समाजसेवियों और ग्रामीणों ने फूल - माला पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान लोगो ने बाबा धाम दुर है जाना जरूर है. बोल बम, बोल बम का नारा लगाया। बता दें की कुसुम साहू गौ सेवा के संकल्प के साथ 400 किलोमीटर की कांवर यात्रा पर निकली है।उनके साथ माता सरिता देवी और पिता सुरेंद्र साव भी थे. यात्रा बरियारडीह, जमुआ, चकाई होते हुए सुल्तानगंज जाएगी। वहाँ से फिर 21 लीटर जल लेकर देवघर बाबाधाम और बासुकीनाथ जाएगी. कुसुम साहू विश्व हिन्दू परिषद कोडरमा के गौ रक्षा बिभाग की प्रमुख है. स्वागत के क्रम में मुखिया प्रतिनिधि मनोज यादव, समाजसेवी किशोर यादव, समाजसेवी शंकर साव, वीरेंद्र यादव, मालती देवी, उमेश साव, कमलेश ठाकुर, राजू सिंह, सुरेंद्र साव यदि अन्य लोग मौजूद थे।

एक नजर

38 दिवसीय असिस्टेंट बुक कीपर कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग प्रशिक्षण 6 से

सिल्ली : सिल्ली श्री धर्मस्थला मंजूनाथेश्वर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रूडसेट संस्थान सिल्ली राँची में 38 दिवसीय असिस्टेंट बुक कीपर कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग प्रशिक्षण 06 जुलाई से प्रारम्भ होने वाला है इच्छुक बेरोजगार युवक एंव महिलाएं जिनका उम्र 18 से 45 वर्ष के बीच है तथा वे प्रशिक्षण लेकर अपना रोजगार करना चाहते हैं वे संस्थान कार्यालय मे संपर्क कर अपना नामांकन करा सकते हैं। यह प्रशिक्षण पूर्णत :नि :शुल्क होगा। प्रशिक्षण के लिए आधार कार्ड, राशन कार्ड, बीपीएल कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र, बैंक पासबुक, महिला समूह कोड आदि डाक्यूमेंट की आवश्कता है। विशेष जानकारी के लिए संपर्क नंबर 7820953480, 9523381187,9308544400, 7370885508।

गोंदली पोखर में मल्टी ब्रांड कार कर शोरूम का ओपनिंग

अनगड़ा : गोंदली पोखर राजधानी होटल के समीप बुधवार को मल्टी ब्रांड न्यू वेकल यूज कार का सोरूम का उद्घाटन किया गया प्रोप्राइटर संजय साहू ने बताया कि इस इस क्षेत्र मेंबड़ी गाड़ियों का शोरूम नहीं हैयह कार का पहला शोरूम का ओपनिंग हुआ है यह सोरूम खुलने से स्थानीय लोगों को गाडी लेने के लिए सहर जाना पड़ता था अब एक स्थान पर सभी कंपनी की गाड़ियां मिलेगी और आगे बता दें कि मानसून का ऑफर भी दिया जा रहा है और फाइनेंस सुविधा भी उपलब्ध है ।

मुहर्रम को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : मंगलवार को तिरुलडीह थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कुकड़ू प्रखंड की प्रखंड विकास पदाधिकारी ललिता बाखला ने की, जबकि संचालन तिरुलडीह थाना प्रभारी अविनाश कुमार द्वारा किया गया। बैठक में कुकड़ू अंचल पदाधिकारी सत्येंद्र नारायण पासवान मुख्य रूप से उपस्थित रहे। बैठक में मुहर्रम पर्व को लेकर ताजिया जुलूस के रूट चार्ट, सुरक्षा प्रबंधन, यातायात नियंत्रण, तथा कानून-व्यवस्था संधारण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। उपस्थित अधिकारियों ने शांति समिति के सदस्यगण, मुहर्रम अखाड़ा कमिटी के पदाधिकारी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों से आपसी सहयोग एवं समन्वय के साथ कार्य करने की अपील की। बैठक में यह भी बताया गया कि तिरुलडीह थाना क्षेत्र के चौड़ा में मुहर्रम अखाड़ा का ताजिया जुलूस 06 जुलाई 2025 (रविवार) को निकाला जाएगा। इस जुलुस में चौड़ा ऊपर टोला, चौड़ा मांझी टोला और पश्चिम बंगाल के हुड़ूमदा, सिरकाडीह तथा पाटाहासल का ताजिया चौड़ा मिल मैदान में शामिल होगा। इसको लेकर सभी तैयारियों को समय पर पूर्ण करने तथा आवश्यक सुरक्षा इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं शांति समिति के सदस्यों ने आश्वस्त किया कि मुहर्रम का पर्व पूर्व वर्षों की भांति सौहार्दपूर्ण और शांतिपूर्ण वातावरण में मनाया जाएगा। प्रशासन की ओर से भी सभी से सजगता एवं सहयोग की अपेक्षा जताई गई। मौके पर उप प्रमुख मोहम्मद एकराम, उप मुखिया लाल मोहम्मद अंसारी, ठाकुर सिंह मुंडा, तिरुलडीह के सदर असगर अली, चौड़ा के सदर मो. मेराज अंसारी, अखाड़ा कमिटी के शायेद अंसारी, अलीशार अंसारी, मजहर अंसारी, मईमुर अंसारी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अनगड़ा थाना में मोहर्रम को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

अनगड़ा : अनगड़ा थाना परिसर में मोहर्रम को लेकर शांति समिति की बैठक थाना प्रभारी हीरा लाल साह की अध्याचता में रखी गई बैठक में अंचल पदाधिकारी राजू कमल और इंस्पेक्टर हंसे उरांव भी शामिल थे। इस बैठक में निर्णय लिया गया है कि इस वर्ष हेसल गांव से 9 जुलाई को आपसी सौहार्द और भाई चारे के साथ जुलूस निकाला जाएगा। बैठक में मुख्य रूप से अनगड़ा थाना क्षेत्र के गण्य मान्य बुद्धिजीवी, शांति समिति के सदस्य गण और अजय महतो, डॉ रिझू नायक, शिबू मुंडा, राम पोदो, महतो, मिनहाज अंसारी, सिकंदर अंसारी, नरेश साहू, सलीम अंसारी, मुमताज खान, अब्दुल इमाम अंसारी आदि शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन पटरी पर बेहोश पड़ी मिली लड़की, आरपीएफ ने ईलाज करा परिजनों को सौंपा

सरिया : सोमवार की सुबह 10 :03 बजे गाड़ी संख्या 12365 पटना रांची जनशताब्दी एक्सप्रेस डाउन से एक लड़की गया-धनबाद रेलखंड के परसाबाद स्टेशन के पास किमी संख्या 368/24-26 के पास गिर गई है। सूचना मिलते ही आरपीएफ आरक्षी दीपक कुमार और आरक्षी विकास कुमार घटनास्थल परसाबाद-यदूडीह के बीच किमी संख्या संख्या 368/24- 26 पर पहुंचे तो देखे कि एक लड़की वहां बेहोश एवं अवस्था में डाउन लाइन से 03 फीट दूर पड़ी हुई है। दोनों स्टाफ द्वारा उक्त लड़की को तत्काल उसकी जान बचाने के लिए एक नीजी क्लिनिक परसाबाद में ले जाया गया,जहां तुरंत उसका इलाज हुआ। घायल लड़की के सर में चोट लगीं थी। होश में आने पर लड़की ने अपना नाम खुशबू कुमारी उम्र 21 वर्ष पिता संजय मोदी पता-तुर्कबाद थाना बरकट्ठा जिला हजारीबाग झारखंड बतायी। उसने घर का मोबाइल नंबर दी जिस पर कॉल कर उसके पिता संजय मोदी को सूचित किया गया। लड़की के माता पिता थोड़ी देर बाद परसाबाद पहुंचे और बताए कि मेरी बेटी गाड़ी संख्या 12365 जन शताब्दी एक्सप्रेस से पटना से कोडरमा तक आ रही थी लेकिन नींद लग जाने के कारण वह कोडरमा नहीं उतर पाई थी और मुझे कॉल कर बताई थी तो मैं उससे कहा कि यदि गाड़ी परसाबाद में रुकती है तो वहां उतर जाना। पता चला कि गाड़ी धीरे धीरे चल रही थी तो वह लड़की उतरने लगी और गिर गई थी। वर्तमान समय में घायल लड़की सामान्य स्थिति में है फिर भी उसके माता पिता बेहतर ईलाज हेतु उसे अपने साथ कोडरमा ले गए। उन्होंने अपनी बेटी के मदद करने हेतु रेलवे सुरक्षा बल को धन्यवाद दिया।

आत्मा ने किसानों के बीच किया बीज वितरण

पटमदा : बोड़ाम प्रखंड में आत्मा की ओर से एन एफ एस एन एम योजना अंतर्गत मड़वा (रागी) मिनी कीट बीज का वितरण प्रत्यक्षन के लिए कन्वर्जेंस के तहत टी एस एफ(टाटा स्टील फाउंडेशन) के 25 किसानों के बीच 4 किलो ग्राम प्रति किसान के दर पर कुल 100 किलो ग्राम बीज का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी किकू महतो, मुखिया रूपा सिंह सरदार, कुइयानी मुखिया प्रतिनिधि छुटू लाल हांसदा, बीस सूत्री उपाध्यक्ष विनय मंडल बीएओ गोपाल सुंदर मंडल, बीटीएम सुशील कुमार महतो, एटीएम चैताली दत्ता, जनसेवक सुधाकर महतो, नमिता मैंग्राज आदि उपस्थित थे।

मैट्रिक एवं इंटर परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को किया गया सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिमडेगा : सेंट्रल अंजुमन इस्लामिया, सिमडेगा द्वारा मंगलवार की शाम जमजम मेरेज हॉल में मैट्रिक एवं इंटर परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले की उपायुक्त कंचन सिंह, पुलिस अधीक्षक एम.अर्शी, उप विकास आयुक्त दीपांकर चौधरी, जिला शिक्षा पदाधिकारी मिथलेश केरकेट्टा, जिला शिक्षा अधीक्षक दीपक राम एवं चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष मोतीलाल अग्रवाल समेत कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे.कार्यक्रम में 50 से अधिक विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने मैट्रिक एवं इंटर में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। साथ ही ठेठईटांगर की आफरीन रुखसार, जो डी. फार्मा में राज्य की टॉपर बनी हैं, उसे भी विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का स्वागत पारंपरिक शॉल ओढ़ाकर एवं पौधा भेंट कर किया गया। मुख्य अतिथि कंचन सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अच्छी शिक्षा ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने कहा कि कठिन मेहनत और समर्पण से ही श्रेष्ठ परिणाम संभव है। उन्होंने कहा जब समाज शिक्षित होगा, तभी समृद्धि आएगी। पुलिस अधीक्षक एम.अर्शी ने भी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक शिक्षित समाज ही अपराध मुक्त समाज की नींव रखता है। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने की अपील की और विद्यार्थियों को ईमानदारी से मेहनत करने की प्रेरणा दी। उप विकास आयुक्त दीपांकर चौधरी ने शिक्षा को समाज के विकास का मूल आधार बताया और बच्चों को उज्जवल भविष्य के लिए प्रेरित किया। धन्यवाद ज्ञापन विधायक प्रतिनिधि मो. समी आलम ने सभी अतिथियों और आयोजकों को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

ब्यूटी पार्लर प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली श्री धर्मस्थल मंजूनाथेवश्वर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रूडसेट संस्थान सिल्ली में आज 35 दिवसीय जूनियर ब्यूटी प्रैक्टिशनर लघु उद्यमी (ब्यूटी पार्लर प्रबंधन प्रशिक्षण) कार्यक्रम का शुभारंभ समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित करना है। उद्घाटन सत्र में कुल 35 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया और प्रशिक्षण के प्रति उत्साह दिखाया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक संजीत कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक ने बताया कि यह प्रशिक्षण 35 दिनों तक चलेगा, जिसमें ब्यूटी पार्लर संचालन, ग्राहक सेवा, सौंदर्य उत्पादों का ज्ञान, और उद्यमिता कौशल पर विशेष प्रशिक्षण एवं ध्यान दिया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन प्रतिभागियों ने बेसिक स्किन केयर और हेयर केयर तकनीकों के बारे में सीखा। सभी प्रतिभागी प्रशिक्षण को लेकर बेहद उत्साहित नजर आए।

पत्रांक :– न0प0/......................../2025
कार्यालय नगर परिषद सिमडेगा
ई–मेल :– simdeganagar@yahoo.in

आम सूचना

एतत् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद सिमडेगा अन्तर्गत नव निर्मित दुकान एवं कियोस्क की चयन प्रक्रिया हेतु आवेदन प्राप्त है। उक्त आवेदनों का सत्यापन के क्रम में आंशिक त्रृटि पायी गयी है। आवेदक अपने त्रृटिपूर्ण आवेदन की सुधार हेतु दिनांक 05.07.2025 तक कार्यालय अवधि में नगर परिषद सिमडेगा कार्यालय में उपस्थित होकर त्रृटिपूर्ण आवेदन में सुधार हेतु नोटिरी अभिप्रमाणित घोषणा पत्र इस कार्यालय में समर्पित करेंगे।

प्रशासक,
नगर परिषद सिमडेगा।

PR 356317 (Simdega) 25-26 (D)

अब्दुल कय्यूम अंसारी की 121वीं जयंती पर बच्चों के बीच कॉपी-कलम का हुआ वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : अब्दुल कय्यूम अंसारी उर्दू मिडिल स्कूल इरबा में स्वतंत्रता सेनानी अब्दुल कय्यूम अंसारी की 121वें यौमे पैदाइश स्कूली बच्चों एंव शिक्षक शिक्षिकाओं के बीच उत्साह व उमंग के साथ मनाई गई। मौके पर विधालय के शिक्षक अबू अबूलैश प्यामी ने अब्दुल कयूम अंसारी की जीवनी को बच्चों को बताते हुए कहा की बाबा-ए-कौम अब्दुल कयूम अंसारी साहब की सच्ची जयंती तभी मनाई जाएगी,जब उन्हें भारत रत्न की उपाधि से नवाजा जाएगा। अब्दुल कय्यूम अंसारी ने हमेशा राष्ट्रीय एकता समाजिक समरसता और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। वहीं स्कूल की प्रधान अध्यापिका विभा कुमारी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा की हम सभी को अब्दुल कय्यूम अंसारी की जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है,उन्होंने बहुत कम उम्र में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गये,वे राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिक सौहार्द के समर्थक थे। असहयोग और खिलाफत आंदोलन के समय उन्होंने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार करने वाले छात्रों के लिए राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की थी। बुनकर समाज के उत्थान के लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे। वे बिहार सरकार में लगातार 17 वर्षों तक मंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने सामाजिक समरसता और विकास को प्राथमिकता दी।इस अवसर पर विद्यालय के सचिव अनवार अहमद अंसारी तथा विधालय के शिक्षक शिक्षिकाओं के सहयोग से 318 छात्र-छात्राओं को कोपी और कलम वितरण किया गया,इस कार्यक्रम में विधालय के प्रधानाध्यापिका विभा कूमारी, निखत आरा,मो० अबूलैश प्यारी, बाबर आजाद, तबस्सुम परवीन, रफत मतीन, शहला निगार, अशफाक अंसारी सभी सहायक शिक्षक शिक्षिकाऐं उपस्थित थे।

सरला बिरला विश्वविद्यालय में इस साल हुआ रिकॉर्ड प्लेसमेंट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : सरला बिरला विश्वविद्यालय में इस साल का प्लेसमेंट रिकॉर्ड शानदार रहा है। अब तक विवि के विभिन्न संकायों के 407 छात्र-छात्राओं का प्लेसमेंट हो चुका है। यह प्रक्रिया अब भी जारी है। प्लेसमेंट ड्राइव के माध्यम से एसबीयू के विद्यार्थियों को देश की नामी-गिरामी कंपनियों में काम करने और अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर हासिल होगा। इससे इन विद्यार्थियों के अभिभावकों में भी खुशी की लहर है। विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग और प्लेसमेंट के डीन हरिबाबू शुक्ला ने बताया कि इस वर्ष प्लेसमेंट में संस्थान के छात्र को अधिकतम 9 लाख रुपए प्रति वर्ष का पैकेज मिला। इस वर्ष का औसतन पैकेज चार लाख रुपए रहा है। इस बार संस्थान में देश विदेश की 150 से अधिक कंपनियों ने प्लेसमेंट प्रक्रिया में भाग लिया। इस वर्ष डेलोइट, एक्सेंचर, टीसीएस, विप्रो, डी मार्ट, स्ट्रेडा, बिरला ओपस, डीएसपी म्युचुअल फंड, लीप , चोलामंडलम इन्वेस्टमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड, आईडीबीआई बैंक, आईटीसी, एक्सिस बैंक, क्रॉस लिमिटेड, आइसीआइसीआइ प्रूडेंशियल, मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड, बर्जर पेंट्स, आर्टेक एलएलपी, टाटा कैपिटल, टाटा एआईजी, फर्स्ट चॉइस रेडीमिक्स, ईएसएल स्टील लिमिटेड वेदांता, ईवाई, कॉग्निजेंट, ट्रांसरेल लाइटिंग लिमिटेड, गोदरेज एंड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग लिमिटेड, टेक महिंद्रा, अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड, कृष्णा मारुति लिमिटेड, एलएंडटी मशीनरी, अपोलो टायर्स, सायकेम टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, लक्ष्मी एग्री कॉम्पोनेंट्स एंड फॉर्गिंग्स , सुब्रोस लिमिटेड, जेप्टो, शोभा लिमिटेड इत्यादि कंपनियों में विवि के विद्यार्थी अपनी जगह बनाने में सफल रहे।

झारखण्ड सरकार
कार्यालय : जिला मत्स्य पदाधिकारी, सिमडेगा

सिमडेगा जिला के अल्पकालीन बन्दोबस्ती के लिए खुला डाक द्वारा करने हेतु सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि सिमडेगा जिला के विभिन्न प्रखण्डों में अवस्थित राजस्व जलकरों की वित्तीय वर्ष 2025–26 से 2027–28 (1 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2028) तक के लिए अल्पकालीन बंदोबस्ती अद्योहस्ताक्षरी की उपस्थिति में खुले डाक द्वारा दिनांक– 08.07.2025 को 12:30 बजे अपराह्न में अपर समाहर्त्ता, सिमडेगा/जिला मत्स्य पदाधिकारी, सिमडेगा के कार्यालय कक्ष में किया जाएगा।

बंदोबस्ती हेतु जलकरों की सूची :–

क्र0 सं0	जलकरों का नाम	ग्राम	पंचायत	प्रखण्ड	खाता सं0	प्लॉट सं0	रकबा सं0	जलक्षेत्र	सुरक्षित जमा राशि	अभ्युक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	लट्ठाखम्हान तालाब	लट्ठाखम्हान	लट्ठाखम्हन	ठेठईटांगर	-	948, 949	1.00	0.80	12000.00	
2	गरजा तालाब	गरजा	गरजा	सिमडेगा	3025	-	1.08	0.80	17000.00	

डाक की शर्तें:– डाक में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को डाक बोली के पूर्व सुरक्षित जमा राशि का 20 प्रतिशत, प्रतिभूति राशि के रूप में जमा करना होगा। डाक समाप्त होने पर उच्चतम डाक वक्ता को छोड़कर बाकी प्रतिभागियों की प्रतिभूति राशि वापस कर दी जाएगी एवं उच्चतम डाक वक्ता की प्रतिभूति राशि उच्चतम डाक की राशि में समायोजित की जाएगी। डाक में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपना पहचान पत्र लाना अनिवार्य है। अल्पकालीन बन्दोबस्ती की अवधि तालाब/जलकर के अभ्युक्ति कॉलम के अनुसार होगी। डाक की स्वीकृति के पश्चात् उच्चतम डाक वक्ता को संबंधित एकरानामा करना अनिवार्य है एवं अद्योहस्ताक्षरी से परवाना प्राप्त किये बिना उक्त जलकर में उच्चतम डाक वक्ता कोई कार्य नहीं करेंगे। बंदोबस्त तालाब का निबंधन, निबंधन कार्यालय द्वारा निर्धारित राशि का स्टॉम्प शुल्क देकर निबंधन कराना अनिवार्य है। निबंधन के पश्चात् ही कार्यालय से परवाना निर्गत किया जाएगा। अद्योहस्ताक्षरी को किसी भी समय किसी भी बोली को बिना कारण बताये रद्द करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा।

जिला मत्स्य पदाधिकारी
सिमडेगा

PR 356375 Simdega(25-26).D

देशव्यापी आम हड़ताल की तैयारी को ले भुरकुंडा में कोल फिल्ड मजदूर यूनियन की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

भुरकुंडा : भुरकुंडा पटेलनगर स्थित कोल फील्ड मजदूर यूनियन के क्षेत्रीय कार्यालय में आगामी 9 जुलाई को होने वाली देशव्यापी हड़ताल की तैयारी को लेकर बुधवार को क्षेत्रीय पदाधिकारियों की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय अध्यक्ष उदय सिंह एवं संचालन क्षेत्रीय सचिव अशोक गुप्ता ने किया। बैठक में क्षेत्रीय अध्यक्ष उदय सिंह ने कहा कि यह हड़ताल मजदूर हितों की रक्षा और कोयला उद्योग को निजीकरण से बचाने के लिए अत्यंत जरूरी है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा 44 श्रम कानूनों को समाप्त कर चार लेबर कोड लागू करना मजदूर विरोधी कदम है, जिससे उनके अधिकारों का हनन हो रहा हउै। उन्होंने इसे ह्यकाला कानून बताते हुए कहा कि यह नीति सिर्फ कोयला उद्योग ही नहीं, बल्कि रेलवे, पोस्ट ऑफिस और अन्य सरकारी उपक्रमों को भी निशाना बना रही है। क्षेत्रीय सचिव अशोक गुप्ता ने कहा कि बरका-सयाल क्षेत्र में सीएमयू के सदस्य संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में हड़ताल को पूर्ण समर्थन देंगे। उन्होंने 3 जुलाई को बरकाकाना में होने वाले संयुक्त मोर्चा के कन्वेंशन में सभी सदस्यों से भागीदारी की अपील की। बैठक का समापन सुधीर सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। बैठक में संजय यादव, मनोज सिंह, मनोज कुमार राम, राजाराम बेदिया, विनोद साव, दयानंद केसरी, अशोक सिंह, मो. हसन, सेवक मोची, हंसराज राम, गजाधर राम, आशित कुमार सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थें।

झारखण्ड सरकार
कार्यालय : जिला मत्स्य पदाधिकारी, सिमडेगा

वेद–व्यास आवास निर्माण योजना हेतु आवेदन आमंत्रण सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वित्तीय वर्ष 2025–26 में राज्यादेश सं0 08 रा0(वि0), दिनांक– 24.06.2025 के द्वारा सिमडेगा जिले के सभी सक्रिय मत्स्य पालकों/मछुआरों/समिति के सदस्यों हेतु सिमडेगा जिले में लघु शीर्ष–789–अनुसूचित जातियों के लिए विशेष घटक योजना के तहत 05 एवं लघु शीर्ष–796–जनजातीय क्षेत्र उपयोजना के तहत 05 कुल 10 वेद–व्यास आवास निर्माण योजना का लक्ष्य प्राप्त है। आवेदन पत्र कार्यालय अवधि में जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा से पंजी में नाम दर्ज कराते हुए आवेदन पत्र प्राप्त कर सकते हैं। सभी इच्छुक मत्स्य पालक दिनांक– 25.08.2025 तक आवेदन विहित प्रपत्र में भरकर आवश्यक कागजातों के साथ कार्यालय में जमा कर सकते हैं।

1. कृषि प्रभाग द्वारा अधिष्ठापित सिंगल विंडो के माध्यम से प्राप्त आवेदनों अथवा समाचार पत्रों में विज्ञापन के उपरांत प्राप्त आवेदनों में से लाभुकों का चयन किया जाएगा। पूर्व के आवेदनों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। आवास निर्माण हेतु अधिकतम प्रति लाभुक मो0–191200/– रू0 मात्र की आर्थिक सहायता होगी।
2. सक्रिय अथवा परम्परागत मत्स्य पालक/मछुआ जो मत्स्य उत्पादन/मत्स्य बीज उत्पादन/प्राकृतिक जल संसाधनों में मछली पकड़ने /मत्स्य बिक्री में सक्रिय हों को प्राथमिकता दी जाएगी।
3. प्राथमिकता गरीबी रेखा से नीचे कच्चे मिट्टी से बने अथवा फूस के मकान में रहने वाले मछुआ/मत्स्य पालक को दी जाएगी।
4. आवास निर्माण हेतु जमीन उपलब्ध रहने तथा कच्चा घरवाले मछुआरों को भी कंडिका 01 एवं 02 के अतिरिक्त लाभान्वित किया जा सकता है। एक परिवार में एक आवास देय है। आवश्यकतानुसार पति–पत्नी के संयुक्त नाम से स्वीकृति दी जाएगी।
5. प्रक्रियानुसार आवेदक दिव्यागों हेतु स्वीकृत राशि का न्यूनतम 03 प्रतिशत् तथा महिलाओं के लिए न्यूनतम 10 प्रतिशत् राशि का प्रावधान जिलावार किया जाएगा।
6. ऐसे लाभुकों को दोबारा लाभ नहीं दिया जाएगा, जो पूर्व संचालित विभागीय मछुआ आवास योजना अथवा इंदिरा आवास या समतुल्य केन्द्र/राज्य सरकार की आवास योजना से लाभान्वित हो चुके हैं।
7. आवेदक को वर्त्तमान में रह रहे अपने कच्चे आवास का जियो टैग फोटोग्राफ आवेदन के साथ संलग्न करना होगा।
8. आवेदन पत्र के साथ फोटो, जाति प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र, भूमि संबंधित कागजात (भूमि स्वामित्व प्रमाण पत्र) संलग्न करना आवश्यक है। अधूरा एवं वांछित कागजात संलग्न नहीं होने वाले आवेदनों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।
9. लाभुक का चयन राज्यादेशानुसार गठित समिति द्वारा की जाएगी, जिसका निर्णय अंतिम होगा तथा उस पर किसी प्रकार का कोई भी पत्राचार नहीं किया जाएगा।
10. किसी भी आवेदन को विभाग हित में स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित रहेगा।
11. प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (इंदिरा आवास) के मानक प्राक्कलन के आधार पर आवास निमार्ण का कार्य लाभुकों के द्वारा स्वंय कराया जाएगा।

जिला मत्स्य पदाधिकारी,
सिमडेगा

PR 356378 (Simdega)25-26*D

महिला आरक्षण की दहलीज पर लोकतंत्र अब दलों को जिम्मेदारी उठानी होगी

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम, यानी संविधान का 106वां संशोधन, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने का ऐतिहासिक प्रयास है। यह अधिनियम लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण सुनिश्चित करता है, लेकिन इसकी सफलता महज संविधान में दर्ज होने से नहीं होगी–बल्कि इस पर अमल करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति से तय होगी। वर्ष 2029 के आम चुनावों में यदि यह आरक्षण प्रभावी होता है, तो यह न केवल भारत के लोकतंत्र के लिए निर्णायक मोड़ होगा, बल्कि महिलाओं के नेतृत्व की दिशा भी तय करेगा। इसके लिए राजनीतिक दलों को अभी से व्यापक और दूरदर्शी कदम उठाने होंगे। भारतीय राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति हमेशा सीमित रही है। 2024 में चुनी गई 18वीं लोकसभा में सिर्फ 74 महिलाएं चुनकर आईं, जो कुल सीटों का मात्र 13.6% हैं। यह आंकड़ा 2019 की तुलना में भी घटा है और वैश्विक औसत 26.9% से काफी पीछे है। राज्य विधानसभाओं की स्थिति और भी चिंताजनक है, जहां औसतन केवल 9% ही महिलाएं विधायक हैं। यह न केवल लैंगिक असमानता को दशार्ता है बल्कि नीति-निर्धारण की उस प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है जिसमें आधी आबादी की हिस्सेदारी नगण्य है।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के निम्न स्तर के कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है भारतीय समाज की गहरी पैठी हुई पितृसत्तात्मक सोच। महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया जाता है, जिससे नेतृत्व के अवसर स्वाभाविक रूप से पुरुषों को मिलते हैं। 'सरपंच पति' जैसी प्रथाएं इस सोच को और भी स्पष्ट करती हैं। राजनीतिक दलों के भीतर भी यह धारणा प्रचलित है कि महिलाएं चुनाव जीतने की दृष्टि से कमजोर प्रत्याशी होती हैं। लेकिन यह एक मिथक है, जिसे हाल के आंकड़े खारिज करते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 लोकसभा चुनाव में महिलाएं केवल 9.6% उम्मीदवार थीं, लेकिन उनकी सफलता दर पुरुषों से अधिक थी - उन्होंने 13.6% सीटें जीतीं। महिलाओं के सामने आर्थिक संसाधनों की कमी भी एक बड़ी बाधा है। भारत में चुनाव लड़ना अत्यंत महंगा है, और अधिकांश महिलाएं–खासकर ग्रामीण व पिछड़े वर्गों से–स्वतंत्र रूप से इतने संसाधन नहीं जुटा सकतीं। इसके अलावा, राजनीति का वातावरण भी महिलाओं के लिए असुरक्षित और शत्रुतापूर्ण रहता है। उन्हें ट्रोलिंग, चरित्र हनन, और मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका आत्मविश्वास डगमगाता है। राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिए मार्गदर्शन, प्रशिक्षित नेतृत्व विकास, और निर्णय लेने वाली इकाइयों में शामिल करने जैसी संस्थागत व्यवस्थाएँ भी अक्सर अनुपस्थित रहती हैं। महिला मोर्चा बनाकर उन्हें पार्टी के मुख्य ढांचे से अलग कर दिया जाता है, जिससे वे सत्ता के निर्णायक केंद्रों से दूर रह जाती हैं। 2029 के आरक्षण को सार्थक बनाने के लिए राजनीतिक दलों को अब से ही तैयारी करनी होगी। सबसे पहला कदम है–स्वैच्छिक आंतरिक कोटा। टिकट वितरण में 33% महिला उम्मीदवारों को प्राथमिकता देना केवल आरक्षण की तैयारी नहीं, बल्कि समावेशी लोकतंत्र की दिशा में पहल होगी। ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी जैसी मिसालें बताती हैं कि आंतरिक कोटा राजनीति की संस्कृति को सकारात्मक रूप से बदल सकते हैं। दूसरा आवश्यक कदम है–वित्तीय सहायता और संरचित प्रशिक्षण। राजनीतिक दलों को महिला उम्मीदवारों के लिए अलग चुनावी फंड बनाना चाहिए ताकि वे चुनावी खर्च का बोझ उठा सकें। कनाडा का जूडी लामार्श फंड इसका अच्छा उदाहरण है। साथ ही, पंचायतों और नगरपालिकाओं में सक्रिय महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा और संसद स्तर के लिए तैयार करने का नेतृत्व कार्यक्रम भी चलाया जाना चाहिए। महिलाओं को पार्टी की कोर कमेटियों, नीति निर्माण इकाइयों और प्रवक्ता मंडल में भी सक्रिय भूमिका देनी चाहिए।

सूडोकु नवताल- 7479

★★★✯☆ मध्यम

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7478 का हल

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

हिन्दू राष्ट्र का ढोल और जातिवाद का आतंक

निर्मल रानी

स्वयंभू हिन्दू राष्ट्रवादियों द्वारा गत एक दशक से देश के बहुसंख्यक समाज को भारत को 'हिन्दू राष्ट्र ' बनाने का सपना दिखाया जा रहा है। देश के अनेक दक्षिणपंथी नेताओं से लेकर तमाम कथावाचक व संत समाज से जुड़े लोग इसी 'प्रोपेगण्डे' को प्रचारित करने में जुटे हुये हैं। इसी हिन्दू राष्ट्र की दुहाई देकर समाज में धर्म के आधार पर नफरत फैलाई जा रही है। सत्ता संरक्षित नफरती लोग धर्म विशेष के विरुद्ध जमकर जहर उगल रहे हैं और इसी बहाने देश के बहुसंख्य समाज को हिंदुत्व के नाम पर संगठित होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिस देश में सभी धर्मों के लोग सदियों से मिलकर रहते आ रहे हों उस देश के बहुसंख्य समाज को अब अल्पसंख्यक समाज का भय दिखाकर शेष बहुसंख्य समाज को एकजुट होने का पाठ केवल और केवल अपने राजनैतिक लाभ के लिए पढ़ाया जा रहा है। और इन्हीं दक्षिणपंथी शक्तियों द्वारा इसी हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम पर छेड़ी गयी मुहिम के मध्य, देश के उस संविधान को भी बदलने का प्रयास किया जा रहा है जो भारतवसियों को समानता, समरसता, समाजवाद व धर्मनिरपेक्षता का अधिकार देता है। साथ ही इन्हीं स्वयंभू हिन्दू राष्ट्रवादियों द्वारा विवादित मनुस्मृति को भातीय संविधान के रूप में थोपे जाने की वकालत भी की जा रही है। यह शक्तियां उसी मनुस्मृति को

देश पर थोपने के लिये प्रयासरत हैं जिसे संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर ने 25 दिसंबर 1927 को महाराष्ट्र के महाड में सार्वजनिक रूप से जलाया था। मनुस्मृति का विरोध करने वाले लोग आज भी उस ऐतिहासिक दिन को 'मनुस्मृति दहन दिवस' के रूप में याद करते हैं। डॉ अंबेडकर ने मनु स्मृति का दहन इसलिये किया था क्योंकि यह ग्रंथ सामाजिक असमानता और जाति व्यवस्था को प्रोत्साहित करने वाली शिक्षाओं को बढ़ावा देता है। जबकि मनु स्मृति का विरोध व इसके दहन का उद्देश्य दलितों और शोषित वर्गों के लिए समानता और न्याय की मांग को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करना था।

सवाल यह है कि दक्षिणपंथियों द्वारा जिस मनुस्मृति की पैरवी की जा रही है क्या वह हिन्दू राष्ट्रवादियों द्वारा दिखाये जा रहे हिन्दू राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को पूरा करने में सहायक साबित हो सकती है ? यदि हाँ तो पहला सवाल तो यही की बाबा साहब जैसी शख़्सियत को इसे जलाने की नौबत ही क्यों आई? और दूसरे यह कि आखिर हिन्दू धर्म में वह कौन सी व्यवस्था थी जिसका विरोध करते हुये डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में एक ऐतिहासिक धर्म परिवर्तन समारोह में बौद्ध धर्म स्वीकार किया। और इस सामूहिक धर्म परिवर्तन समारोह में डॉ. आंबेडकर के साथ उनके लगभग 3,80,000 अनुयायियों ने जिनमें मुख्य रूप से दलित समुदाय के लोग शामिल थे, बौद्ध धर्म स्वीकार किया। आज भी इस सामूहिक धर्म परिवर्तन को भारत में सामाजिक समानता और दलित आंदोलन का एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

परन्तु दुःख का विषय तो यह है कि शोषित वर्ग द्वारा किये गये इस धर्म परिवर्तन के बावजूद आज भी मनुवादियों की सोच में कोई अंतर नहीं आया है। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह जातिवादी विचारधारा गत दस वर्षों में और भी सिर चढ़ कर बोलने लगी है। और तो और अब इस जातिवादी सोच का शिकार केवल दलित समाज के लोग ही नहीं बल्कि पिछड़ी जातियों के लोग भी होने लगे हैं। इसका जीता जागता प्रमाण पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में केवर थाना क्षेत्र के दादरपुर गांव में देखने को मिला। यहाँ भागवत कथा कहने आए यादव समाज से सम्बन्ध रखने वाले एक कथावाचक भागवताचार्य व्यास मुकुट मणि के साथ ब्राह्मण समाज के लोग अत्यंत क्रूरता से पेश आये। कथावाचक को अपमानित किया उनके साथ मारपीट की और उनकी चोटी काटकर इस क्रूरता का वीडियो भी वायरल कर दिया गया। उनका कुसूर यही बताया गया कि कथा वाचन कर रहे व्यास, ब्राह्मण समुदाय के नहीं थे इसलिए उनकी चोटी काट दी गई और उनका वीडियो वायरल किया गया। इतना ही नहीं बल्कि बाल काटने के बाद 5 घंटे तक उन्हें बंधक बनाकर भी रखा गया। जातिवादी क्रूरता का अध्याय यहीं समाप्त नहीं हुआ बल्कि पीड़ित कथावाचक के अनुसार भागवत कथा के दौरान जो ब्राह्मण महिला परीक्षित थी, उसके पैरों पर कथावाचक की जबरन नाक रगड़वाई गई और उसी ब्राह्मण महिला के मूत्र से उस पर छिड़काव भी किया गया। उस पंडितानी महिला का मूत्र छिड़कने के बाद इन जातिवादियों द्वारा उससे कहा गया कि 'ब्राह्मण का मूत्र तुम्हारे ऊपर पड़ गया अब तुम पवित्र हो गए'। जरा सोचिये कि कौन सी शिक्षा व संस्कार हैं जो इस क्रूरता के लिये जाति विशेष के लोगों दूसरी जातियों के विरुद्ध प्रोत्साहित करते हैं ?

दलितों के साथ तो ऐसी घटनाएं गोया आम बात हो चुकी हैं। पिछले दिनों ऐसी ही एक ह्रदय विदारक घटना उड़ीसा में हुई जहाँ गोतस्करी का आरोप लगाकर कुछ जातिवादी गुंडों द्वारा पहले तो उनसे पैसे वसूलने की कोशिश की गयी। जब दलित युवक पैसे देने में असमर्थ हुये तो उन दोनों युवाओं को 2 किलोमीटर तक घुटने के बल चलने के लिये मजबूर किया गया। इनके सर के बाल भद्दे तरीके से काटे गये उन्हें मारा पीटा गया ,उनके कपड़े फाड़े गये, उन्हें घास फूस खिलाई गयी। इतना ही नहीं बल्कि उन्हें नाले का गन्दा पानी पीने के लिए भी मजबूर किया गया। इस तरह की घटनाएं भी आम हो चुकी हैं। अफसोस यह कि ऐसी क्रूर सोच व घृणित संस्कार रखने वाले लोगों को अनेक संतों व नेताओं का समर्थन भी मिल जाता है और वह मनुस्मृति जैसे जातिवादी धर्म ग्रंथों व संहिताओं से ही ढूंढ कर इन जातिवादियों के पक्ष में तर्क भी पेश कर देते हैं। और ऐसे ही जातिवादी लोगों के पैरोकार व समर्थक ही हिन्दू राष्ट्र व हिन्दू एकता जैसी विरोधाभासी बातें भी करते हैं।

और इससे भी बड़ी हास्यास्पद बात यह है कि यह शक्तियां अपनी कुरीतियां छुपाने के लिये अपने धर्म ग्रंथों व संहिताओं का जिक्र करने के बजाये मुगलों का नाम लेने लग जाती हैं। यानी एक ओर तो यह हिन्दू धर्म व संस्कृति को विश्व का सबसे प्राचीन धर्म बताते हैं जिसमे वर्ण व्यवस्था का जिक्र और इस व्यवस्था का महिमामंडन जगह जगह किया गया है दूसरी ओर मात्र 1400 वर्ष पुराने इस्लाम धर्म पर अपनी जातिवादी व्यवस्था का ठीकरा फोड़ने की कोशिश करते हैं। दरअसल स्वयंभू उच्च जाति वालों की यह एक सोची समझी रणनीति है जिसके तहत यह लोग हिन्दू राष्ट्र का ढोल पीटते रहते हैं इसी बहाने हिन्दू समाज को एकजुट कर इनका राजनैतिक लाभ उठाने की भी कोशिश करते हैं। परन्तु इनके ग्रन्थ व संस्कार इन्हें जातिवाद का आतंक फैलाने से रोक नहीं पाते।

सहयोग की शक्ति और सामाजिक समरसता का उत्सव

ललित गर्ग

हर वर्ष जुलाई के पहले शनिवार को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस मनाया जाता है। यह दिन सहकारी संस्थाओं की उपलब्धियों को रेखांकित करने और उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान को सम्मानित करने का अवसर होता है। सहकारिता एक ऐसा आंदोलन है जो एकता में शक्ति की भावना को मजबूत करता है और लोकतांत्रिक, समावेशी और न्यायसंगत आदर्श समाज के निर्माण में सहायक बनता है। सहयोग की शक्ति और सामाजिक समरसता के इस उत्सव का 2025 की थीम है सहकारिताः एक बेहतर दुनिया के लिए समावेशी और टिकाऊ समाधान लाना। यह थीम पर्यावरण-संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, और सामाजिक समावेशन जैसे विषयों को सहयोग के माध्यम से हल करने की प्रेरणा देती है। आज के समय में जब आर्थिक विषमता और सामाजिक असंतुलन बढ़ रहा है, सहकारिता एक वैकल्पिक और मानवीय मॉडल प्रस्तुत करती है। यह न केवल आर्थिक विकास की राह दिखाती है, बल्कि सामाजिक विश्वास, सह-अस्तित्व और भाईचारे को भी बढ़ावा देती है।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त यह 29वां अंतर्राष्ट्रीय सहकारी दिवस और 101वां अंतर्राष्ट्रीय सहकारी दिवस होगा। यह सहकारी आंदोलन का एक वार्षिक उत्सव है जो अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन द्वारा 1923 से जुलाई के पहले शनिवार को मनाया जाता है। इस उत्सव का उद्देश्य सहकारिता के बारे में जागरूकता बढ़ाना, संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन के पूरक लक्ष्यों और उद्देश्यों को उजागर करना, संयुक्त राष्ट्र द्वारा संबोधित प्रमुख समस्याओं के समाधान में आंदोलन के योगदान को रेखांकित और विस्तारित करना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में घोषित किया है। यह घोषणा 2012 में पहले सफल आयोजन के बाद की गई है और वैश्विक स्तर पर सतत विकास को बढ़ावा देने में सहकारी समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देती है। दुनिया भर की सहकारी समितियां दिखाएंगी कि कैसे वे एकजुटता और लचीलेपन के साथ युद्ध, महामारी एवं प्राकृतिक आपदा संकट का सामना कर रही हैं और समुदायों को जन-केंद्रित और पर्यावरण की दृष्टि से न्यायसंगत पुनर्प्राप्ति की पेशकश कर रही हैं।

सहकारिता दिवस इस बात का प्रचार करने का अवसर है कि किस प्रकार मानव-केन्द्रित व्यवसाय मॉडल, जो स्वयं-सहायता और एकजुटता के सहकारी मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व और समुदाय के प्रति चिंता के नैतिक मूल्यों द्वारा समर्थित है, असमानता को कम कर सकता है, साझा समृद्धि का सृजन कर सकता है। सहकारी समितियां, जो आर्थिक सफलता को सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ संतुलित करने की अपनी अनूठी क्षमता के लिए जानी जाती हैं, उन्हें सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में देखा जाता है। संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव सदस्य देशों को सहकारी समितियों के लिए एक सहायक कानूनी और नीतिगत माहौल को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसमें कृषि, वित्त और खुदरा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उनके महत्व पर जोर दिया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) ने इस पहल का गर्मजोशी से स्वागत किया है। आईसीए के अध्यक्ष एरियल ग्वार्को ने इस घोषणा को संगठन के सतत विकास के लिए चल रहे प्रयासों के साथ संरेखित करने पर प्रकाश डाला। इस घोषणा से वैश्विक स्तर पर समानतापूर्ण और लचीली अर्थव्यवस्था बनाने में सहकारी समितियों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ने की उम्मीद है, खासकर जलवायु परिवर्तन और आर्थिक असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों के सामने। सहकारिता पर ध्यान केंद्रित करके, संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य टिकाऊ, समुदाय-केंद्रित समाधान प्रदान करने में मॉडल की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करना है।

सहकारिता, जिसे अंग्रेजी में कोआपरेटिव कहते हैं, एक ऐसा संगठन है जिसमें लोग स्वेच्छा से मिलकर काम करते हैं ताकि अपनी सामान्य आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। यह एक लोकतांत्रिक रूप से नियंत्रित व्यवसाय है जहां सदस्य ही मालिक होते हैं और व्यवसाय का संचालन और लाभ का वितरण भी सदस्यों के बीच ही होता है। सहकारिता का अर्थ है, मिलजुल कर काम करना या आपस में सहयोग करना। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोग स्वेच्छा से एक साथ मिलकर काम करते हैं, ताकि वे अपने सामान्य आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें. सहकारिता का मुख्य उद्देश्य आपसी सहयोग, समानता और सामूहिक हित को बढ़ावा देना है। इसका मूल मंत्र है सभी के लिए एक, और एक सभी के लिए।

भारत में सहकारिता की भावना एवं विचारधारा आजादी से पहले से जन-जन में रची-बसी है। भारत की जनता के स्वभाव में सहकारिता घुली मिली है, ये कोई उधार लिया विचार नहीं है। सहकारिता भारत के संस्कार में है। भारत में सहकारिता आंदोलन कभी भी अप्रासंगिक नहीं हो सकता। सहकारिता की जड़े 1904 के सहकारी ऋण समितियां अधिनियम से जुड़ी हैं। स्वतंत्रता के बाद यह आंदोलन और भी सशक्त हुआ। चाहे अमूल जैसी डेयरी सहकारी संस्थाएं हों या सहकारी बैंकों और किसान समितियां, उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में जब सहकारिता आंदोलन की सबसे अधिक जरूरत थी, तब यशस्वी एवं दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सहिकारिता मंत्रालय का गठन करके सहकार से समृद्धि के स्वप्न को साकार करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहकारिता को नये आयाम दिये हैं। उनके नेतृत्व में केंद्र सरकार सहकारिता क्षेत्र के माध्यम से करोड़ों किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। सभी राज्यों के सहकारिता मंत्री अपने-अपने राज्यों में कृषि मंत्रियों के साथ समन्वय कर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि आम लोगों के साथ-साथ धरती माता का स्वास्थ्य भी बेहतर हो सके।

गरीब कल्याण और गरीब उत्थान, बिना सहकारिता के सोचा नहीं जा सकता। नरेन्द्र मोदी के मन की इच्छा है कि छोटे से छोटे व्यक्ति को विकास की प्रक्रिया में हिस्सेदार बनाना, सहकारिता की प्रक्रिया से हर घर को समृद्ध बनाना और हर परिवार की समृद्धि से देश को समृद्ध बनाना, यही सहकार से समृद्धि का मंत्र है। देश पर जब-जब कोई विपदा आई है, सहकारिता आंदोलनों ने देश को बाहर निकाला है। कॉपरेटिव बैंक बिना मुनाफे की चिंता किए लोगों के लिए काम करते हैं क्योंकि, भारत के संस्कारों में सहकारिता है। आज देश में लगभग 91 प्रतिशत गांव ऐसे हैं जहां छोटी-बड़ी कोई न कोई सहकारी संस्था काम करती है। सहकारिता गरीबों और पिछड़ों के विकास के लिए है। राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम-(एनसीडीसी) और सहकारिता मंत्रालय जैसे संस्थान इस क्षेत्र को संगठित और सशक्त बनाने का कार्य कर रहे हैं। भारत की सहकारिता सोच एवं मोदी सरकार की प्रतिबद्धताएं दुनिया के लिये एक प्रेरक मॉडल है। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस केवल एक दिवस नहीं, बल्कि एक विचारधारा है, एक ऐसा आंदोलन जो समाज को जोड़ने, ऊपर उठाने, संतुलित विकास और ग्रामीण जीवन को टिकाऊ बनाने की क्षमता रखता है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि यदि हम साथ मिलकर कार्य करें, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं। सहयोग ही सशक्तिकरण की कुंजी है।

आतंकवाद पर वैश्विक मौन अस्वीकार्य

योगेश कुमार गोयल

चीन के किंगदाओ में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की रक्षा मंत्रियों की बैठक इस बार भारत की आक्रामक और स्पष्ट कूटनीतिक रणनीति की स्पष्ट साक्षी बनी। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने संयुक्त घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने से जब यह कहते हुए इनकार कर दिया कि उसमें आतंकवाद जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे को नजरअंदाज कर दिया गया है तो यह भारत का केवल एक औपचारिक विरोध नहीं, बल्कि भारत की सुरक्षा प्राथमिकताओं और कूटनीतिक दृढ़ता का स्पष्ट संकेत था। इस विरोध के जरिये उन्होंने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया कि भारत अब केवल प्रतीकात्मक भाषणों और कूटनीतिक शिष्टाचारों से आगे बढ़ चुका है। भारत का संदेश दृढ़ है कि आतंकवाद को सामान्य नहीं माना जा सकता। भारत के इस फैसले को चीन और पाकिस्तान के लिए बड़ा कूटनीतिक झटका माना जा रहा है। भारत का यह कदम एससीओ जैसे बहुपक्षीय मंचों पर दोहरे मापदंडों के खिलाफ खासकर उन देशों के लिए एक चेतावनी है, जो आतंकवाद को अपने रणनीतिक हितों के लिए एक औजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। भारत ने साफ कर दिया कि आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति केवल शब्दों तक सीमित नहीं है बल्कि उसके व्यवहार में भी प्रतिबिंबित होती है। भारत का यह कदम पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अलग-थलग करने की रणनीति का हिस्सा तो है ही, चीन को भी यह स्पष्ट संदेश है कि भारत अपने सुरक्षा हितों के साथ कोई समझौता नहीं करेगा।

एससीओ की बैठक में राजनाथ सिंह की टिप्पणी, आतंकवाद मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है और जो देश आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं या उसे पनाह देते हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए, सीधे तौर पर पाकिस्तान की ओर संकेत था, हालांकि उन्होंने उसका नाम नहीं लिया। दक्षिण एशिया पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियों के कारण ही दशकों से अस्थिरता और हिंसा से जूझ रहा है और अब भारत इस खतरे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर और मुखरता से उजागर कर रहा है। भारत की इस बार की विशेष आपत्ति पहलगाम हमले को लेकर थी। यह हमला लश्कर-ए-तैयबा की सहायक इकाई टीआरएफ (द रेजिस्टेंस फ्रंट) द्वारा किया गया था, जिसमें 26 निर्दोष नागरिक मारे गए थे।

भारत ने एससीओ के मसौदा दस्तावेज में इस हमले का उल्लेख नहीं किए जाने को गंभीर चूक नहीं बल्कि एक सोची-समझी रणनीति माना, जिसके पीछे पाकिस्तान को बचाने की कोशिश साफ दिखती है। भारत का यह रुख अचानक नहीं बना बल्कि यह उस दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, जिसमें भारत हर अंतरराष्ट्रीय मंच पर आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहयोग की बात करता रहा है और दोहरे मानदंडों को उजागर करता रहा है। इससे पहले भी भारत ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) में शामिल होने से इनकार कर दिया था क्योंकि उसमें चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) को शामिल किया गया था, जो भारत की संप्रभुता का उल्लंघन करता है। एससीओ की स्थापना 2001 में चीन, रूस, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और कजाखस्तान के साथ हुई थी। हालांकि इसकी जड़ें शंघाई फाइव से जुड़ी हैं, जो 1996 में चीन, रूस तथा तीन मध्य एशियाई गणराज्यों द्वारा सीमा सुरक्षा विश्वास को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया एक समूह है। भारत और पाकिस्तान 2017 में इसके सदस्य बने। इस संगठन का उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी अभियान, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक संवाद था परंतु बीते वर्षों में यह मंच धीरे-धीरे चीन और पाकिस्तान के राजनीतिक एजेंडे का उपकरण बनता गया है। आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दों पर इस संगठन की चुप्पी उसकी प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगा रही है। इस बार के संयुक्त घोषणापत्र में ब्लूचिस्तान में कथित आतंकी घटनाओं का उल्लेख तो किया गया लेकिन पहलगाम जैसे जघन्य हमले को अनदेखा किया गया।

भारत ने इसे पाकिस्तान के आरोपों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर वैधता देने की साजिश बताया। ब्लूचिस्तान में विद्रोही गतिविधियां वहां के लोगों की आत्मनिर्णय की मांग से जुड़ी हैं, जिन्हें पाकिस्तान भारत-प्रायोजित आतंकवाद कहकर गुमराह करने की कोशिश करता है। चीन, जो सीपीईसी के माध्यम से ब्लूचिस्तान में भारी निवेश कर रहा है, पाकिस्तान के इन दावों का समर्थन करता रहा है। यही कारण है कि भारत को इस घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने से स्पष्ट इनकार करना पड़ा।

यह पहली बार नहीं है, जब भारत ने एससीओ में ऐसा सख्त रुख अपनाया हो। बिश्केक (2019) और अस्ताना (2024) में भी भारत ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि आतंकवाद पर कोई समझौता नहीं हो सकता। हालांकि उस समय भारत ने दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए थे। परंतु इस बार की परिस्थिति अलग थी। इस बार एक ऐसा हमला हुआ था, जिसमें निर्दोष नागरिकों की जान गई और उसे एससीओ की बैठक में पूरी तरह अनदेखा कर दिया गया। भारत का यह कड़ा रुख केवल एससीओ तक सीमित नहीं है। हाल ही में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकी शिविरों को निशाना बनाते हुए हवाई हमले किए। भारत का यह स्पष्ट संदेश था कि अब वह आतंकवाद के केंद्रों को उनकी सीमा में घुसकर खत्म करने से भी नहीं हिचकिचाएगा।

दैनिक पंचांग

3 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

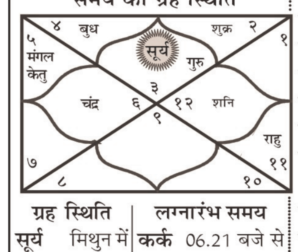

ग्रह स्थिति	
सूर्य	मिथुन में
चंद्र	कन्या में
मंगल	सिंह में
बुध	कर्क में
गुरु	मिथुन में
शुक्र	वृष में
शनि	मीन में
राहु	कुंभ में
केतु	सिंह में

राहुकाल 1.30 से 3.00 बजे तक

लग्नारंभ समय	
कर्क	06.21 बजे से
सिंह	08.37 बजे से
कन्या	10.49 बजे से
तुला	13.00 बजे से
वृश्चिक	15.14 ब.से
धनु	17.30 बजे से
मकर	19.35 बजे से
कुंभ	21.22 बजे से
मीन	22.55 बजे से
मेष	00.25 बजे से
वृष	02.05 बजे से
मिथुन	04.03 बजे से

गुरुवार 2025 वर्ष का 184 वा दिन
दिशाशूल दक्षिण **ऋतु** वर्षा।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास आषाढ़ **पक्ष** शुक्ल
तिथि अष्टमी 14.07 बजे को समाप्त।
नक्षत्र हस्त 13.51 बजे को समाप्त।
योग परिघ 18.36 बजे को समाप्त।
करण बव 14.07 बजे तदनन्तर बालव 03.19 बजे रात्र को समाप्त।
चन्द्रायु 07.6 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 22° 57'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872394
जूलियन दिन 2460859.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना मोहर्रम
तारीख 07
विशेष मासिक दुर्गाष्टमी।

दिन का चौघड़िया	
शुभ	05.54 से 07.22 बजे तक
रोग	07.22 से 08.51 बजे तक
उद्वेग	08.51 से 10.19 बजे तक
चर	10.19 से 11.47 बजे तक
लाभ	11.47 से 01.15 बजे तक
अमृत	01.15 से 02.43 बजे तक
काल	02.43 से 04.11 बजे तक
शुभ	04.11 से 05.40 बजे तक

रात का चौघड़िया	
अमृत	05.40 से 07.11 बजे तक
चर	07.11 से 08.43 बजे तक
रोग	08.43 से 10.15 बजे तक
काल	10.15 से 11.47 बजे तक
लाभ	11.47 से 01.19 बजे तक
उद्वेग	01.19 से 02.51 बजे तक
शुभ	02.51 से 04.23 बजे तक
अमृत	04.23 से 05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

तेज रफ्तार मोटरसाइकिल के चपेट में आने से छह वर्षीय बच्चा

साहिबगंज: बुधवार के सुबह बरहेट- बोरियो मुख्य सड़क में बाबूपुर गांव के समीप बाबूपुर गांव का ही 6 वर्षीय बच्चा दिवाकर कुमार गांव का ही विद्यालय जा रहा था। इस दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार मोटरसाइकिल की चपेट में आकर गंभीर रुप से घायल हो गया। घायल बच्चा का प्राथमिक उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट में किया गया तथा बेहतर इलाज के लिए दुमका रेफर कर दिया गया। वहीं घटना की जानकारी मिलने के बाद बरहेट थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल को अपनी सुरक्षा में जप्त कर लिया है, तथा मामले की छानबिन कर रही है।

मुहर्रम को लेकर बोरियो थाना में शांति समिति की बैठक संपन्न

साहिबगंज: बोरियो थाना परिसर में बुधवार की देर शाम अंचलाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी नागेश्वर साव की अध्यक्षता में मुहर्रम पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में शांति पूर्वक पर्व मनाने और अफवाहों से दूर रहने को लेकर आम ग्रामीणों से कहा गया। मौके पर बोरियो थाना प्रभारी पंकज वर्मा ने सभी समुदायों को भाईचारा के साथ पर्व मनाने के लिए कहा गया। मौके पर प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष जेठा मरांडी, बोरियो बाजार मुखिया मीणा बास्की, बोरियो संथाली मुखिया प्रतिनिधि मनोज दास, रिजवान अंसारी, मनीष ठाकुर, एजाज अंसारी, गफ्फार अंसारी, अर्जुन रजक, इरशाद अंसारी, नजीर अंसारी, माइकल मारंडी, विजय मरांडी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

स्टॉप डायरिया अभियान का डॉक्टर महालक्ष्मी प्रसाद ने किया शुभारंभ

रामगढ़ : डॉ महालक्ष्मी प्रसाद, सिविल सर्जन रामगढ़ द्वारा बुधवार को स्टॉप डायरिया अभियान का उदघाटन दीप प्रज्वलित कर किया गया। उन्होने सभी कार्यक्रम पदाधिकारी, डीपीएमयू एवं स्वास्थ्य कर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि चाइल्डहुड डायरिया एक प्रमुख जन स्वास्थ्य समस्या है ।लगभग सभी 5 वर्ष के बच्चों कि मृत्यु मे 4.8 लाख मृत्यु चाइल्डहुड डायरिया के कारण होती है ।जिसे समय पर पहचान तथा डिहाईड्रेशन को समय पर प्रबंधन कर रोका जा सकता है ।दस्त के समय ओआरएस, जिंक एवं पर्याप्त पोषण का उपयोग कर बच्चों कि मृत्यु को काफी हद तक कम किया जा सकता है। रामगढ़ जिले मे स्टॉप डायरिया अभियान का आयोजन दिनांक 01/07/2025 से 14/08/2025 तक किया जाना है। समुदाय स्तर पर 5 वर्ष से नीचे के बच्चों के घर पर दो ओआरएस पैकेट एवं 14 जिंक कि गोलियां प्रीपोजीशनिंग के रूप मे वितरण करवाने हेतु सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को निर्देश दिया गया है।

अखिलेश यादव का 52वां जन्मदिवस धूमधाम से मनाया गय

रामगढ़ : रामगढ़ जिले के भुरकुंडा मैं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का 52 वा जन्मदिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। समाजवादी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष सह उत्तरी छोटा नागपुर प्रमंडल के अध्यक्ष गोविंद बेदिया के द्वारा अखिलेश यादव के तस्वीर पर केक काटकर खिलाया गया। अखिलेश यादव के 52 में जन्म दिवस पर उनकी स्वस्थ जीवन और लंबी आयु की कामना की गई। शिव कुमार यादव प्रदेश उपाध्यक्ष ने कहा कि अखिलेश यादव के नेतृत्व में आने वाले विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन समाजवादी पार्टी करेगी, साथ ही उन्होंने कहा कि उनकी विचारधारा समाज हित में होती है इसी कारण से आज अखिलेश यादव को देश के हर एक युवा उनको पसंद करते हैं।

पुलिस ने अवैध हथियार के साथ एक युवक को किया गिरफ्तार, भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज: थाना क्षेत्र अंतर्गत हाथीगढ़ गांव से पुलिस ने एक युवक को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया है। राजमहल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विमलेश त्रिपाठी ने प्रेस वार्ता कर इस संबंध में विस्तृत जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि साहिबगंज एसपी को 01 जुलाई 2025 को शाम लगभग 4:40 बजे एक गुप्त सूचना मिली कि हाथीगढ़ गांव का एक युवक अपने पास अवैध देशी कट्टा और जिंदा कारतूस रखता है और आम लोगों में डर का माहौल बना रहा है। सूचना मिलते ही एसपी के आदेश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी,

राजमहल के नेतृत्व में एक विशेष छापेमारी दल का गठन किया गया। छापेमारी दल में तीनपहाड़ थाना प्रभारी और अन्य पुलिस पदाधिकारी शामिल थे। टीम ने शाम करीब 5:30 बजे हाथीगढ़ गांव में स्थित सुजन मुखर्जी पिता रोहित मुखर्जी के घर पर छापा मारा। छापेमारी के दौरान उसके घर से एक देशी कट्टा और दो जिंदा कारतूस बरामद किए गए। पुलिस ने उसे मौके से ही गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवक की पहचान सुजन मुखर्जी उम्र 19 वर्ष के रूप में हुई है, जो हाथीगढ़ हाईस्कूल के सामने का निवासी है। पुलिस ने उसके खिलाफ तीनपहाड़ थाना कांड संख्या 96/25, दिनांक 01/07/2025 के तहत आर्म्स एक्ट की धारा 25(1-8) ए/26 में मामला दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है। मौके पर छापेमारी दल में पुअनि मृत्युंजय कुमार पांडेय थाना प्रभारी तीनपहाड़, पुअनि महेन्द्र कुमार तीनपहाड़ थाना, पुअनि शाहिद अहमद खां तीनपहाड़ थाना, सअनि प्रदीप कुमार तीनपहाड़ थाना, हवलदार संजय कुमार रिजर्व गार्ड तीनपहाड़ थाना, आरक्षी फिरोज खां रिजर्व गार्ड तीनपहाड़ थाना, शामिल थे।

अवैध अतिक्रमण पर चला जिला प्रशासन का बुलडोजर कई दुकानों और निर्माणों को किया गया ध्वस्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोटालपोखर : पाकुड़ बरहरवा मुख्य सड़क स्थित कोटालपोखर शांति चौक पर बुधवार को जिला प्रशासन ने अतिक्रमण हटाने की बड़ी कार्रवाई की है। जहां सड़क चौड़ीकरण योजना के अंतर्गत जिला प्रशासन ने जेसीबी मशीनों की सहायता से कई अवैध रूप से बने दुकानों और मकानों को ध्वस्त कर दिया है। उधर यह कार्यवाही बरहरवा अंचल अधिकारी रामजी वर्मा एवं कोटालपोखर पुलिस प्रशासन की मौजूदगी और निगरानी में संपन्न हुआ है। इसको लेकर बरहरवा सीओ ने बताया कि सभी अतिक्रमणकारियों को पूर्व में नोटिस जारी कर स्वयं से निर्माण हटाने की चेतावनी दी गई थी लेकिन निर्धारित समय सीमा के बाद भी जब अतिक्रमण नहीं हटाया गया, तो प्रशासन को यह सख्त कदम उठाना पड़ा है। वही कार्यवाही के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था को रोकने हेतु पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया था। वही

अधिकारियों ने बताया कि यह कार्यवाही जनहित में की गई है, क्योंकि इस मार्ग पर आए दिन जाम और सड़क दुर्घटनाओं की घटनाएं हो रही थीं, जिससे आम जनता को भारी परेशानी उठानी पड़ती थी। वही प्रशासन का मानना है कि सड़क चौड़ी होने से क्षेत्र की यातायात व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार होगा और आम लोगों को भी इससे व्यापक राहत मिलेगी। साथ ही यह भी संकेत दिया गया है कि आगे अन्य अतिक्रमित क्षेत्रों में भी इसी प्रकार की कार्यवाही की जाएगी ताकि विकास कार्यों में कोई बाधा न आए।

सरकारी मार्ग पर बने अवैध रूप से दो दुकान को प्रशासन ने अतिक्रमण मुक्त कराया

साहिबगंज : थाना क्षेत्र में अतिक्रमण को लेकर जिला प्रशासन का सख्त रवैया दिखाई दिया। वही बुधवार को राजमहल प्रखंड के मुंडली मिशन के समीप सरकारी मार्ग के दोनों ओर बने अवैध रूप से दुकानों को अतिक्रमण मुक्त कराया गया ।मामले को लेकर प्रखंड के अंचलाधिकारी मो यूसुफ ने बताया कि स्कूल प्रबंधन और विभाग के द्वारा कई बार नोटिश के माध्यम से अवैध दुकानों को हटाने का निर्देश दिया गया था, लेकिन समय बीतने के साथ साथ उक्त अवैध दुकानों को दुकानदारों द्वारा नहीं हटाया गया जिसके बाद विभाग ने कड़ी कारवाई करते हुए जेसीबी के माध्यम से सड़क किनारे बसे अवैध दुकानों को हटवाया गया। इस दौरान अंचलाधिकारी ने कहा कि प्रखंड क्षेत्र में कही भी अगर अवैध अतिक्रमण पाया जाएगा तो विभाग सख्ती के साथ वैसे स्थलों को चिन्हित कर अतिक्रमण मुक्त करवाएगी, और उन्होंने ये भी कहा कि अतिक्रमण को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वही मौके पर तीनपहाड़ थाना प्रभारी मृत्युंजय कुमार पांडे, एसआई नारद गहलोत दलबल के साथ मौजूद थे।

अफवाह फैलाने वालों पर होगी कड़ी कानूनी कार्रवाई : गौरव गोस्वामी

रामगढ़ : बरकाकाना मोहर्रम हर्षोल्लास व शांतिपूर्ण माहौल में मनाए जाने को लेकर बरकाकाना ओपी परिसर में शांति समिति का बैठक आयोजित किया गया। बैठक का अध्यक्षता पतरातू एसडीपीओ गौरव गोस्वामी (भापुसे) द्वारा किया गया। एसडीपीओ गौरव गोस्वामी (भापुसे) द्वारा सभी अखाड़ा के लोगों को अपनी लाइसेंस के साथ आवेदन देने की बात कही गई है। इसके साथ ही क्षेत्र के लोगों से अपील की गई कि किसी भी तरह का कोई भी अफवाहों पर ध्यान ना दें। अफवाहों का तत्काल सूचना अपने निकटतम थाना को देने की बात कही गई। ताकि किसी भी तरह का विधि व्यवस्था भंग ना हो सके। पुलिस द्वारा लगातार सोशल मीडिया पर नजर रखने की बात कही गई। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वाले पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। मौके पर मोहम्मद कयूम अंसारी, शाहनवाज खान, देवकीनंदन बेदिया, वार्ड पार्षद सनियारो बारला, गीता देवी, फातिमा खातून सहित कई लोग उपस्थित थे।

शहादत दिवस पर याद किए गए शहिद कुलदीप उरांव, किया श्रद्धासुमन अर्पित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज: जम्मू कश्मीर में 2 जुलाई 2020 को आतंकियों से लोहा लेते हुए आतंकियों को मारकर वीरगति को प्राप्त हुए शौर्य चक्र से सम्मानित शहीद कुलदीप उरांव का बुधवार को पांचवां पुण्यतिथि मनाया गया। जैप09 परिसर समीप शहीद कुलदीप उरांव के समाधि स्थल में राजमहल पूर्व विधायक अनंत ओझा, डीएसपी मुख्यालय विजय कुशवाहा, सीआरपीएफ ग्रुप केंद्र जमशेदपुर के सूबेदार मेजर रविशंकर, जैप09 के अधिकारी, शहीद के परिजनों व गणमान्य लोगों, सीआरपीएफ जवानों ने बारी बारी से शहीद के समाधि में पुष्प चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करके भावविनी श्रद्धांजलि देकर नमन किया। वही पूर्व विधायक सहित अन्य ने शहीद के पिता पूर्व वार्ड पार्षद घनश्याम

उरांव व उनके आश्रित को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। शहीद के आश्रितों का हाल चाल जाना। शहीद के पिता ने कहा कि पांच वर्ष बेटे को शहीद होने से हुआ, अब तक शहीद पुत्र के प्रतिमा लगाने के लिए जिला प्रशासन ने समाहरणालय समीप चिन्हित करके दिए गए स्थल को नहीं दिया है। वही पूर्व विधायक ने कहा कि हम प्रयास करेंगे कि शहीद कुलदीप उरांव का भी प्रतिमा जल्द ही स्थापित हो। वही ग्रुप केंद्र जमशेदपुर के सूबेदार मेजर रविशंकर ने बताया कि 2 जुलाई 2020 को श्रीनगर में वैली क्विक एक्शन टीम के सदस्य के रूप में तैनात शहीद कुलदीप उरांव ने अपनी अदम्य वीरता का परिचय दिया। उस दिन रात 21:45 बजे श्रीनगर में एक मकान में आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए वैली क्विक एक्शन टीम ने क्षेत्र को घेर लिया। आतंकवादियों द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी शुरू की गई, जिसमें एक गोली शहीद कुलदीप उरांव को लगी।

पत्रकारों के हितों में सकारात्मक पहल की जाएगी : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़: प्रेस क्लब रामगढ़ के कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी व सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल ने डीसी फैज अक अहमद मुमताज से मुलाकात की। यहां, प्रतिनिधि मंडल ने डीसी को बुके देकर स्वागत किया। वहीं, डीसी को मांग पत्र भी सौपा गया। सौहार्दपूर्ण माहौल में बातचीत के दौरान डीसी ने पीसीआर के मांगों पर सकारात्मक पहल करने की बात कही। उन्होंने आयुष्मान कार्ड की मांग पर कहा कि यह सेहत के लिए बेहतर है, इसलिए आयुष्मान कार्ड बनवा लिजिए। वहीं, प्रेस क्लब रामगढ़ के जर्जर भवन की जगह नए भवन का निर्माण करने की स्वीकृति प्रदान करने, सभी पत्रकारों को आयुष्मान कार्ड व राशन कार्ड निर्गत करने, अर्हताएं पूरी करने वाले जिले के पत्रकारों को प्रधानमंत्री आवास योजना-अबुआ आवास योजना का लाभ दिलाने, रामगढ़ जिला अंतर्गत आने वाले टोल प्लाजा में जिले के पत्रकारों के चार पहिया वाहनों के आवाजाही की निःशुल्क सुविधा और रामगढ़ जिले के पत्रकारों के लिए भूमि चयनित कर पत्रकार कॉलोनी का निर्माण कराने की दिशा में पहल करने की अपील की गई। इस पर डीसी ने पत्रकारों के हितों में सकारात्मक पहल करने की बात कही। इसके बाद प्रतिनिधि मंडल ने डीडीसी आशीष अग्रवाल, डीपीआरओ प्रभात शंकर, डीटीओ मनीषा वत्स से भी मुलाकात की गई। प्रतिनिधि मंडल में सचिव धनेश्वर प्रसाद, उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार बबलू, कोषाध्यक्ष दुर्वेज आलम, कार्यकारिणी सदस्य दिलीप कुमार सिंह, दीपक कुमार, सुरेंद्र पासवान, सुरेंद्र सिंह, राज कुमार, नीरज सिंह शामिल थे।

मुहर्रम पर्व के मद्देनजर जिला स्तरीय शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : ज़िले के कृषि उत्पादन बाजार समिति पाकुड़ में उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में आगामी मुहर्रम त्योहार के अवसर पर विधि व्यवस्था संधारण हेतु जिला स्तरीय शांति समिति के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी पर्व मुहर्रम के दौरान विधि व्यवस्था, शांति व्यवस्था एवं जनसुविधाओं तथा सुगम यातायात व्यवस्था के संदर्भ में चर्चा कर सबसे सहयोग की अपील की गई। बैठक में विभिन्न मोहर्रम कमेटि, विभिन्न अखाड़ा और शांति समिति के प्रतिनिधियों ने बारी-बारी से मोहर्रम के मद्देनजर बेहतर व्यवस्था को लेकर अपनी-अपनी बातें रखी। साफ-सफाई, सुरक्षा, जुलूस

निकाले जाने के समय, रुट, लाइटिंग, एंबुलेंस, अखाड़ों के लाइसेंस निर्गत करने आदि पर अपने-अपने सुझाव देते हुए प्रतिनिधियों ने सांप्रदायिक सौहार्द के साथ त्यौहार मनाने की बात कही। इस दौरान उपायुक्त मनीष कुमार ने कहा कि साफ-सफाई, सुरक्षा, जुलूस निकाले जाने के समय, रुट, लाइटिंग, एंबुलेंस, अखाड़ों के लाइसेंस निर्गत करने आदि पर मोहर्रम कमिटि एवं विभिन्न अखाड़ा समितियों द्वारा जो सुझाव दिये गये हैं, उस पर ध्यान देते हुए प्रशासन की ओर से बेहतर से बेहतर व्यवस्था प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। वहीं उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखी जाएगी। उन्होंने शांति समिति के साथ-साथ सभी लोगों से आग्रह किया कि अफवाह फैलने की स्थिति में ससमय जानकारी दें ताकि त्वरित नियंत्रण किया जा सके। उपायुक्त ने सभी प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारियों को मुहर्रम पर विधि व्यवस्था संधारण हेतु पूरी चौकसी रखने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने संवेदनशील स्थानों पर दंडाधिकारी तथा पर्याप्त पुलिस बल प्रतिनियुक्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि त्योहार के दौरान यदि किसी शरारती तत्व द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाने की कोशिश की गई, तो उसके विरुद्ध कड़ी कारवाई की जाएगी। जिला प्रशासन सोशल मीडिया पर सख्त निगरानी रखेगी, सावधानी से सोशल मीडिया का उपयोग करें, किसी तरह के अफवाहों पर ध्यान नहीं दें, भ्रामक एवं अपुष्ट खबरों का सत्यापन प्रशासन से जरूर करा लें। उन्होंने मुहर्रम पर्व पर असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी पुलिस पदाधिकारियों एवं दंडाधिकारियों को पूरी सतर्कता एवं सजगता के साथ कार्य करने का निर्देश दिया। जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष को 247 क्रियाशील रखते हुए निगरानी रखी जाएगी ताकि असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण रखा जा सके। पुलिस अधीक्षक निधि द्विवेदी ने कहा कि विधि व्यवस्था बिगाड़ने तथा आपसी सौहार्द बिगाड़ने वाले असामाजिक तत्वों वाले व्यक्ति के साथ सख्ती से निपटा जाएगा। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जुलूस समय पर निकले और समय पर वापस आ जायें इसका ध्यान रखें। पर्व के दौरान ड्रोन से निगरानी रखी जायेगी।

संक्षिप्त खबरें

पुलिस ने सदर अस्पताल में पोक्सो एक्ट की नाबालिग पीड़िता का कराया मेडिकल जांच

साहिबगंज: रांगा थाना क्षेत्र की पुलिस ने बुधवार को पोक्सो एक्ट की नाबालिग पीड़िता का मेडिकल जांच करवाने के लिए सदर अस्पताल लेकर आई। जहां सदर अस्पताल में कागजी प्रकिया पूरी करने के बाद ड्यूटी पर तैनात महिला चिकित्सक ने नाबालिग पीड़िता का मेडिकल जांच किया। उधर मामले को लेकर एसआई अभिषेक कुमार ने बताया कि बीते दिनों नाबालिग पीड़िता के परिजनों ने केस दर्ज कराया था।

शहीद अमरजीत बलिहार की 12वीं पुण्यतिथि पर रक्तदान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पाकुड़ : ज़िले में बुधवार को शहीद एसपी अमरजीत बलिहार की 12 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर पुराना सदर अस्पताल में रक्तदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपायुक्त मनीष कुमार ने रक्तदान करते हुए कहा कि रक्तदान से हम कई घायलों व बीमार लोगों को असामयिक मृत्यु से बचा सकते हैं। किसी व्यक्ति के जीवन की रक्षा करने से बड़ा और कोई काम नहीं हो सकता। रक्तदान बड़े पुण्य का कार्य है। हर स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए। पाकुड़ जिले में खून की कमी से किसी की मौत न हो।

मिर्जाचौकी थाना में मोहर्रम को लेकर शांति समिति के हुई बैठक

साहिबगंज: मोहर्रम पर्व को लेकर मिजाचौकी थाना परिसर में शांति समिति की बैठक हुई। मोहर्रम पर्व का अखाड़ा जुलूस 6 और 7 जुलाई को निकाला जाएगा। मिजाचौकी थाना में बैठक की अध्यक्षता बीडीओ सह सीओ मेघनाथ उरांव ने की। बैठक में शहर के समाजसेवी व गणमान्य लोग उपस्थित हुए। वही मिजाचौकी थाना प्रभारी रूपेश कुमार यादव ने सभी को संबोधित करते हुए पर्व को लेकर चर्चा की। कहा कि मोहर्रम पर्व आपसी भाईचारा शांति सौहार्द के साथ मनाएं। थाना प्रभारी ने आपत्तिजनक फोटो या वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट या वाइरल नहीं करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सभी चौक चौराहे और मंदिरों के समीप एवं इसके बाद अखाड़ा जुलूस को लेकर सभी स्थानों में दंडाधिकारी के नेतृत्व में पुलिस बलों की तैनाती में की जाएगी। आगे बताया कि व्हाट्सएप ग्रुप पर भी विशेष निगरानी रखी जायेगी। कोई किसी की धर्मिक भावनाओं को आहत नहीं करेगा। असामाजिक तत्वों से निपटने के लिए कड़ी व्यवस्था की गई है। सभी कमेटी एक साथ मीटिंग कर मोहर्रम अखाड़ा जुलूस का समय निर्धारित कर लें। आगे उन्होंने कहा कि मोहर्रम का जुलूस शांति वातावरण में भाईचारे के साथ निकाले। मोहर्रम कमेटी से आए लोगों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। मौके पर मिजाचौकी के दर्जनों समाजसेवी व गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अनुमंडलीय अस्पताल में आयोजित मासिक बैठक में उपाधीक्षक ने दिए कई दिशा निर्देश

राजमहल: अनुमंडलीय अस्पताल राजमहल में बुधवार को अस्पताल उपाधीक्षक की अध्यक्षता में मासिक समीक्षात्मक बैठक आहूत की गई। जहां इस बैठक में नियमित टीकाकरण, सिकल सेल एनीमिया जांच सप्ताह एवं आगामी बाढ़ महामारी 2025 से निपटने हेतु बैठक की गई। साथ ही स्वास्थ्य विभाग में सभी कार्यक्रमों की बारी बारी से समीक्षा की गई। जहां बैठक के पश्चात नियमित टीकाकरण के कार्य योजना पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के डॉ. धारुन के द्वारा अपने सभी फील्ड मॉनिटर्स के साथ राजमहल एवं उधवा प्रखंड के नियमित टीकाकरण कार्य योजना का बारीकी से सभी सहिया साथी के साथ समीक्षा की गई एवं पाई गई कमियों पर एक सप्ताह के अंदर निपटारा करने का निर्देश दिया गया। साथ ही उपाधीक्षक के द्वारा समीक्षा के क्रम में कम उपलब्धि करने वाले एमपीडब्ल्यू को स्पष्टीकरण करने का निर्देश दिया एवं सख्त लहजे में बताया गया की कोताही बरतने वाले कर्मी पर विशेष कार्यवाही की जाएगी। उक्त बैठक में प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक अमित कुमार, प्रखंड डाटा प्रबंधक नितिन मुर्मू, सभी सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारी, सभी एएनएम, बीटीटी, सहिया साथी एवं अन्य पर्यवेक्षक उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत टीबी मरीजों को प्रदान की गई पोषण किट

साहिबगंज: बुधवार को संयुक्त स्वास्थ्य भवन परिसर, साहेबगंज में निक्षय मित्र योजना के अंतर्गत एक प्रेरणादायक पहल के तहत कुल 06 टीबी मरीजों को गोद लिया गया और उन्हें पोषण किट का वितरण किया गया। कार्यक्रम में

डॉ. किरण माला, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी-सह-प्रभारी जिला यक्ष्मा पदाधिकारी (डीटीओ), साहेबगंज द्वारा मण्डरो, बोरियो व साहेबगंज प्रखंड के कुल 05 टीबी मरीजों को गोद लिया गया। साथ ही अलोक लता टुडू, लिपिक, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी कार्यालय, साहेबगंज द्वारा साहेबगंज प्रखंड के 01 टीबी मरीज को गोद लिया गया। निक्षय मित्रों द्वारा मरीजों को पोषण किट प्रदान की गई, जो ईलाज की संपूर्ण अवधि तक प्रत्येक माह दी जाएगी, जिससे उनके पोषण स्तर में सुधार हो सके और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ सुनिश्चित किया जा सके ।कार्यक्रम में जिला कार्यक्रम प्रबंधक, जिला कार्यक्रम समन्वयक (सहिया) सहित स्वास्थ्य विभाग की टीम—सिंचन पाण्डेय, सोमनाथ साह, आदित्य कुमार, रंजन कुमार, अनिर्वान गोस्वामी, श्रीचंद साह, पीटर, कार्नलियुस सोरेन एवं अन्य कर्मी उपस्थित रहे। यह आयोजन समुदाय में टीबी रोग के प्रति संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है तथा रोगियों के लिए आशा की किरण बनकर उभरा है।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को रुपया 17 पैसे की गिरावट के साथ ही 85.67 रुपये पर बंद हुआ। आज अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया सुबह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.28 के स्तर पर खुला। यह शुरुआती स्तर है और बाजार में दिन भर उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। वहीं स्थानीय शेयर बाजार में मजबूती और मानसून की प्रगति से कीमतों में स्थिरता बनने रहने की संभावनाओं के बीच विदेशी करेंसी बाजार में भारतीय रुपया मंगलवार को अमेरिकी डालर के मुकाबले 25 पैसे मजबूती के साथ बंद हुआ।

एसबीआई ने आरकॉम के लोन को बताया फ्रॉड!

मुंबई। देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने दूरसंचार कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस लिमिटेड (आरकॉम) के लोन खाते को धोखाधड़ी करार दिया है। साथ ही बैंक ने कंपनी के पूर्व निदेशक अनिल अंबानी का नाम भारतीय रिजर्व बैंक को रिपोर्ट करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह जानकारी रिलायंस कम्युनिकेशंस ने हाल ही में एक नियामकीय फाइलिंग के जरिए दी। एक रिपोर्ट के अनुसार 23 जून 2025 को भेजे गए एक पत्र में एसबीआइ ने कहा कि उसकी फ्रॉड आइडेंटिफिकेशन कमेटी ने आरकॉम के खाते को फ्रॉड घोषित करने का निर्णय लिया है। एसबीआइ ने यह फैसला रिलायंस टेलीकॉम लिमिटेड और अन्य समूह कंपनियों के जरिए संभावित फंड डायवर्जन और लोन शर्तों के उल्लंघन के आधार पर लिया है। एसबीआई की यह कार्रवाई आरकॉम की कॉर्पोरेट इनसॉल्वेंसी रेजोल्यूशन प्रोसेस (सीआईआरपी) शुरू होने से पहले के कर्ज से जुड़ी है।

कीस्टोन रियल्टर्स मुंबई में आठ आवासीय परियोजनाओं का करेगी पुनर्विकास

मुंबई। रियल एस्टेट कंपनी कीस्टोन रियल्टर्स लिमिटेड ने बुधवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि उसे मुंबई के अंधेरी पश्चिम के अत्यधिक मांग वाले आवासीय क्षेत्र में बड़े पैमाने पर क्लस्टर पुनर्विकास परियोजना के लिए डेवलपर के रूप में आठ आवासीय सोसायटियों द्वारा चुना गया है। पांच सोसायटियों के साथ विकास समझौते (डीए) पर पहले ही हस्ताक्षर हो चुके हैं, जबकि शेष तीन सोसायटियों से एलओआई (आशय पत्र) प्राप्त हो चुके हैं तथा डीए पर अगले कुछ दिनों में हस्ताक्षर होने की उम्मीद है। कंपनी ने कहा कि इस परियोजना में अंधेरी के जीवंत आवासीय केंद्र के मध्य में स्थित निजी आवास सोसायटियों के समूह का पुनर्विकास शामिल है, जिसमें कुल मिलाकर लगभग 4.75 एकड़ भूखंड होगा, जिसमें 548 मौजूदा सदस्य शामिल होंगे। प्रस्तावित पुनर्विकास से लगभग 10.6 लाख वर्ग फुट बिक्री योग्य क्षेत्र उपलब्ध होने तथा लगभग 3,000 करोड़ रुपये का सकल विकास मूल्य (जीडीवी) उत्पन्न होने की उम्मीद है। कीस्टोन ने कहा कि यह विकास प्रमुख उपनगरीय बाजारों में उपस्थिति का विस्तार करने और सूक्ष्म बाजारों और टिकट आकारों में एक अच्छी तरह से विविध पोर्टफोलियो बनाने की अपनी रणनीति के अनुरूप है।

अमेरिकी ऊर्जा सचिव से ऊर्जा साझेदारी के अवसरों पर हुई चर्चा- जयशंकर

वाशिंगटन।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिकी ऊर्जा सचिव क्रिस राइट से मुलाकात की और गहरी द्विपक्षीय ऊर्जा साझेदारी के अवसरों पर चर्चा की। जयशंकर अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के निमंत्रण पर आधिकारिक यात्रा पर अमेरिका में हैं। जयशंकर ने बैठक के बाद सोशल मीडिया मंच पर कहा, आज वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी ऊर्जा सचिव क्रिस राइट के साथ एक उपयोगी बातचीत हुई। भारत में चल रहे ऊर्जा परिवर्तन के बारे में बात की और भारत-अमेरिका ऊर्जा साझेदारी को और मजबूत बनाने के अवसरों के बारे में भी बात की।

एसबीआई की बैलेंस शीट का आकार 175 देशों की जीडीपी से अधिक

नई दिल्ली।

देश के प्रमुख बैंकों में से एक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने कहा कि वर्तमान में उसका वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 1.1 प्रतिशत और भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 16 प्रतिशत योगदान है। एसबीआई की बैलेंस शीट का आकार 175 देशों की जीडीपी से भी अधिक है। बैंक ने बताया कि सभी सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के कार्यान्वयन में अब बैंक की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से अधिक हो गई है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई) में एसबीआई ने 15 करोड़ खाते खोले हैं, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के तहत 14.6 करोड़ लोगों का पंजीकरण किया है। वहीं, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) के तहत 6.7 करोड़ और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) में 1.73 करोड़

लोगों को नामांकित किया है। एसबीआई के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 में बैंक का सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के लाभ में 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी। वहीं कॉर्पोरेट आयकर (वित्त वर्ष 2026) में 2.53 प्रतिशत का योगदान था। बैंक ने कहा कि अगर एसबीआई देश होता तो 52 करोड़

संभव स्टील ट्यूब्स का शेयर 34 प्रतिशत बढ़कर सूचीबद्ध हुआ

नई दिल्ली।

संभव स्टील ट्यूब्स लिमिटेड का शेयर बुधवार को 82 रुपये के निर्गम मूल्य के मुकाबले 34 प्रतिशत से अधिक बढ़त के साथ सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर कंपनी के शेयर ने निर्गम मूल्य के मुकाबले 34.26 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 110.10 रुपये पर अपनी शुरुआत की। इसके बाद यह 35.23 प्रतिशत बढ़कर 110.89 रुपये पर पहुंच गया। एनएसई पर संभव स्टील का शेयर 34.14 प्रतिशत की बढ़त के साथ 110 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन 2,966.75 करोड़ रुपये रहा। संभव स्टील के 540 करोड़ रुपये के आईपीओ को पिछले सप्ताह शुक्रवार को बोली के संभावित अंतिम दिन तक 28.46 गुना अभिदान मिला। आईपीओ के लिए मूल्य दायरा 77-82 रुपये प्रति शेयर था। आईपीओ में 440 करोड़ रुपये मूल्य के इक्विटी शेयरों का ताजा निर्गम और प्रवर्तकों द्वारा 100 करोड़ रुपये मूल्य के शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) शामिल है।

यूरो के मुकाबले रुपये में रिकॉर्ड गिरावट

1 यूरो की कीमत 100.70 रुपये पर पहुंची

नई दिल्ली।

भारतीय मुद्रा रुपये में यूरो के मुकाबले जोरदार गिरावट दर्ज हुई है। 1 जुलाई 2025 को एक यूरो की विनिमय दर 100.70 रूपये पर पहुंच गई है। जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 89.60 रुपये थी। यानी एक वर्ष में 11.10 रुपये की गिरावट के साथ रुपये का 12.5% से अधिक अवमूल्यन हुआ है। इस गिरावट को भारतीय मुद्रा की बाहरी विनिमय नीतियों और यूरो की मजबूती के रूप में देखा जा रहा है। डॉलर के मुकाबले रुपया मात्र 2.3 रुपये कमजोर हुआ है। वही यूरो मुद्रा के मुकाबले भारतीय मुद्रा 12.5 फ़ीसदी गिर गई है। जिसका भारत पर बहुत बड़ा असर होने जा रहा है। डॉलर की ओर भारत सरकार और रिजर्व बैंक अत्यधिक केंद्रित दृष्टिकोण पर सवाल उठने लगे हैं। आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार, वैश्विक व्यापार का लगभग 25% भारतीय आयात एवं निर्यात व्यापार यूरो में होता है जबकि डॉलर में 55% कारोबार होता है। भारत का वर्तमान में व्यापारिक संतुलन यूरोप की ओर है, जिससे यूरो के प्रति रुपये की कमजोरी देश की आयात लागत पर प्रभाव होगा। जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए काफी नुकसानदेह है। आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है, डॉलर के साथ-साथ अन्य प्रमुख मुद्राओं पर भी सरकार और रिजर्व बैंक को सतर्क निगरानी रखने की आवश्यकता है। यही प्रवृत्ति बनी रही, तो मुद्रास्फीति, विदेशी निवेश और व्यापार घाटे पर गहरा असर होना तय है। जिसका बहुत बड़ा असर भारतीय अर्थव्यवस्था और महंगाई के रूप में भारत में पड़ेगा।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

सेंसेक्स 288 और निफ्टी 88 अंक गिरा

मुम्बई।

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 287.60 अंक नीचे आकर 83,409.69 अंकों पर बंद हुआ।

वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 88 अंक टूटकर 25,453.40 अंकों पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान बैंकिंग और वित्तीय शेयरों में विशेष रुप से गिरावट रही। वहीं गत दिवस बाजार हल्की बढ़त पर बंद हुआ था।

आज सेंसेक्स की 30 में से सिर्फ 14 कंपनियों के शेयर ही बढ़त के साथ ऊपर आकर बंद हुए, वहीं अन्य सभी 16 कंपनियों के शेयर गिरावट के साथ ही नीचे आये। इसी तरह, निफ्टी की 22 कंपनियों के शेयर बढ़त के साथ ऊपर आकर बंद हुए जबकि 28 कंपनियों के शेयर गिरावट के साथ ही नीचे आये। सेंसेक्स की कंपनियों में शामिल टाटा स्टील के शेयर सबसे ज्यादा 3.72 फीसदी बढ़कर बंद हुए जबकि बजाज फिनसर्व के शेयरों में भी सबसे ज्यादा 2.10 फीसदी की गिरावट रही। सेंसेक्स की बाकियों कंपनियों में आज, अल्ट्राटेक सीमेंट 1.60 फीसदी, ट्रेंट 1.43 फीसदी, मारुति सुजुकी 1.38 फीसदी, सनफार्मा 0.77 फीसदी, टाटा मोटर्स 0.65 फीसदी, भारती एयरटेल 0.53 फीसदी, टेक महिंद्रा 0.48 फीसदी, एनटीपीसी 0.30 फीसदी, टाइटन 0.14 फीसदी, एक्सिस बैंक 0.14 फीसदी और इंफोसिस के शेयर 0.11 फीसदी, हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.38 फीसदी की तेजी के साथ बंद हुए।

वहीं लार्सन एंड टुब्रो के शेयर 1.89 फीसदी, बजाज फाइनेंस 1.48 फीसदी, एचडीएफसी बैंक 1.30 फीसदी, बीईएल 1.23 फीसदी, कोटक महिंद्रा बैंक 0.94 फीसदी, पावरग्रिड 0.94 फीसदी, एसबीआइ 0.86 फीसदी, रिलायंस 0.66 फीसदी, आईटीसी 0.55 फीसदी, महिंद्रा एंड महिंद्रा 0.36 फीसदी, अडाणी पोर्ट्स 0.28 फीसदी, आईसीआईसीआई बैंक 0.27 फीसदी, एचसीएल टेक 0.19 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुए।

वहीं इससे पहले आज सुबह बाजार तेजी के साथ खुला। शुरुआती कारोबार में आईटी और ऑटो सेक्टर में खरीदारी देखी गई। सेंसेक्स 225.5 अंक बढ़कर 83,922.79 पर कारोबार कर रहा था, जबकि निफ्टी 58.75 अंक बढ़कर 25,600.55 पर कारोबार कर रहा था। वहीं एशियाई बाजारों में बैंकॉक, चीन, जापान, सोल और जकार्ता गिरावट के साथ ही लाल निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि केवल हांगकांग हरे निशान में कारोबार कर रहा था।

सोना 97,200 रुपए प्रति दस ग्राम, चांदी 1,06,600 रुपए के करीब

नई दिल्ली।

सोने-चांदी के वायदा कारोबार की शुरुआत में सुस्ती देखने को मिल रही है। बुधवार के कारोबार में घरेलू बाजार में दोनों के वायदा भाव गिरावट के साथ खुले। इस समय घरेलू बाजार में सोने के भाव 97,200 रुपये, जबकि चांदी के भाव 1,06,600 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। लेकिन बाद में भाव लुढ़क गए। चांदी गिरावट के साथ ही खुली। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 9 रुपये की गिरावट के साथ 97,242 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 97,251 रुपये था। इस समय यह 64 रुपये की गिरावट के साथ 97,187 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 97,242 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 97,157 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत सुस्त रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क सितंबर कॉन्ट्रेक्ट 29 रुपये की गिरावट के साथ 1,06,684 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 1,06,713 रुपये था। इस समय यह 96 रुपये की गिरावट के साथ 1,06,617 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 1,0,6,690 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 1,0,6,617 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कॉमेक्स पर सोना 3,350 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,349.80 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 1.10 डॉलर की गिरावट के साथ 3,348.70 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव ने इस साल 3,509.90 डॉलर के भाव पर ऑल टाइम हाई छू लिया है।

विदेशों में महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों का अधिग्रहण करेगी एनएमडीसी- सीएमडी

नई दिल्ली।

सार्वजनिक क्षेत्र की लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों के अधिग्रहण करने के बारे में विचार कर रही है। कंपनी के एक प्रमुख अधिकारी ने कहा कि इससे कंपनी की उपस्थिति मजबूत होगी। एंटीमनी, लिथियम, कोबाल्ट, तांबा जैसे महत्वपूर्ण खनिज सौर पैनल, पवन चक्की, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों जैसी स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के लिए जरूरी हैं। भारत ने उनकी दीर्घकालिक उपलब्धता और प्रसंस्करण सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन (एनसीएमएम) शुरू किया है। उन्होंने कहा कि खनिज विविधीकरण रणनीति के तहत, एनएमडीसी वैश्विक स्तर पर 10 रणनीतिक खनिज परिसंपत्तियों में अधिग्रहण के अवसरों का सक्रिय रूप से मूल्यांकन कर रही है। एनएमडीसी वैश्विक महत्वपूर्ण खनिज मूल्य श्रृंखला में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिका में महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉक अधिग्रहण की संभावनाएं तलाश रही है। दुबई में एनएमडीसी कार्यालय के उद्घाटन के मौके पर उन्होंने कहा कि यह शहर वैश्विक अवसरों का प्रवेश द्वार है और नया कार्यालय, कंपनी के खनन परिदृश्य को दोबारा परिभाषित करने के लिए तैयार है। केंद्रीय मंत्री एच डी कुमारस्वामी ने हाल ही में दुबई में एनएमडीसी कार्यालय का उद्घाटन किया।

टिकटॉक बेचने की डील फाइनल! ट्रंप जल्द करेंगे खरीदारों के नाम का खुलासा

वाशिंगटन।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि टिकटॉक को बेचने की डील तकरीबन फाइनल हो चुकी है।

उन्होंने कहा कि इसे कुछ बहुत अमीर निवेशकों के समूह को बेचा जाएगा। एक इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा कि हमारे पास टिकटॉक का एक खरीदार है लेकिन मुझे लगता है कि इस पर शायद चीन की मंजूरी लेनी होगी। ट्रंप ने खरीदारों के नाम का खुलासा करने से इनकार करते हुए कहा कि वह दो हफ्ते में इस बारे में बताएंगे।

बता दें टिकटॉक चाइनीज कंपनी बाइटडांस के स्वामित्व में है। इस पर आरोप है कि यह ऐप अमेरिकी यूजर्स का डेटा एकत्र करता है और इसे चीनी सरकार के साथ साझा करता है। अप्रैल 2024 में राष्ट्रपति जो बाइडन ने एक विधेयक पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें बाइटडांस को टिकटॉक का अमेरिकी कारोबार बेचने या जनवरी 2025 तक बैन का सामना करने का आदेश दिया था। दिसंबर 2024 में वाशिंगटन डीसी की अपील अदालत ने इस कानून को बरकरार रखा। 2025 में ट्रंप ने सत्ता में आने के बाद टिकटॉक को 75 दिन की मोहलत दी ताकि इसे अमेरिकी स्वामित्व में लाया जा सके। ट्रंप इस डेडलाइन को तीन बार बढ़ा चुके हैं।

इस साल की शुरुआत में टिकटॉक के अमेरिकी संचालन को एक नई कंपनी में बदलने की योजना थी, जिसमें अमेरिकी निवेशकों का बहुमत होता, लेकिन जब ट्रंप ने चीनी वस्तुओं पर नए टैरिफ लगाए तो चीन ने इस डील का विरोध किया और बातचीत रुक गई। ट्रंप ने पहले भी बाइटडांस और अमेरिकी निवेशकों के बीच संयुक्त उद्यम का सुझाव दिया था, जिसमें अमेरिका को 50 फीसदी हिस्सेदारी मिलती। ट्रंप ने लैरी एलिसन और एलन मस्क जैसे नामों को संभावित खरीदार बताया था, हालांकि मस्क अब इससे दूर दिख रहे हैं। टिकटॉक की बिक्री को लेकर अब सभी की निगाहें 17 सितंबर पर टिकी हैं।

सवाल यही है कि बाइटडांस सौदे को आगे बढ़ाता है या नहीं, और क्या चीनी सरकार इसे मंजूरी देती है।

महिंद्रा की पॉपुलर ऑफरोड एसयूवी थार ने बनाई मजबूत पकड़

नई दिल्ली।

भारतीय बाजार में महिंद्रा एंड महिंद्रा की पॉपुलर ऑफरोड एसयूवी थार अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है। बिक्री के मामले में यह मारुति जिम्नी से कहीं आगे निकल चुकी है। फिलहाल थार सिर्फ आईसीई इंजन वेरिएंट में बिक रही है, लेकिन ग्राहकों में इसके इलेक्ट्रिक वर्जन को लेकर खासा उत्साह है।

महिंद्रा पहले ही पुष्टि कर चुकी है कि थार को इलेक्ट्रिक पावरट्रेन के साथ भी लॉन्च किया जाएगा। कंपनी हाल के वर्षों में स्वतंत्रता दिवस जैसे मौकों पर अपने नए मॉडलों और भविष्य की योजनाओं का खुलासा करने की परंपरा निभा रही है। आने वाले सालों में महिंद्रा अपने रेगुलर आईसीई और इलेक्ट्रिक पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए कई नए मॉडल पेश करने की तैयारी में है। कुछ कॉन्सेप्ट पहले ही प्रदर्शित किए जा चुके हैं लेकिन कंपनी के पास कई ऐसे प्रोजेक्ट भी हैं जो अभी तक पर्दे के पीछे हैं। इसी बीच, इंटरनेट पर हाल ही में एक नए प्रोटोटाइप की स्पाई तस्वीरें वायरल हुई हैं। यह नियर-प्रोडक्शन मॉडल कई दिलचस्प डिजाइन डीटेल्स दिखा रहा है। इसमें सीधा फ्रंट फेसिया, स्कॉर्पियो जैसी वर्टिकल ग्रिल स्लॉट्स और बॉक्सी बॉडीवर्क महिंद्रा की पहचान बताता है। साथ ही इसका डिजाइन दक्षिण अफ्रीका में दिखाए गए थार.ई कॉन्सेप्ट से मेल खाता नजर आता है।

स्पेयर व्हील के साथ फ्लैट टेलगेट, ऊंचे पिलर और रूफलाइन इसके इलेक्ट्रिक वर्जन की तरफ इशारा करते हैं। हालांकि, कुछ जानकार इसे अगली पीढ़ी के बोलेरो नियो से भी जोड़ रहे हैं। तस्वीरों में स्पूरिंग बोनट, ट्विन पीक्स लोगो, सर्कुलर एलईडी हेडलैम्प्स, चौड़ा इंटेक वाला बम्पर और आयताकार टेललैम्प्स दिख रहे हैं। यह प्रोटोटाइप पांच-द्वार वाला नजर आता है और थार रॉक्स के मुकाबले ज्यादा परिष्कृत डिज़ाइन का संकेत देता है।

ऑल्टो का नया फेसलिफ्ट वर्जन लॉन्च

नई दिल्ली।

जापान के ऑटोमोबाइल बाजार में सुजुकी ने 2025 ऑल्टो का नया फेसलिफ्ट वर्जन लॉन्च किया है। यह वर्जन वहां की पॉपुलर केई कार कैटेगरी में आता है। भारत में बिकने वाली ऑल्टो से यह मॉडल पूरी तरह अलग है और तकनीकी रूप से अधिक उन्नत माना जा रहा है। यह नई ऑल्टो न केवल कॉम्पैक्ट और किफायती है, बल्कि पहले से कहीं ज्यादा एडवांस फीचर्स और बेहतर माइलेज के साथ पेश की गई है। इसके डिजाइन में हल्के कॉस्मेटिक बदलाव किए गए हैं जैसे नया फ्रंट ग्रिल, बदला हुआ बंपर और राउंड शेप एयर इनटेक्स, जो इसे स्टाइलिश और परिष्कृत लुक देते हैं। साइड और रियर प्रोफाइल में ज्यादा बदलाव नहीं हैं, लेकिन नया रूफ स्पॉइलर इसकी स्पोर्टी अपील बढ़ाता है। कार की एयरोडायनामिक्स को बेहतर कर इसकी फ्यूल एफिशिएंसी में बड़ा सुधार किया गया है। इसमें 660सीसी का 3-सिलेंडर पेट्रोल इंजन है जो नेचुरली एस्पिरेटेड और माइल्ड-हाइब्रिड विकल्प में मिलता है। हाइब्रिड वर्जन का माइलेज अब 28.2 किलोमीटर प्रति लीटर है, जो इसे जापान की सबसे ज्यादा माइलेज देने वाली हाइब्रिड मिनी कार बनाता है। इंटीरियर में भी पहले से अधिक प्रीमियम फीचर्स जोड़े गए हैं जैसे 7-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, जो 'सुजुकी कनेक्ट' एप से स्मार्टफोन के जरिए कंट्रोल हो सकता है। हाइब्रिड वेरिएंट में लेदर फिनिश स्टीयरिंग व्हील, क्रोम डोर हैंडल्स और अपग्रेडेड स्टील व्हील्स मिलते हैं। सेफ्टी के लिहाज से इसमें अडवांस टेक्नोलॉजी, ड्यूअल सेंसर ब्रेक सपोर्ट-2, लेन डिपार्चर प्रिवेंशन और ट्रैफिक लाइट डिपार्चर नोटिफिकेशन जैसे एडवांस फीचर्स दिए गए हैं।

भारतीय ग्राहकों का किआ के सभी मॉडल्स को मिला अच्छा रिस्पॉन्स

नई दिल्ली।

किआ कंपनी के लगभग सभी मॉडल्स को भारतीय ग्राहकों का अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। इन मॉडलों में सोनेट और सेल्टोस ने खासतौर पर जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है। कंपनी अब कई नए मॉडल्स को लॉन्च करने की योजना बना रही है। इनमें कुछ मौजूदा पॉपुलर कारों के अपडेटेड वर्जन भी शामिल होंगे और साथ ही इलेक्ट्रिक मॉडल्स भी पेश किए जाएंगे। कंपनी की आने वाली गाड़ियों में सबसे ज्यादा चर्चा किआ कैरेंस क्लैविस ईवी की है। यह मोस्ट-अवेटेड इलेक्ट्रिक एमपीवी 15 जुलाई को भारतीय बाजार में पेश की जाएगी। इसमें 450 किलोमीटर से ज्यादा की ड्राइविंग रेंज मिलने की उम्मीद है, जो ग्राहकों के लिए बड़ा आकर्षण साबित हो सकता है। इसके अलावा, किआ अपनी बेस्ट-सेलिंग एसयूवी सेल्टोस के फेसलिफ्ट वर्जन पर भी काम कर रही है। इसे भारतीय सड़कों पर कई बार टेस्टिंग के दौरान देखा जा चुका है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, नई सेल्टोस में हाइब्रिड पावरट्रेन का विकल्प दिया जा सकता है और इसे 2025 के आखिर या 2026 की शुरुआत में लॉन्च किए जाने की संभावना है। तीसरी अपकमिंग कार किआ साइरोस का इलेक्ट्रिक वैरिएंट है।

प्रेमी के साथ मिलकर बहन ने करवाया भाई का मर्डर

बॉयफ्रेंड से बोली: तुम मिलने आए तो भइया ने डांटा, 12 लड़कों ने ट्रेन से खींचकर पीटा

आरा। 27 अप्रैल की रात 9 बजकर 55 मिनट पर आरा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म संख्या-2 पर RPF पोस्ट से करीब 100 मीटर की दूरी पर गाड़ी संख्या 22355 पाटलिपुत्र-चंडीगढ़ एक्सप्रेस आती है। बोगी संख्या र-1 में चढ़ने के दौरान 26 साल के सत्यम और उसके पिता हरिद्वार ठाकुर की 10 से 11 लड़के 2 मिनट में 100 से ज्यादा बार लात-घूंसों से जमकर पिटाई कर देते हैं। आरोपियों से बचने के लिए हरिद्वार ठाकुर और सत्यम किसी तरह ट्रेन में चढ़ जाते हैं। ट्रेन के खुलते ही सत्यम की हालत खराब हो जाती है। डुमरांव स्टेशन पर उतरकर सत्यम अपने पिता के साथ वापस आरा पहुंचता है और सदर अस्पताल में एडमिट होता है। हालत गंभीर होने की वजह से डॉक्टर सत्यम को एम्स पटना रेफर कर देते हैं। 12 मई को सत्यम की इलाज के दौरान मौत हो जाती है। सत्यम की बड़ी बहन मंजू ने बताया कि, '17 अप्रैल को मैं 2 छोटी बहनों के लिए स्कूटी खरीदने गई थी। दोनों को स्कूल, ट्यूशन आने-जाने में दिक्कत होती थी।' 'स्कूटी खरीदे जाने के एक सप्ताह बाद यानी 23 अप्रैल को सत्यम रात को खाना खाने के बाद छोटी बहन मधु और एक अन्य बहन को लेकर घर से निकला और नाला मोड़ के पास स्कूटी सिखाने लगा।' 'सत्यम ने देखा कि वहां मोहल्ले का रवि पहले से मौजूद था। सत्यम को पता था कि उसकी बहन मधु और रवि का अफेयर है। इसे लेकर सत्यम मधु को पहले समझा चुका था कि तुम्हारी पढ़ाई की उम्र है, इन चक्करों में मत पड़ो।' 'सत्यम ने जब रवि को देखा तो गुस्सा हो गया और मधु को घर लेकर आ गया। यहां उसे डांटा और पूछा कि

'आखिर रवि को कैसे पता चला कि मैं तुम दोनों को स्कूटी सिखाने आ रहा हूं।' 'हालांकि, इसके बाद सब नॉर्मल हो गया, लेकिन मधु ने अपने प्रेमी रवि को उसी दिन रात में ये बात बताई की उसके भाई ने फिर से डांटा है। मंजू के मुताबिक, '27 अप्रैल की रात सत्यम पापा के साथ रूटीन चेकअप के लिए लखनऊ जाने के लिए आरा स्टेशन निकला। सत्यम और पापा जैसे ही स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या 2 पर पहुंचे, रवि अपने साथियों के साथ आया और सत्यम के साथ-साथ पापा के साथ मारपीट शुरू कर दी।' मधु ने बताया कि 'मारपीट की घटना के अगले दिन रेलवे पुलिस में मामला दर्ज कराया गया। रेलवे पुलिस ने पापा को एक दूसरा आवेदन देने को कहा, जिसके आधार पर 13 मई को दूसरी FIR दर्ज की गई।' 'उधर, जब जांच पड़ताल का दायरा बढ़ा तो पकड़े जाने के डर से 23 मई को मधु घर से फरार हो गई। फिलहाल, मधु कहां है, हम लोगों को कुछ नहीं पता।' आरा शहर

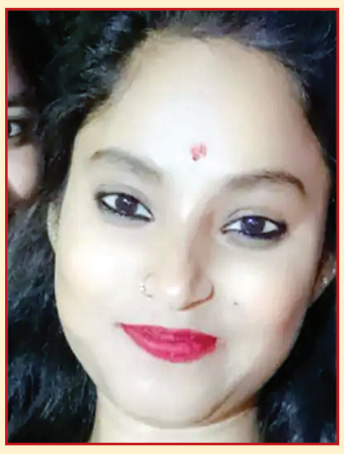

के पश्चिम टोले के रहने वाले हरिद्वार ठाकुर के बेटे सत्यम की मौत को 50 दिन हो चुके हैं। अब तक पिता मुख्य आरोपी समेत अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर आरा रेलवे पुलिस से लेकर दानापुर तक का चक्कर काट रहे हैं। वो कहते हैं कि मेरा बेटा सत्यम इरू से ग्रेजुएट था और जबलपुर से फैशन डिजाइनर का कोर्स फाइनल कर अपने भविष्य के सपने बुन रहा था, भला उसका क्या कसूर? हरिद्वार ठाकुर ने सत्यम की मां देवंती देवी से पहली शादी की थी। तीन बेटों सतीश, सत्यम, अविनाश और पांच बेटियां मंजू, मीरा, ज्योति, आरती और सलोनी के जन्म लेने के बाद अक्सर देवंती देवी की तबीयत खराब रहती थी। घर संभालने वाला कोई नहीं था, इसलिए परिवार की रजामंदी से हरिद्वार ठाकुर ने 1987 में दूसरी शादी कर ली। दूसरी पत्नी शोभा देवी से हरिद्वार ठाकुर को एक बेटा विकास और एक बेटी मधु है। दोनों शादी के बाद भी पूरा परिवार एक साथ रहता है। सभी भाई-

बहन एक साथ बड़े हुए हैं। सत्यम अपने सभी बहनों को मानता था, सबका का एक जैसा ख्याल रखता था। सत्यम की मां देवंती देवी की बीमारी के कारण साल 2017 में मौत हो गई। हरिद्वार ठाकुर ने बताया कि 'कभी-कभी सत्यम को गैस का प्रॉब्लम हो जाता था, जिसका इलाज अपने नजदीकी डॉक्टर से लखनऊ में कराते थे। सब कुछ ठीक था, हमने सोचा कि उसे एक बार रूटीन चेकअप के लिए फिर से लखनऊ ले जाकर डॉक्टर से दिखा देते हैं।' '27 अप्रैल की रात पाटलिपुत्र-चंडीगढ़ एक्सप्रेस के स्लीपर बोगी में दो टिकट करवाए थे। ट्रेन 10 से 12 मिनट लेट थी, लेकिन हम लोग समय से पहले करीब 9 बजे के आस-पास आरा स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या दो पर ठीक फ्ढक्ष्चेक पोस्ट से पहले स्लाइडर सीढ़ी के पास के अशोक के पेड़ के पास बैठ गए।' 'ट्रेन के आने से ठीक 10 मिनट पहले चेक पोस्ट के करीब 20 से 30 मीटर की दूरी पर एक स्टोर के बगल में माल ढोने वाले पर आकर बैठ गए। जैसे ही ट्रेन की आने का अनाउंसमेंट हुआ, तो हम लोग पश्चिम साइड सीढ़ी के पास आकर खड़े हो गए, जहां एस-2 बोगी लगने वाला था।' 'ट्रेन आई और जहां हम लोग खड़े थे, ठीक चंद कदम दूर पर बोगी लगी। स्टेशन पर काफी भीड़ थी। पहले मेरा बेटा आगे चढ़ रहा था और मैं पीछे खड़ा था। अभी एक कदम गेट पर रखा ही था कि कुछ लड़के अचानक आए और सत्यम का कॉलर पकड़कर उसे ट्रेन से पीछे खींचा।' 'इस बीच ट्रेन आगे जाने को तैयार हुई और सीटी बजी। मैं किसी तरह उठा और अपने बेटे को छुड़ाकर ट्रेन के अंदर ले गया, ताकि उसे पिटने से बचा सकूं।' 'मारपीट के दौरान न तो CRPF का कोई जवान आया, न ही किसी यात्री ने मेरे बेटे को बचाया। सत्यम जैसे ही ट्रेन पर चढ़ा, उसके पेट में दर्द होने लगा। कहने लगा कि पापा मुझे बचा लीजिए, पेट और छाती में काफी तेज दर्द हो रहा है।' 'अगला स्टेशन बक्सर था, लेकिन किसी कारण से ट्रेन डुमरांव स्टेशन पर खड़ी हो गई। फिर यात्रियों की मदद से सत्यम को मैंने स्टेशन पर उतरा और दूसरी ट्रेन पकड़कर आरा आए।' हरिद्वार ठाकुर ने बताया कि, 'इसके बाद सदर अस्पताल पहुंचने के बाद उसे पटना रेफर कर दिया गया। डॉक्टर्स ने बोला कि आपके बेटे के पेट में क्लोटिंग हो गई है, हालत नाजुक है।' 'उसे ICU के वेंटिलेटर पर रखा गया। दो दिनों तक उसको होश नहीं आया, फिर डॉक्टर्स ने उसका एक बड़ा ऑपरेशन किया, लेकिन डॉक्टर ने पहले ही जवाब दे दिया था। 12 मई को सत्यम ने अंतिम सांस ली।'

संक्षिप्त डायरी

जगमगाएगा पूरा सुल्तानगंज शहर, कांवड़ियों को मिलेंगी कई खास सुविधाएं

अजगैवीनाथ धाम। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला में आने वाले कांवरियों को शहरी व कच्ची कांवरिया पथ पर नंगे पांव चलने में कोई परेशानी न हो, इसके लिए नगर परिषद अपनी कार्ययोजना बना रही है। नगर परिषद के सभापति राजकुमार गुड्डू ने बताया कि शहरी क्षेत्र में पड़ने वाले ढाई किलोमीटर लंबी सड़क पर नंगे पांव चलने वाले कांवरियों को परेशानी न हो, इसके लिए सड़क पर रंग-बिरंगे हीट रेसिस्टेंट पेंट लगाए जाएंगे। साथ ही जिलाधिकारी के निर्देश के बाद नमामि गंगे घाट से रेलवे स्टेशन तक भव्य फ्रेम गेट का निर्माण कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि नगर परिषद द्वारा हर साल दी जाने वाली सुविधाओं से इस साल कांवरियों को बेहतर सुविधाएं दी जाएंगी। नगर पंचायत प्रशासन इस बात का ख्याल रखेगा कि यहां आने वाले कांवरियों को किसी तरह की परेशानी न हो। इस संबंध में सोमवार को सभापति राजकुमार गुड्डू व थानाध्यक्ष मृत्युंजय कुमार ने अजगैवीनाथ मंदिर घाट, नमामि गंगे घाट, अब्जूगंज चौक, निमार्णाधीन फोरलेन, कमराइन, रेलवे ओवर ब्रिज समेत अन्य मेला क्षेत्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने बेहतर सुरक्षा व्यवस्था बहाल करने पर चर्चा की। निरीक्षण के दौरान चेयरमैन ने अनुमंडल पदाधिकारी विकास कुमार से दूरभाष पर बात कर पीएचईडी के जेई को अजय वि नाथ मंदिर घाट जाने वाली सड़क के समीप महिला मूत्रालय बनाने का आदेश दिया। इस अवसर पर थानाध्यक्ष मृत्युंजय कुमार ने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया गया है। इस दौरान मेला क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में लाइट, पुलिस पोस्ट, यातायात समेत अन्य सुविधाओं की व्यवस्था को लेकर चर्चा की गई, ताकि देश के विभिन्न राज्यों से आने वाले कांवरियों को बेहतर सुरक्षा व्यवस्था मिल सके। इस अवसर पर वार्ड पार्षद नवीन कुमार बन्नी, सुभाष कुमार समेत पीएचईडी के जेई व अन्य मौजूद थे।

बिहार से लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश शुरू', तेजस्वी ने क्यों कह दी इतनी बड़ी बात?

पटना। मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआइआर) पर महागठबंधन लगातार अपनी आपत्तियां दर्ज करा रहा है। मंगलवार को कांग्रेस नेताओं के साथ प्रेस कांफ्रेंस में राजद नेता ने कहा कि लोकतंत्र की जननी बिहार से लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश शुरू हो गई है। हम अपना पक्ष रखने और आपत्ति दर्ज कराने के लिए समय मांग रहे हैं, लेकिन चुनाव आयोग मिलने का समय तय नहीं कर रहा है। चुनाव आयोग खुद असमंजस में है। वह हर दिन अपने ही फैसले और पुनरीक्षण प्रक्रिया को बदल रहा है। इससे इस पूरी प्रक्रिया पर संदेह पैदा होता है। महागठबंधन पहले ही सर्वदलीय बैठक की मांग कर चुका है, लेकिन हमारी बातों को अनसुना किया जा रहा है। पढ़ाई, कमाई, दवाई आदि के लिए बाहर गए लोगों का क्या होगा? बिहार से तीन करोड़ से अधिक पंजीकृत पलायन हुआ है। ऐसे में सबसे ज्यादा प्रभावित अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़ा, अति पिछड़ा और अल्पसंख्यक समुदाय के लोग होंगे। गरीबों के पास प्रमाण के तौर पर मांगे गए 11 दस्तावेज नहीं हो सकते हैं। जाति आधारित जनगणना में गरीबी रेखा से नीचे चिह्नित 94 लाख लोगों के लिए कौन से दस्तावेज मान्य होंगे, यह बताया जाना चाहिए। वैसे भी बिहार सतर्क है।

पुलिस से मुठभेड़ में इनामी बदमाश को लगी गोली

गोपालगंज। बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के बंगरा पुल के समीप पुलिस और कुख्यात बदमाश के बीच मुठभेड़ हुआ। इसमें पुलिस की गोली से बदमाश घायल हो गया। बताया जा रहा है कि मंगलवार देर शाम लूटपाट के मामले में फरार चल रहे आरोपित को गिरफ्तार करने पहुंची पुलिस टीम पहुंची थी। पुलिस को देखते ही बदमाश ने गोलीबारी शुरू कर दी। पिस्टल से तीन राउंड फायरिंग कर दी। इस दौरान पुलिस ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की तो आरोपित के पैर में गोली लग गई। वहीं, जख्मी आरोपित के पास से पुलिस एक पिस्टल दो कारतूस बरामद करने के साथ ही उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल गोपालगंज में लेकर पहुंची। जहां डॉक्टरों की देख रेख में इलाज चल रहा है। जानकारी के अनुसार, सिधवलिया थाना क्षेत्र के बरहिमा गांव निवासी महावीर यादव पर बैकुंठपुर थाना में लूटपाट के दो मामले दर्ज हैं और वह फरार चल रहा था। ऐसे में गोपालगंज पुलिस की तरफ से उसपर 25 हजार इनाम घोषित किया गया था। इसी बीच पुलिस को सूचना मिली कि आरोपित बंगरा पुल के समीप किसी घटना को अंजाम देने के लिए आया है।

1 लाख युवाओं पर खर्च होंगे 686 करोड़

इंटर्नशीप के लिए छात्रों को मिलेंगे 6 हजार, चुनाव से पहले कलाकारों-किसानों पर भी फोकस

पटना। बिहार सरकार ने 18 से 28 साल के एक लाख से ज्यादा युवाओं को मंथली 4 से 6 हजार रुपए मंथली इंटर्नशिप दी जाएगी। इन युवाओं के आर्थिक सहायता के साथ-साथ बिजनेस की ट्रेनिंग देने के लिए नीतीश कैबिनेट मुख्यमंत्री-प्रतिज्ञा योजना को मंजूरी दी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में इस योजना को हरी झंडी दी गई। बैठक में कुल 24 प्रस्तावों पर सहमति बनी। अपर मुख्य सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ ने कहा कि इस योजना से युवाओं को करियर प्रोमोशन के नए अवसर मिलेंगे। सरकार इस योजना पर 5 साल में करीब 1 लाख युवाओं पर 686 करोड़ रुपए खर्च करेगी। चालू वित्तीय वर्ष (2025-26) में 5000 युवा और अगले 5 वित्तीय वर्षों (2026-27 से 2030-31) में एक लाख युवाओं को लाभ मिलेगा। वहीं, राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रहने वाले पारंपरिक, शास्त्रीय, कलाओं से जुड़े कलाकारों के लिए मुख्यमंत्री

कलाकार पेंशन योजना को कैबिनेट ने मंजूर दी है। इस योजना से सीनियर सिटिजन और आजीविका संकट से जूझ रहे कलाकारों को 3000 रुपए मासिक पेंशन दी जाएगी। कलाकार की न्यूनतम आयु 50 साल होनी चाहिए। वार्षिक आय 1.20 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए। कैबिनेट ने विलुप्त हो रही लोक कलाओं को बचाने के लिए मुख्यमंत्री गुरु-शिष्य परंपरा योजना को भी मंजूरी दी है। गुरु को 15000, संगीतकार को 7500 और शिष्य को 3000 मासिक मानदेय दिया जाएगा। सरकार ने विलुप्त हो रही लोक कलाओं को बचाने के लिए योजना बनाई है। इसके तहत लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक संगीत, वाद्य यंत्र, शास्त्रीय कला और चित्रकला जैसी विधाओं को संरक्षित करने के लिए परंपरागत तरीके से प्रशिक्षण दिया जाएगा। सीतामढ़ी जिला के माता सीता की जन्मभूमि पुनौरा धाम में 882.87 करोड़ की लागत से माता जानकी मंदिर बनेगा। इसमें 137.34 करोड़ रुपए की लागत से पुनौराधाम स्थित पुराने मंदिर को नए सिरे से विकसित किया जाएगा। 728 करोड़ रुपए खर्च करके वहां अयोध्या के राम मंदिर की तरह पर्यटन संबंधित आधारभूत संरचनाएं बनाई जाएंगी। मंदिर और परिसर के 10 वर्ष तक रख-रखाव पर 16.62 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या धाम और माता सीता की जन्मभूमि पुनौराधाम के बीच सीधा संपर्क हो जाएगा। नेचुरल फार्मिंग योजना, 2025-26 में नेचुरल फार्मिंग (प्राकृतिक खेती) योजना चलाने के लिए सरकार ने 36 करोड़ 35 लाख रुपये खर्च करने की मंजूरी दी है। कृषि विस्तार योजना (सब-मिशन ऑन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन) चौथे कृषि रोड मैप के तहत बामेती और आत्मा (जिला स्तर पर कृषि प्रबंधन संस्था) को वेतन, मानदेय और प्रशासनिक खर्च के लिए 80 करोड़ 99 लाख रुपये खर्च करने की मंजूरी मिली है। मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता योजना, प्रधानमंत्री कृषि विकास योजना के तहत मिट्टी जांच प्रयोगशाला बनाने, जैव उर्वरक प्रयोगशाला बनाने।और पुरानी मिट्टी जांच लैब को सुधारने के लिए 30 करोड़ 49 लाख रुपये खर्च करने की मंजूरी दी गई है। कृषि प्रशिक्षण योजना, कृषि विस्तार योजना के तहत बामेती और आत्मा को प्रशिक्षण, भ्रमण और संपर्क कक्षा चलाने के लिए 41 करोड़ 2 लाख रुपए खर्च करने की अनुमति मिली है।

चाची को मायके छोड़कर आ रहे भतीजे की पिटाई

औरंगाबाद। अपने चाची को उसके मायके छोड़कर लौट रहे बाइक सवार युवक को रुकवाकर बेरहमी से पिटाई कर दिया। मामला नवीनगर प्रखंड के टंडवा थाना क्षेत्र के महुआ बिगहा गांव समीप की है। युवक को बचाने पहुंचे उसके दो भाइयों को भी पीटा गया। तीनों भाई गंभीर रूप से जख्मी हो गए। घायलों में कझपा गांव के रहने वाले 55 साल के विनेश यादव, 25 साल के सुरेंद्र कुमार और 19 साल के सिकंदर कुमार शामिल हैं। मंगलवार दोपहर सदर अस्पताल में इलाज के दौरान सिकंदर ने बताया कि वह अपनी चाची को उनके मायके माड़र गांव छोड़ने गया था। लौटते समय महुआ बिगहा गांव के पास एक युवक ने उसकी बाइक रुकवाई। फिर दो अन्य लोगों को बुलाकर गाली-गलौज करने लगे। बहस के दौरान बाइक की चाबी छीन ली। सिकंदर ने फोन कर अपने भाइयों को बुलाया। दोनों भाई मौके पर पहुंचे और कारण पूछा तो तीनों की पिटाई कर दी गई। पिटाई के दौरान आरोपियों ने कुछ और लोगों को फोन कर बुलाया। एक चार

पहिया वाहन से लाठी-डंडे और धारदार हथियार लेकर कुछ लोग पहुंचे और तीनों भाइयों को फिर पीटा। शोर सुनकर आसपास के लोग जुटे। अफरा-तफरी मच गई। ग्रामीणों ने किसी तरह मामला शांत कराया। तीनों घायलों को पहले रेफरल अस्पताल नवीनगर ले जाया गया। वहां से प्राथमिक इलाज के बाद सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। अस्पताल कर्मियों ने नगर थाना पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का फर्द बयान दर्ज किया। बयान में घायलों ने बताया कि मारपीट करने वालों में गांव के सीता यादव, विकास कुमार, बिशुनपुर गांव की मानमती देवी, रंजन यादव, तेंदुआ गांव के श्रवण कुमार यादव, गिरधर बिगहा गांव के बिंदा यादव, संतोष यादव और महुआ बिगहा गांव के योगेश यादव शामिल हैं। नगर थानाध्यक्ष उपेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि फर्द बयान के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

'गंगा का किनारा मुंबई जैसा लगता है, हर ओर फ्लाईओवर'

'**पटना।** गंगा का किनारा मुंबई जैसा लगता है। राजधानी समेत राज्य के हर दिशा में फ्लाईओवर बने हैं। गांव में बिजली, पानी, नली और गली की व्यवस्था है। हर तरह की सुविधाएं जनता तक पहुंच रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार के गांव स्मार्ट बन रहे हैं। शहरी सुविधाओं के समान ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी बुनियादी ढांचे का विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि जो सुविधाएं पहले केवल शहरों में उपलब्ध थीं, वे अब गांवों में भी पहुंच रही हैं। इससे ग्रामीणों का जीवन स्तर सुधर रहा है और वे विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।' ये बातें ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने मंगलवार को नालंदा के नूरसराय प्रखंड के म्यार पंचायत में कही। दरअसल, मंत्री ने म्यार पंचायत में 58 लाख रुपए की विभिन्न विकास योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।

म्यार उच्च विद्यालय में पेबर ब्लॉक का निमार्णः मनरेगा योजना के तहत म्यार गांव के हाई स्कूल में पेवर ब्लॉक का निर्माण कार्य पूरा हुआ है, जिससे छात्रों को बेहतर शैक्षणिक सुविधा मिलेगी। छठ घाट निमार्णः स्थानीय क्षेत्र विकास योजना और मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना से 6 लाख रुपए की लागत से छठ घाट के निर्माण का शिलान्यास किया गया। इससे स्थानीय निवासियों को छठ पूजा जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उचित व्यवस्था मिलेगी। सड़क निमार्णः म्यार गांव तक पहुंचने के लिए सीमेंट कंक्रीट (सीसी) सड़क का उद्घाटन किया गया, जो ग्रामीणों की यातायात संबंधी समस्याओं का समाधान करेगी। लोहड़ी प्राइमरी स्कूलः लोहड़ी के प्राइमरी स्कूल की चारदीवारी का निर्माण कराया गया है, जिससे बच्चों की सुरक्षा में वृद्धि होगी। उद्घाटन और शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान स्थानीय ग्रामीणों और स्कूल के प्रधानाध्यापक ने म्यार उच्च विद्यालय में चारदीवारी की कमी को लेकर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि चारदीवारी के अभाव में विशेकर बालिकाओं को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंत्री श्रवण कुमार ने इस मुद्दे पर संज्ञान लेने का आश्वासन दिया है। मंत्री ने बताया कि आंगनवाड़ी केंद्रों के 52,000 बच्चों के कपड़े की सिलाई का काम जीविका की दीदियों को सौंपा गया है। इस योजना से लगभग 80,000 महिलाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। मंत्री ने राजद नेता तेजस्वी यादव के हालिया बयान का जिक्र करते हुए कहा कि असत्य का सहारा लेकर चलने से कोई लाभ नहीं होता।

बिहार में चुनाव आयोग ने तेज की वेरिफिकेशन प्रोसेसः इन वोटरों को नहीं देने होंगे कोई दस्तावेज

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य तेजी से चल रहा है। मंगलवार को जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी ने कन्या मध्य विद्यालय में इसकी समीक्षा की। उन्होंने बूथवार मतगणना प्रपत्रों के वितरण की स्थिति, मतगणना प्रपत्रों व दस्तावेजों के संग्रहण की स्थिति समेत आयोग के सभी दिशा-निदेर्शों के अनुपालन की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने कहा कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी पात्र नागरिक मतदाता सूची में शामिल हों और कोई भी पात्र मतदाता मतदाता सूची से बाहर न हो। साथ ही कोई भी अपात्र मतदाता इसमें शामिल न हो। मृत/स्थानांतरित/अनुपस्थित मतदाताओं का नाम हटाना भी इसका उद्देश्य है। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निदेर्शानुसार अर्हता तिथि एक जुलाई 2025 के आधार पर मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान, 2025 में 25 जून से 26 जुलाई तक घर-घर सर्वेक्षण किया जाएगा तथा एक

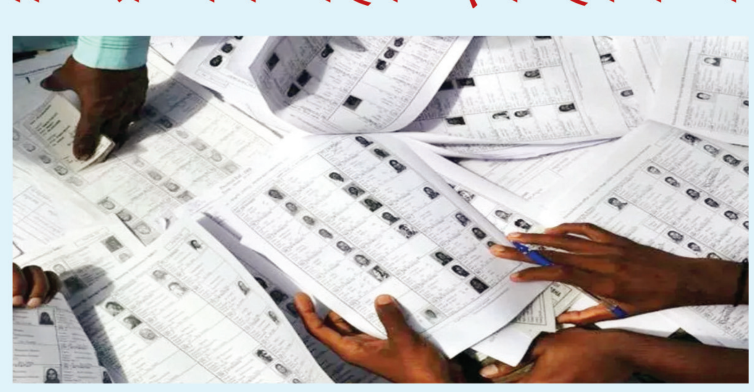

अगस्त को मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशन किया जाएगा। दावा-आपत्ति दाखिल करने की अवधि एक अगस्त से एक सितंबर तक निर्धारित की गई है। मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 30 सितंबर को किया जाएगा। अंतिम मतदाता सूची की एक प्रति सभी मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों के साथ साझा की जाएगी। यह ईसीआई/सीईओ की वेबसाइट पर भी उपलब्ध रहेगी। जिलाधिकारी ने कहा कि जो मतदाता समय पर प्रपत्र जमा नहीं करेंगे, उनके नाम प्रारूप सूची में शामिल नहीं किए जाएंगे। अगर कोई मतदाता समय पर गणना प्रपत्र जमा नहीं कर पाता है, तो वह दावा-आपत्ति अवधि के दौरान प्रपत्र-6 एवं घोषणा के साथ नाम जोड़ने के लिए आवेदन कर सकता है। मतदाता मतदाता eci.gov.in पर EPIC नंबर दर्ज करके भी गणना प्रपत्र प्राप्त कर सकते हैं। मतदाता eci.gov.in और ECINet ऐप पर गणना प्रपत्र भरने और ऑनलाइन माध्यम से दस्तावेज अपलोड करने की सुविधा भी उपलब्ध है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि बिहार के लिए अंतिम गहन पुनरीक्षण आयोग द्वारा वर्ष 2003 में 01 जनवरी 2003 को अर्हता तिथि मानकर किया गया था। अर्हता तिथि 1 जनवरी 2003 तक मतदाता सूची में पंजीकृत मतदाताओं को विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान, 2025 के दौरान गणना प्रपत्र के साथ दस्तावेज जमा करने की आवश्यकता नहीं है। अंतिम गहन पुनरीक्षित मतदाता सूची दिनांक 01.01.2003 में शामिल मतदाताओं को केवल अपनी प्रविष्टियों की पुष्टि करनी है और गणना प्रपत्र भरकर जमा करना है। इसके अलावा यदि किसी मतदाता के माता या पिता में से किसी का नाम 01.01.2003 तक मतदाता सूची में शामिल हो चुका है, तो ऐसे व्यक्ति को इस नामांकन के लिए उनसे संबंधित कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं होगी, चाहे उस व्यक्ति की जन्म तिथि कुछ भी हो।

बजट में ट्रिप प्लान करने के लिए जरूरी है कि आप सही लोकेशन का चुनाव करें

सिंगल मदर्स के लिए बच्चे की परवरिश करना आसान नहीं होता है। क्योंकि उनकी जिंदगी में ऐसी कई परेशानियां आती हैं, जिन्हें वह अकेले मैनेज करती हैं। लेकिन सिंगल मदर्स अपने बच्चे को हर खुशी देने की कोशिश करती हैं। इस समय गर्मी की छुट्टियां चल रही हैं और बच्चे घूमने जाने की जिद करते हैं। ऐसे में मां अपने बच्चे के लिए भी ट्रिप प्लान करती हैं। लेकिन सवाल यह है कि वह कम बजट में ट्रिप कैसे प्लान करें। क्योंकि उन्हें अकेले ही घर और बाहर सब मैनेज करना होता है। वहीं अगर आप भी सिंगल मदर हैं और बजट में ट्रिप प्लान करने में परेशान हो रही हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे हैक्स बताने जा रहे हैं, जिनको फॉलो करके आप सिर्फ 10 हजार रुपए में घूमने का प्लान बना सकती हैं।

ऐसे प्लान करें ट्रिप

बजट में ट्रिप प्लान करने के लिए जरूरी है कि आप सही लोकेशन का चुनाव करें। क्योंकि सही लोकेशन आपके बजट को कम करती है। भले ही आप इन जगहों पर घूम चुकी हों, लेकिन बच्चे के लिए आप किसी सस्ती जगह का चुनाव कर सकती हैं।

वहीं सिंगल मदर्स को ऐसी जगह का चुनाव करना चाहिए, जहां पर अच्छी सुविधा और सुरक्षा के लिहाज से भी ठीक हो। जहां पर सस्ते ऑटो या कैब आदि आसानी से मिल सकें। जैसे पहाड़ों वाली जगह पर हर चीज का दाम अधिक रहता है। इन जगहों पर खाने-पीने से लेकर स्टे तक के साधन काफी महंगे होते हैं।

वहीं आपको अपने साथ कुछ खाने पीने की ऐसी चीजें रखनी चाहिए, जो जल्दी खराब न हों। ट्रिप के दौरान आप साथ में फल लेकर जा सकती हैं। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और जल्दी भूख भी नहीं लगेगी।

बजट में घूमने के लिहाज से टूर पैकेज बेस्ट ऑप्शन होते हैं

सही लोकेशन का चुनाव करने पर आपको होटल भी कम दाम में मिल जाते हैं और यहां पर पहुंचना भी आसान होता है।

अधिकतर सिंगल मदर्स शहर से बाहर नहीं जाना चाहती हैं, तो आप शहर में रहकर भी घूमने जाने का प्लान बना सकती हैं। आप शहर में बच्चे को ऐसी जगह घुमाएं, जहां पर बच्चे हमेशा से जाना चाहते थे। ऐसा करने से न सिर्फ ट्रैवल और होटल का खर्चा बचेगा, बल्कि शहर में रहकर बच्चे अपनी पसंदीदा जगह घूम सकेंगे।

दूसरे शहर में कम खर्चे के लिहाज से आप शेयरिंग के साधन से घूम सकती हैं। क्योंकि इसमें कम बजट होता है। वहीं बच्चों के साथ घूमने के लिए यह टिप्स आपकी यात्रा को आसान बना देगी।

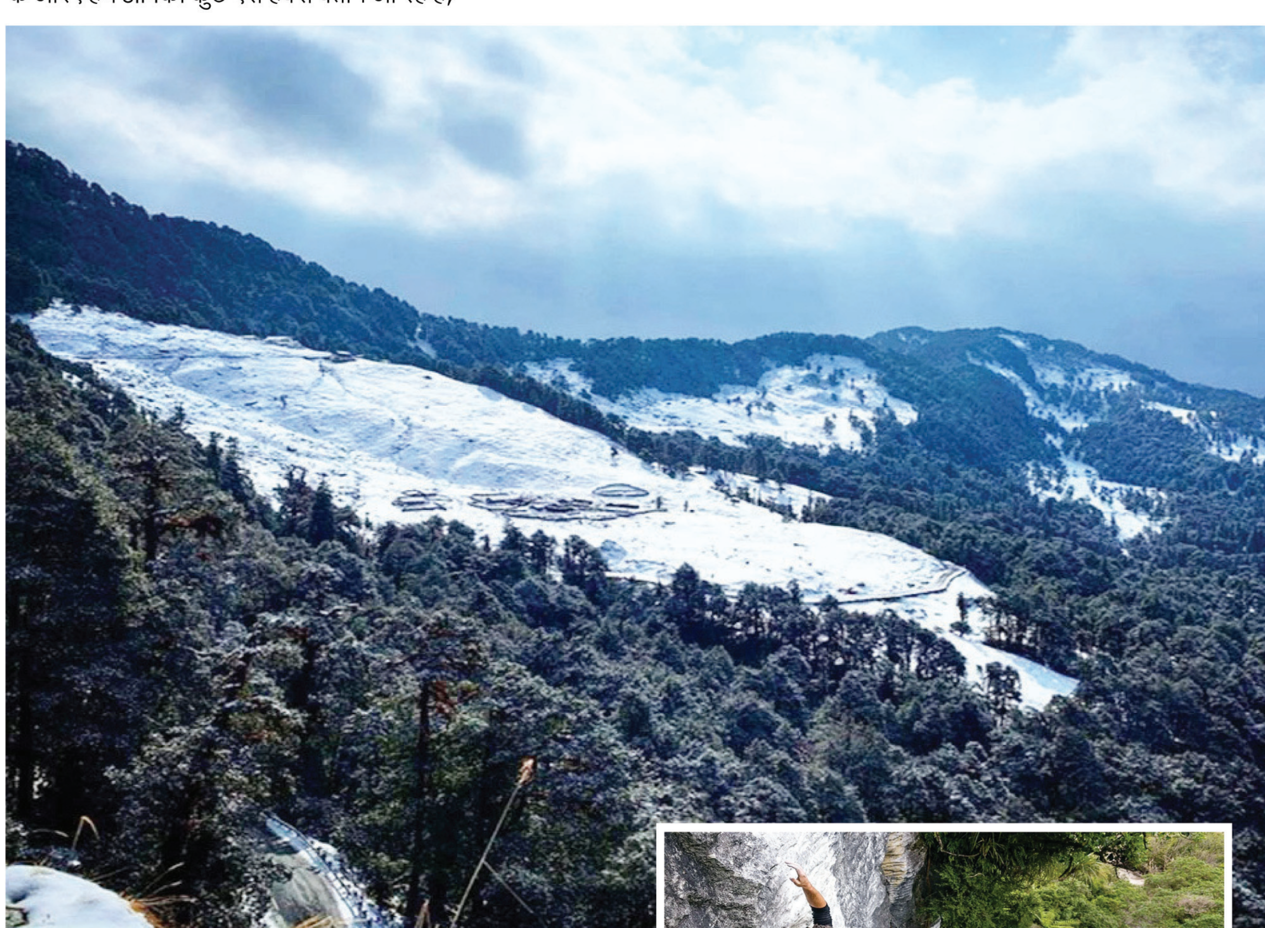

भीड़ से दूर बेहद शांत है उत्तराखंड का ये हिल स्टेशन, जन्नत में आने का होगा एहसास

समर वेकेशन में हजारों लोग घूमने-फिरने के लिए निकल गए हैं। तो वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने अभी तक कोई ट्रिप प्लान नहीं कर पाए हैं। वह किसी पहाड़ी जगह पर घूमने जाना चाहते हैं, लेकिन लोकेशन नहीं ढूंढ पा रहे हैं। वहीं कुछ लोग ऋषिकेश-नैनीताल नहीं जाना चाहते हैं, क्योंकि इन जगहों पर समर वेकेशन में यहां पर पर्यटकों की अधिक भीड़ आती है। इसलिए अगर आप किसी ऐसी जगह की तलाश कर रहे हैं, जो नैनीताल और ऋषिकेश से भी अधिक सुंदर हो। तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उत्तराखंड की एक सबसे खूबसूरत जगह के बारे में बताने जा रहे हैं।

मुनस्यारी - अगर आप भी दिल्ली की गर्मी से परेशान होकर अपने परिवार के साथ उत्तराखंड में अच्छी जगह ढूंढ रहे हैं। तो फौरन आपको मुनस्यारी का ट्रिप प्लान करें। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, ट्रेकिंग और ऊंचे पहाड़ों के लिए जाना जाता है। मुनस्यारी में गर्मियों में आपको अधिक भीड़ नहीं मिलने वाली है। क्योंकि मुनस्यारी काफी ऊंचाई पर स्थित है। नैनीताल से मुनस्यारी पहुंचने में आपको करीब 11 से 12 घंटे का समय लगता है। वहीं ऋषिकेश से भी यहां तक पहुंचने में करीब इतना ही समय लगेगा। यह मसूरी के पास घूमने के लिहाज से काफी अच्छी जगह है।

ऐसे पहुंचे मुनस्यारी

अगर आप दिल्ली से यात्रा करने का प्लान बना रहे हैं, तो बस से यात्रा करने के लिए अच्छा है। हालांकि इसमें ज्यादा समय लग सकता है।

अगर आप चाहें तो दिल्ली से देहरादून के लिए ट्रेन ले सकते हैं। फिर मुनस्यारी के लिए बस ले सकते हैं।

इसके साथ ही मुनस्यारी के लिए कैब की सुविधा भी मौजूद है। लेकिन इसमें खर्च ज्यादा होता है। वहीं अगर आप बजट में यात्रा करने का प्लान बना रहे हैं, तो बस से यात्रा करें।

आने-जाने में असुविधा न हो इसके लिए पहले से बस की बुकिंग कर लें। क्योंकि अधिक भीड़ होने पर आपको बस में सीट मिलने में मुश्किल हो सकती है।

दिल्ली से मुनस्यारी की दूरी करीब 604 किमी है। यहां पर पहुंचने में आपको 13-14 घंटे का समय लग सकता है।

प्रयास करें कि आप रात में बस ले लें। जिससे कि सुबह मुनस्यारी में ही आंख खोलें। इससे आपका सफर आराम से सोकर बीतेगा।

मुनस्यारी परिवार के साथ घूमने के लिहाज से काफी अच्छी जगह है।

देहरादून में करना चाहते कुछ तूफानी तो जरूर एक्सप्लोर करें ये जगहें, जमकर कर सकेंगे मस्ती

देहरादून एक ऐसी जगह है, जहां पर आपको खूबसूरत हिल स्टेशन मिलेंगे। यहां से हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी और धनोल्टी जैसी कई जगहों पर आप जा सकते हैं। वहीं अगर आप देहरादून में कुछ रोमांचक अनुभव करना चाहते हैं। वहीं कुछ देहरादून में ऐसी जगहों की तलाश करना चाहते हैं, जहां पर कुछ अच्छी एक्टिविटी कर सकें। अगर आप भी देहरादून में कुछ तूफानी करना चाहते हैं, तो आपको आसपास के हिल स्टेशन पर घूमने जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको देहरादून की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

रॉबर्स केव देहरादून

देहरादून की यह आपको काफी रोमांचक लगेगी। क्योंकि इसकी बनावट लोगों को आकर्षित करती है। जिन लोगों ने पहले कभी गुफा वाली जगहों पर प्रवेश नहीं किया है, उनके लिए यह एडवेंचर्स साबित हो सकता है। क्योंकि यहां पर आपको पैदल जाना होगा। पैरों में पानी होता है और मछलियां आपके पैरों को छूती हैं। हालांकि शुरूआत में आपको गुफा में चलने में थोड़ा डर लग सकता है, लेकिन धीरे-धीरे अंदर जाते ही नॉर्मल लगने लगेगा। प्रयास करें कि आप सुबह-सुबह पहुंचें, क्योंकि यहां पर बहुत भीड़ लगती है। यह मसूरी के पास घूमने लायक अच्छी जगहों में से एक है।

रॉक क्लाइबिंग

अगर आप कुछ तूफानी करना चाहते हैं और बिना किसी सहारे के पेड़ पर चढ़ना चाहते हैं। तो आपको देहरादून में रॉक क्लाइबिंग का लुत्फ उठा सकते हैं। यह सालन गांव में रॉक क्लाइबिंग करवाई जाती है। जहां पर आपको हर दिन भीड़ देखने को मिलेगी। आप यहां पर कैंपिंग के साथ कई तरह की एक्टिविटी भी कर सकते हैं। वहीं आप यहां पर पैकेज भी बुक कर सकते हैं और पूरा रात टेंट में बिता सकते हैं। इस दौरान आपको मिट्टी के बर्तन में खाना बनाना होगा और पूरी लाइफ कैंप की तरह जीना होगा। यह आपके लिए एक रोमांचक अनुभव हो सकता है।

मालसी डियर पार्क

अगर आप देहरादून में कुछ रोमांचक करना चाहते हैं, तो मालसी डियर पार्क जा सकते हैं। क्योंकि यह जगह आपको निराश नहीं करेगी। आप यहां पर जिप लाइनिंग और तरह-तरह की एक्टिविटी भी कर सकेंगे। बच्चों को भी यहां पर एक्टिविटी करवाई जाती है। वहीं अगर आप छोटा ट्रिप प्लान कर रही हैं, तो आपको यहां पर आपको भूलकर भी नहीं जाना चाहिए। यह देहरादून के पास घूमने वाली बेस्ट जगहों में से एक है।

प्रकृति, शांति और रोमांच का संगम है पार्वती घाटी में बसा कसोल

हिमाचल प्रदेश की पार्वती घाटी में बसा कसोल एक छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत पर्यटन स्थल है, जो खासकर युवाओं, ट्रेकिंग प्रेमियों और विदेशी पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। समुद्र तल से लगभग 1,580 मीटर की ऊँचाई पर स्थित कसोल को 卐भारत का मिनी इज़राइल卐 भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में इज़राइली पर्यटक आते हैं और यहाँ की संस्कृति में उनका प्रभाव देखा जा सकता है।

कसोल की खासियत

कसोल एक शांत और सुरम्य गाँव है, जो पार्वती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ का वातावरण बेहद शांत, स्वच्छ और ठंडा होता है। ऊँचे पहाड़, घने देवदार के जंगल, कलकल बहती पार्वती नदी और रंग-बिरंगे कैफ़े इस स्थान को बेहद आकर्षक बनाते हैं।

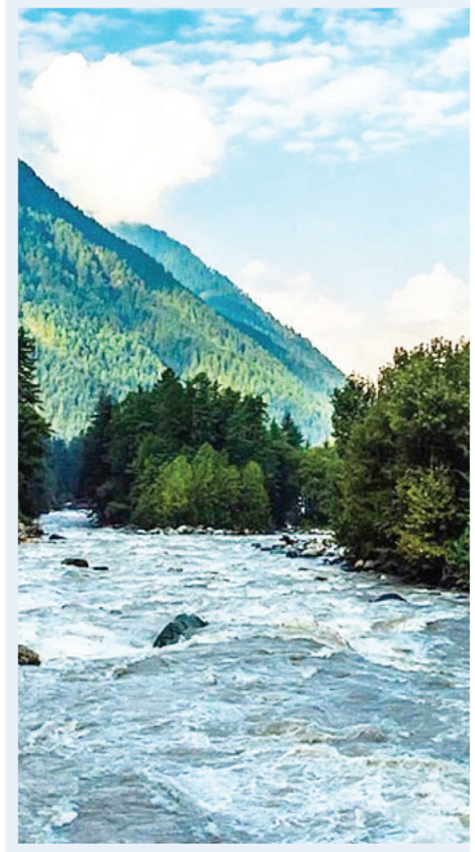

प्रमुख आकर्षण

1. पार्वती नदी

यह तेज बहाव वाली नदी कसोल की जान मानी जाती है। इसके किनारे टहलना, चट्टानों पर बैठकर मन को शांति देना और फोटोग्राफी करना पर्यटकों को बहुत पसंद आता है।

2. तोश और मणिकरण

कसोल से थोड़ी दूरी पर स्थित ये गाँव अपने प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिकरण में गर्म पानी के झरने और गुरुद्वारा प्रमुख आकर्षण हैं, जबकि तोश ट्रेकिंग प्रेमियों का पसंदीदा गाँव है।

3. चालल गाँव

कसोल से लगभग 30 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित यह छोटा गाँव ट्रेकिंग और कैम्पिंग के लिए आदर्श है। यहाँ आप स्थानीय संस्कृति को करीब से जान सकते हैं।

4. इज़राइली कैफ़े और भोजन

कसोल में कई इज़राइली कैफ़े और रेस्तराँ हैं जहाँ आप फलाफल, शाकशूका, हुम्मस आदि विदेशी व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

कसोल में करने योग्य गतिविधियाँ

ट्रेकिंग (खीरगंगा, तोश, चालल, ग्रहन)

कैम्पिंग और बोनफायर

रिवर साइड कैफ़े में समय बिताना

स्थानीय लोगों से मिलकर पहाड़ी संस्कृति को समझना

हर्बल चाय और हिमाचली हस्तशिल्प की खरीदारी

यात्रा का उत्तम समय

मार्च से जून: गर्मियों में ठंडी जलवायु और ट्रेकिंग के लिए अनुकूल मौसम।

सितंबर से नवंबर: मानसून के बाद की हरियाली और साफ आसमान।

दिसंबर से फरवरी: बर्फबारी का आनंद लेने के लिए उत्तम।

कैसे पहुँचे कसोल?

हवाई मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा भुंतर (कुल्लू) है, जो कसोल से लगभग 31 किमी दूर है।

रेल मार्ग: निकटतम रेलवे स्टेशन जोगिंदरनगर है, लेकिन सड़क मार्ग से पहुँचना अधिक सुविधाजनक है।

सड़क मार्ग: दिल्ली, चंडीगढ़ और मनाली से कसोल तक नियमित बस और टैक्सी सेवाएं उपलब्ध हैं।

कसोल एक ऐसा गंतव्य है जहाँ आप भीड़भाड़ से दूर प्रकृति के साथ एक गहरा रिश्ता बना सकते हैं। यहाँ का शांत वातावरण, रोमांचक ट्रेक्स, विदेशी भोजन और पहाड़ी सौंदर्य, हर पर्यटक को मंत्रमुग्ध कर देता है। चाहे आप सोलो ट्रैवलर हों, कपल या दोस्तों के साथ – कसोल हर किसी के लिए एक यादगार अनुभव है।

हेडिंग्ले में दो शतक लगाकर रैंकिंग में छठे नंबर पर पहुंचे ऋषभ पंत, टॉप से अभी बेहद दूर

दुबई (एजेंसी)। हेडिंग्ले टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले ऋषभ पंत टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। पंत ने इस टेस्ट में 134 और 118 रनों की पारियां खेली थीं, जिससे रैंकिंग में उन्हें एक स्थान का फायदा हुआ। हालांकि यह उनके करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग नहीं है। उन्होंने 2022 में टेस्ट रैंकिंग में पांचवां स्थान हासिल किया था। पंत के अब कुल 801 रेटिंग अंक हो गए हैं, जो उनके करियर का सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग अंक है। हालांकि वह अब भी नंबर-1 टेस्ट बल्लेबाज जो रूट से 88 अंक पीछे हैं।

रूट ने हेडिंग्ले में पहली पारी में 28 और दूसरी पारी में नाबाद 53 रन बनाए थे। पिछले मैच में शतक लगाने वाले इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज़ बेन डकेट करियर की सर्वश्रेष्ठ 787 रेटिंग अंक के साथ आठवें स्थान पर बने हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया के ट्रैविस हेड ने वेस्टइंडीज के खिलाफ बारबाडोस टेस्ट में दोनों पारियों में अर्धशतक लगाकर तीन स्थान की छलांग लगाई और वह अब शीर्ष-10 में हैं।

हेड ने पहली पारी में 59 और दूसरी पारी में 61 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया को जीत दिलाई थी। हेडिंग्ले में पांच विकेट लेकर जसप्रीत बुमराह गेंदबाजों की रैंकिंग में नंबर-1 पर बने हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया के जॉश हेजलवुड ने बारबाडोस टेस्ट की दूसरी पारी में 43 रन देकर 5 विकेट झटके थे। वह एक स्थान ऊपर चढ़कर चौथे स्थान पर पहुंच गए।

वेस्टइंडीज के जेडन सील्स ने पहली पारी में 60 रन देकर 5 विकेट लिए थे। वह एक स्थान ऊपर चढ़कर 9वें स्थान पर पहुंच गए हैं। ऑलराउंडर्स की टेस्ट रैंकिंग में रवींद्र जडेजा शीर्ष स्थान पर बरकरार हैं। वहीं दक्षिण अफ्रीका के वियान मुल्डर और कॉर्बिन बॉश ने जिम्बाब्वे के ख़िलाफ बुलावायो टेस्ट में गेंद और बल्ले दोनों से बेहतरीन प्रदर्शन कर ऑलराउंडर्स की रैंकिंग के शीर्ष-20 में प्रवेश कर लिया है।

क्लासिक अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता शनिवार को होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीरज चोपड़ा क्लासिक अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता इसी सप्ताह शनिवार को बेंगलुरु में होगी। श्री कांतीरवा स्टेडियम में आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में 12 खिलाड़ी भाग लेंगे। इससे पहले ये प्रतियोगित 24 मई को होनी थी पर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने के कारण स्थागित कर दिया गया था। ये पहली बार है जब भारत में किसी अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का आयोजन जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के सहयोग से किया जा रहा है और इसे भारतीय एथलेटिक्स महासंघ से भी मंजूरी मिली हुई है। इस टूर्नामेंट में देश विदेश के कुल 12 खिलाड़ी होंगे शामिल होंगे। इस टूर्नामेंट में नीरज चोपड़ा समेत पांच भारतीय सचिन यादव, किशोर जेना, रोहित यादव और साहिल सिलवाल शामिल होंगे। वहीं विदेश के सात सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में दो बार के विश्व चैंपियन ग्रेनेड के एंडरसन पीटर्स, जर्मनी के 2016 ओलंपिक स्वर्ग विजेता थॉमस रोहलर, कीनिया के 2015 के वर्ल्ड चैंपियन जूलियस येगो, अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन, जापान के एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता जेनकी डीन, श्रीलंका के रुमेश पथिरेज और ब्राजील के लुईज मौरिसियो दा सिल्वा शामिल हैं। इस प्रतियोगिता के लिए टिकट की कीमत 199 रुपये से लेकर 9,999 रुपये तक होगी। इसके अलावा 15 व्यक्तियों के लिए पांच कॉर्पोरेट बॉक्स 44,999 रुपये में उपलब्ध हैं। वहीं थ्रोअर रनवे के पास एक विशेष स्टैंड की कीमत 9,999 रुपये है, जबकि रनवे के ठीक पीछे स्थित नॉर्थ अपर स्टैंड में एक और विशेष स्टैंड 2,999 रुपये में है।

टी20 विश्वकप के लिए 13 टीमें तय हुईं

-बचे हुए 22 स्थानों के लिए 22 टीमों में होगा मुकाबला

मुम्बई (एजेंसी)। अगले साल की शुरुआत में संयुक्त रुप से भारत और श्रीलंका में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए अभी तक 13 टीमें तय हो गयी हैं जबकि बचे हुए सात स्थानों के लिए 22 टीमों के बीच मुकाबला होना है। इस टूर्नामेंट में कुल 20 टीमों को खेलने का अवसर मिलेगा। हैं। इनमें से मेजबान भारत और श्रीलंका सहित कुल 13 टीमें घोषित को गयी हैं जबकि सात और टीमों की घोषणा इस साल अक्टूबर तक होगी। कनाडा की टीम ने इसके लिए क्वालीफाई कर लिया है जबकि यूरोप क्वालीफायर्स के जरिए दो टीमों पर फैसला होगा। ये टूर्नामेंट भी पिछले टूर्नामेंट के प्रारुप के अनुसार ही होगा। जिसके तहत पहले 20 टीमों को चार ग्रुप में बांटा जाएगा। इसके बाद सुपर 8 के मुकाबले होंगे और फिर सेमीफाइनल और फाइनल मैच खेले जाएंगे। मेजबान के रूप में भारत और श्रीलंका को पहले दो स्थान मिले हैं। उसके बाद अगले 10 स्थानों का पिछले संस्करण में सुपर आठ क्वालीफायर और 30 जून 2024 की कट-ऑफ डेट पर टीम रैंकिंग के आधार पर हुआ। पिछले टी20 विश्व कप 2024 में सुपर 8 में प्रवेश के कारण अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज को 2026 टी20 विश्व कप में जगह मिली। अमेरिका ने भी टॉप 8 में पाकिस्तान को हराकर प्रवेश किया था। सुपर 8 में नहीं पहुंचने के बाद भी पाक ने न्यूजीलैंड और आयरलैंड के साथ अपनी टी20द्ध रैंकिंग के आधार पर अगले संस्करण में अपना स्थान तय किस है।

अब तक भारत, श्रीलंका, अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, कनाडा, इंग्लैंड, आयरलैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और वेस्टइंडीज ने इसके लिए प्रवेश हासिल किया है। इन टीमों के अलावा सात और टीमें इस टूर्नामेंट में खेलेंगी। एक तरह से देखा जाए तो 22 टीमों में बाकी के सात स्थानों के लिए मुकाबला होगा। एशिया और पूर्वी एशिया पेसिफिक रीजन से तीन टीमें प्रवेश करेंगी, जबकि दो-दो टीमें यूरोप क्वालीफायर और अफ्रीका क्वालीफायर से आएंगी। एशिया-ईस्ट एशिया पेसेफिक रीजन से जापान, कुवैत, मलेशिया, नेपाल, ओमान, पापुआ न्यू गिनी, कतर, समोआ और यूएई की टीमें क्वालीफायर्स खेलेंगी और इनमें से तीन टीमें सीधे टूर्नामेंट में प्रवेश करेंगी। वहीं, यूरोप क्वालीफायर्स में इटली, जर्सी, ग्वेर्नसे, नीदरलैंड और स्कॉटलैंड की टीम खेलेगी। इनमें से दो टीमें टी20 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करेंगी।

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को लगा एक और झटका, बीसीसीआई ने आरसीबी और केएससीए को भेजा नोटिस

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) के लोकपाल और सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा ने IPL फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (RCB) और कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (KSCA) को बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में 4 जून को हुई भगदड़ के संबंध में कारण बताओ नोटिस जारी किया जिसमें कई लोग घायल हो गए और 11 लोगों की मौत हो गई।

यह कदम विकाश कुमार विकास द्वारा 12 जून को दर्ज की गई एक औपचारिक शिकायत के जवाब में उठाया गया है जिसमें स्टेडियम में टिकट बिक्री कार्यक्रम के दौरान RCB फ्रेंचाइजी द्वारा बड़ी लापरवाही और सुरक्षा प्रोटोकॉल के उल्लंघन का आरोप है। शिकायत में दावा किया गया है कि अपर्याप्त भीड़ प्रबंधन, स्थानीय अधिकारियों के साथ बातचीत की कमी और खराब सुरक्षा व्यवस्था के कारण भगदड़ हुई।

विकास ने अपनी शिकायत में जवाबदेही की विफलताओं का हवाला देते हुए RCB फ्रेंचाइजी को तत्काल निलंबित करने की मांग की है। उन्होंने BCCI से फ्रेंचाइजी से जुड़ी किसी भी बिक्री वार्ता पर रोक लगाने का भी आग्रह किया है, यह तर्क देते हुए कि मालिक दायित्व से बचने के लिए टीम को बेचने का प्रयास कर सकते हैं। घटना की गंभीरता और जिम्मेदारी का पता लगाने की आवश्यकता का हवाला देते हुए न्यायमूर्ति मिश्रा ने KSCA और RCB दोनों को शिकायतकर्ता को प्रतियों के साथ चार सप्ताह के भीतर शिकायत पर लिखित जवाब प्रस्तुत करने का निर्देश दिया।

लोकपाल ने शिकायतकर्ता को उसके बाद जवाब दाखिल करने के लिए 10 दिन की अवधि भी दी। उन्होंने आगे निर्देश दिया है कि फ्रेंचाइजी के स्वामित्व के संबंध में यथास्थिति बनाए रखी जाए और मांगी गई अंतरिम राहत पर नोटिस जारी किया जाए। स्टेडियम के बाहर अराजक दृश्य देखे गए, जहां कथित तौर पर हजारों प्रशंसक RCB की खिताबी जीत का जश्न मनाने के लिए एकत्र हुए थे।

सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में प्रशंसकों को बैरिकेड तोड़ते हुए दिखाया गया जिसमें कई लोग गर्मी और भीड़ के दबाव के कारण बेहोश हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि सुरक्षा कर्मियों और चिकित्सा सहायता की भारी कमी थी, और इस बात पर सवाल उठाए गए कि कार्यक्रम के लिए ऑनलाइन टिकटिंग को प्राथमिकता क्यों नहीं दी गई। RCB फ्रेंचाइजी ने कथित तौर पर बेंगलुरु पुलिस के साथ प्रभावी ढंग से समन्वय नहीं किया था, जिसने कथित तौर पर आयोजकों को भीड़भाड़ के संभावित जोखिम के बारे में पहले ही चेतावनी दे दी थी।

KSCA ने भीड़ नियंत्रण उपायों पर आंतरिक रूप से चिंता जताई थी, लेकिन प्रचार और टिकटिंग के प्रभारी फ्रेंचाइजी अधिकारियों ने इसे खारिज कर दिया। न्यायमूर्ति मिश्रा ने शिकायत और मीडिया रिपोर्टों पर ध्यान देते हुए इस आशंका पर चिंता व्यक्त की कि फ्रेंचाइजी स्वामित्व हस्तांतरण कार्यवाही में तेजी लाकर खुद को परिणामों से दूर रखने का प्रयास कर सकती है।

लोकपाल ने यह स्पष्ट किया कि जवाबदेही को दरकिनार नहीं किया जा सकता है और सभी पक्षों को ऐसी किसी भी गतिविधि से दूर रहने का आदेश दिया है जो शिकायत की स्थिति को प्रभावित कर सकती है। भगदड़ के कारण राज्य में फ्रेंचाइजी और क्रिकेट अधिकारियों दोनों की सार्वजनिक आलोचना हुई है। नागरिक समाज समूहों और प्रशंसक संघों ने क्रिकेट आयोजनों के दौरान भीड़ प्रबंधन के लिए पारदर्शी जांच और सख्त सुरक्षा मानदंडों की मांग की है। लोकपाल द्वारा औपचारिक कार्यवाही शुरू करने के साथ अब ध्यान KSCA और RCB की प्रतिक्रियाओं और इंडियन प्रीमियर लीग में फ्रेंचाइजी के भविष्य के संभावित परिणामों पर केंद्रित है।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने दूसरा टी20 भी जीता , इंग्लैंड को 24 रनों से हराया

लंदन(एजेंसी) । जेमिमा रॉड्रिग्स और अमनजोत कौर की शानदार बल्लेबाजी से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने दूसरे टी20 मुकाबले में मेजबान इंग्लैंड को 24 रनों से हराकर पांच मैचों की टी20 सीरीज में 2-0 की बढ़त ले ली है। भारतीय टीम ने पहला मैच भी 97 रनों से जीता था। इस मैच में टॉस जीतकर इंग्लैंड की टीम ने भारतीय टीम को बल्लेबाजी के लिए बुलाया। भारतीय टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने भी इस मैच से वापसी की पर वह रन बनाने में विफल रहीं। टीम ने 31 रन देकर 3 विकेट खो दिए थे पर इसके बाद अनुभवी बल्लेबाज जेमिमा रॉड्रिग्स और अमनजोत कौर ने अच्छी बल्लेबाजी कर स्कोर आगे बढ़ाया। जेमिमा ने 9 चौके और एक छक्का लगाकर 41 गेंदों में 63 रन बना दिये जबकि अमनजोत ने 40 गेंदों में 9 चौकों की सहायता से 63 रन बनाये। ऋचा घोष ने 20 गेंदों में 32 रन बनाए। भारतीय टीम ने 20 ओवर में 4 विकेट पर 181 रन बनाये। इंग्लैंड की ओर से लॉरेन बेल ने दो जबकि लॉरेन फिलर और एम अरलॉट से एक-एक विकेट लिया। इसके बाद इंग्लैंड की टीम 182 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 157 रन ही बना पायी इस प्रकार उसे 24 रनों से हार का सामना करना पड़ा। टैम ब्यूमोंट ने 54 जबकि एमी जोन्स ने 32 रन बनाये पर अन्य बल्लेबाज असफल रहीं। भारतीय टीम की ओर से श्री चरणी ने दो विकेट जबकि दीप्ती व अमनजोत ने एक-एक विकेट लिया।

जिस भी खिलाड़ी पर यौन शोषण के आरोप हैं उसकी जांच हो : सैमी

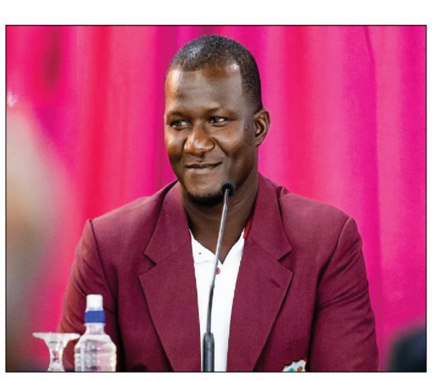

बारबाडोस । वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के कोच डैरेन सैमी ने कहा है कि टीम के जिस भी खिलाड़ी पर यौन शोषण के आरोप हैं उसकी जांच की जाये पर कहा कि इसमें सही कानूनी प्रक्रिया का पालन होना चाहिये। इससे पहले गयाना के एक अखबार की रिपोर्ट में कहा गया था कि टीम के एक क्रिकेटर पर 11 युवतियों ने शोषण के आरोप लगाये हैं पर इस मामले में कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं की है। सैमी ने कहा कि ये स्थित गंभीर है पर इसमें कानूनी प्रक्रियाओं का सम्मान होना चाहिये। पूर्व कप्तान सैमी ने कहा, ''मीडिया में जो कुछ आ रहा है, वह हम सभी को पता है। मैं अपने खिलाड़ियों के बहुत करीब हूं। मैंने उनसे बातचीत की है। एक बात मैं कह सकता हूं कि हम न्याय में विश्वास करते हैं। हमारा भी मानता है कि न्याय होना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''हालांकि, इसकी एक तय प्रक्रिया होती है। आरोप लगाए गए हैं और हम जांच में अपनी तरफ से सभी प्रकार से सहायेग करेंगे, जिससे उचित प्रक्रिया और सही प्रणाली का पालन तय किया जा सके।'' सैमी ने कहा कि किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले कानून को अपना काम करने देना चाहिए। उन्होंने कहा, ''ये आरोप हैं। हम न्याय प्रणाली को जानते हैं। आपको प्रक्रिया के लिए इंतजार करना होगा। मैं कोई न्यायाधीश नहीं हूं। जो जानकारी सामने आई है, वही हमारे पास है। मुझे पूरा भरोसा है कि अंत में न्याय होगा।''

जसप्रीत बुमराह को रेस्ट देने पर भड़के रवि शास्त्री, गिल-गंभीर को जमकर सुनाया

लंदन (एजेंसी)। बुधवार को भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में तीन बदलाव किए हैं। शार्दुल ठाकुर, साई सुदर्शन को प्लेइंग इलेवन से बाहर रखा गया है, जबकि जसप्रीत बुमराह को रेस्ट दिया गया है। जसप्रीत बुमराह की जगह आकाशदीप को टीम में शामिल किया गया है। हालांकि, टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री बुमराह के ना होने से हैरान हैं। उन्होंने कहा कि कप्तान शुभमन गिल और कोच गौतम गंभीर ये सुनिश्चित करना चाहिए था कि बुमराह दूसरे टेस्ट में खेलें, क्योंकि दोनों मैचों के बीच लगभग एक सप्ताह का अंतर था।

बुमराह को कार्यभार प्रबंधन के कारण बुधवार से शुरू हुए दूसरे टेस्ट मैच में आराम दिया गया। वह लीड्स में पहले टेस्ट मैच में खेले थे जिसमें भारत पांच विकेट से हार गया था। ऑलराउंडर नीतीश कुमार रेड्डी और वॉशिंगटन सुंदर को प्लेइंग इलेवन में शामिल किया गया। साई सुदर्शन और शार्दुल ठाकुर को टीम में नहीं चुना गया है।

रवि शास्त्री ने कहा कि, इसको खेलो इसे 1-1 से बराबरी पर लाओ और फिर उन्हें विकल्प दो। आप लॉर्ड्स में आराम देना चाहते हो, वहां दो। आप सोचते हैं कि वह लॉर्ड्स में रेस्ट करेगा? कोई मौका नहीं है अगर आप ये जीतते हैं, अगर आप भारत के नजरिए से देखें तो ये बहुत ही अहम टेस्ट मैच बन जाता है। आप न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैच हारे, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन हारे और यहां पहला मैच गंवाया है और आप जीते के रास्ते पर आना चाहते हैं। आपके पास दुनिया का सबसे अच्छा तेज गेंदबाज है और आप उसे सात दिन के आराम के बाद बाहर बैठा देते हैं, इस पर विश्वास करना बहुत कठिन है।

साक्षी, जैस्मिन और लक्ष्य विश्व मुक्केबाजी कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

अस्ताना । भारतीय मुक्केबाजों साक्षी, जैस्मिन, मीनाक्षी और लक्ष्य चाहर व मनीष राठौर ने कजाकिस्तान में जारी विश्व मुक्केबाजी कप में शानदार प्रदर्शन करते हुए क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया है। इस टूर्नामेंट में महिलाओं के 54 किग्रा भार वर्ग में साक्षी ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए प्री-क्वार्टर फाइनल मुकाबले में इंग्लैंड की चार्ली डेविसन को 5-0 से हराया। साक्षी के अलावा जैस्मिन ने 57 किग्रा वर्ग में अजरबैजान की अयनुर मिकायिलोवा को 5-0 से हराकर अंतिम आठ में प्रवेश किया। महिलाओं के ही वर्ग में भारत की मीनाक्षी ने लाइट-फ्लाईवेट श्रेणी में ऑस्ट्रेलिया की मैडेलीन बोवेन को 5-0 से पराजित किया जबकि मुस्कान ने मिडिलवेट श्रेणी में इंग्लैंड की केरी डेविस को करीबी मुकाबले में 3-2 से हराकर अगले दौर में जगह बनायी है। दूसरी ओर पुरुष वर्ग में भारत के लक्ष्य ने 80 किग्रा वर्ग में बुल्गारिया के विलियम चोलोव को 4 -1 से हराया। वहीं भारत के ही मनीष राठौर को 55 किग्रा वर्ग में जापान के रुई यामागुची के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा है। साक्षी, लक्ष्य और जैस्मिन अब सचिन सिवाच, हितेश गुलिया, मुस्कान, मीनाक्षी और संजू के साथ अगले दौर में पहुंच गये हैं। इससे पहले हितेश और सचिन सिवाच ने अपने मुकाबलों में आसानी से जीत हासिल की थी।

धवन बोले शुभमन, ईशान के आने से अपना करियर समाप्त होने का अंदाजा हुआ

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने कहा है कि शुभमन गिल और ईशान किशन के आने के बाद ही उन्हें अपने करियर के समाप्त होने का अंदाज हो गया था। इसका कारण है कि शुभगन सभी प्रारुपों में अच्छा कर रहे थे। वहीं ईशान ने एक दौहरा शतक भी लगा दिया था। जब प्रदर्शन कमजोर हो गया तब उन्हें समझ आ गया कि अब उन्हें टीम में जगह नहीं मिलेगी। धवन ने साल 2013 में मोहाली की पिच पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 85 गेंदों में शतक लगाकर टेस्ट डेब्यू में सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड बनाया था। उनकी 187 रन की आक्रामक पारी सबसे आकर्षण का केन्द्र रही। 33 टेस्ट में कई अच्छी पारियां खेलने के बाद भी धवन का टेस्ट करियर ज्यादा समय नहीं चला। साल 2018 की इंग्लैंड सीरीज के बाद उन्हें टेस्ट टीम से बाहर कर दिया गया। इस क्रिकेटर के अनुसार उसने प्रयास किया पर तब वह अपने सर्वश्रेष्ठ दौर में नहीं थे। वहीं जब वह अपने करियर को देखते हैं तो उन्हें काई पछतावा नहीं होता। साथ ही कहा कि मैं पीछे देखता हूं तो खुश हूं कि मैंने जो हासिल किया, वो किसी सपने से कम नहीं हैं। धवन को टी-20 विश्व कप 2021 में जगह नहीं मिली पर वह समझ गये थे कि अब बदलाव तय है। इस क्रिकेटर ने कहा कि मैंने किसी को फोन नहीं किया क्योंकि मैं जानता था, हर किसी की अपनी सोच होती है और बात करने से कुछ नहीं होगा। साल 2013 चैंपियंस ट्रॉफी से लेकर 2022 तक धवन भारतीय एकदिवसीय टीम के सलामी बल्लेबाज रहे। वहीं साल. 2015 विश्व कप, 2017 चैंपियंस ट्रॉफी सहित कई अवसरों पर इस क्रिकेटर ने सबसे ज्यादा रन बनाए। रोहित के साथ उनकी जोड़ी काफी अच्छी रही पर उन्हें 2023 एकदिवसीय टीम में जगह नहीं मिली क्योंकि तब शुभमन काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे।

शमी को हर माह पत्नी व बेटी को देने होंगे चार लाख रुपये : हाईकोर्ट

कोलकाता । कोलकाता हाईकोर्ट ने क्रिकेटर मोहम्मद शमी को हर माह अपनी पत्नी हसीन जहां व बेटी आयरा को गुजारा भत्ता के तौर पर चार लाख रुपये देने के निर्देश दिये हैं। निर्देश के तहत शमी को पत्नी को डेढ़ लाख और बेटी को ढाई लाख हर महीने खर्च के लिए देने होंगे। हाईकोर्ट की बेंच ने हसीन जहां की एक याचिका पर सुनवाई के बाद ये आदेश पारित किया है। अदालत ने अपने आदेश में कहा, याचिकाकर्ता पत्नी को 1.5 लाख रुपये प्रति माह और बेटी को 2.5 लाख रुपये प्रति माह दे। अदालत ने यह भी कहा कि शमी अपनी बेटी के लिए निर्धारित राशि से अधिक शिक्षा या अन्य खर्चों के लिए दे सकते हैं। इससे पहले हसीन जहां ने जिला सत्र न्यायालय के आदेश के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील की थी, जिसमें शमी को 2023 में अपनी पत्नी को 50 हजार रुपये और बेटी को 80 हजार रुपये देने का निर्देश दिया गया था। वहीं हसीन ने अदालत से अपने लिए 7 लाख रुपये और अपनी बेटी के लिए 3 लाख रुपये प्रति माह का मुआवजा मांगा था। हसीन साल 2014 में शमी से शादी से पहले कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के लिए मॉडल और चीयरलीडर रही हैं। उनकी बेटी आयरा का जन्म 2015 में हुआ था। हसीन ने शमी पर साल 2018 में घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न का आरोप लगाया था। तभी से दोनो के बीच मामला अदालत में चल रहा है। इन दोनो का अभी तक कानूनी रूप से तलाक नहीं हुआ है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि शमी ने अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए पैसे देना बंद कर दिया था।

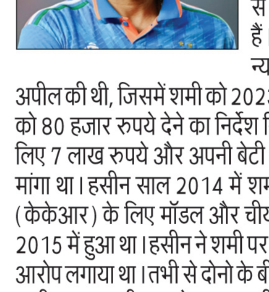

छह साल की उम्र में थामा बैडमिंटन, अब जूनियर वर्ल्ड नंबर 1 बनीं भारत की तन्वी शर्मा

स्पोर्ट्स डेस्क। पंजाब की गोल्डन गर्ल तन्वी शर्मा बैडमिंटन में जूनियर वर्ल्ड नंबर 1 बन गई हैं। तन्वी हाल ही में बीडब्लूएफ सुपर 300 यूएस ओपन 2025 में महिला एकल वर्ग में उपविजेता रहीं थी। महिला एकल के फाइनल में 16 वर्षीय तन्वी शर्मा को शीर्ष वरीयता प्राप्त अमेरिका की बेइवेन झांग के खिलाफ तीन गेम तक चले कड़े मुकाबले में हार का सामना करते हुए रजत पदक से संतोष करना पड़ा। विश्व टूर स्तर के अपने पहले फाइनल में खेल रही गैर-वरीयता प्राप्त इस किशोर खिलाड़ी को 46 मिनट में 11-21, 21-16, 10-21 से शिकस्त का सामना करना पड़ा।

विश्व में 66वें स्थान पर काबिज यह युवा भारतीय शटलर जूनियर विश्व की नंबर 1 खिलाड़ी बन गई है और विश्व बैडमिंटन रैंकिंग में शीर्ष 50 में शामिल हो गई है। उसने बीडब्ल्यूएफ सुपर 300 में अपने अभियान से वैश्विक बैडमिंटन समुदाय को चकित किया जिसमें विश्व की 23वें नंबर की खिलाड़ी सहित कई उच्च रैंक वाली प्रतिद्वंद्वियों को हराकर फाइनल में प्रवेश करना शामिल था।

तन्वी अगले महीने होने वाली एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में पदक जीतने का लक्ष्य रखकर चल रही है। वह अब गुवाहाटी में भारतीय बैडमिंटन टीम के शिविर में शामिल होगी। टीम अगले महीने इंडोनेशिया में होने वाली एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में भाग लेगी।

छह साल की उम्र में शुरु किया खेलना, मां ने निखारा

तन्वी ने 6 साल की छोटी सी उम्र में बैडमिंटन खेलना शुरू कर दिया था। शुरू से से ही प्रतिभाशाली रही तन्वी ने प्रतिष्ठित पुलेला गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी में चार साल से अधिक समय तक प्रशिक्षण लिया। इस दौरान उसने भारत के कुछ शीर्ष शटलरों के साथ ट्रेनिंग ली जिसने उनके कौशल को निखारा। इस दौरान तन्वी की मां ने भी बेटी के साथ कड़ी मेहनत की और शुरू में उसके खेल को आकार देने और उसकी प्रतिभा को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि मामले में गवाह गैर हाजिर, टली सुनवाई, अब 14 जुलाई की तारीख हुई तय

सुलतानपुर (एजेंसी)। जिले की एमपी-एमएलए अदालत ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि के एक मामले की सुनवाई मंगलवार को टल गई। मंगलवार को गवाह से जिरह होनी थी, लेकिन गवाह के न आने पर अदालत ने अगली सुनवाई 14 जुलाई को निर्धारित की है। यह मामला वर्ष 2018 का है, जब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता विजय मिश्रा ने राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज कराया था। मिश्रा का आरोप था कि कर्नाटक चुनाव के दौरान राहुल गांधी ने गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की थी। इस मामले में पिछली सुनवाई एक जून को हुई थी। भाजपा नेता विजय मिश्रा के अधिवक्ता संतोष कुमार पांडेय ने बताया कि उपरोक्त मामले में सुनवाई के लिए अदालत ने 14 जुलाई की तिथि निर्धारित की है। एमपी-एमएलए अदालत ने दिसंबर 2023 को राहुल गांधी के खिलाफ वारंट जारी किया था। फरवरी 2024 में राहुल ने अदालत में आत्मसमर्पण किया और उन्हें 25-25 हजार रुपये के दो मुचलकों पर जमानत दे दी गई। इसके बाद 26 जुलाई 2024 को राहुल ने अदालत में अपना बयान दर्ज कराया था। उन्होंने खुद को निर्दोष बताते हुए कहा था कि उनके खिलाफ राजनीतिक साजिश हो रही है।

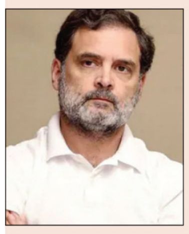

जालंधर में आए दिन हो रही अपराधिक घटनाओं से दहशत में शहरवासी

- बीते कुछ महीनों से जालंधर में गोलीकांड, मारपीट जैसे मामलों में तेज़ी से इज़ाफा हुआ

जालंधर (एजेंसी)। शहर में आए दिन हो रही अपराधिक घटनाएं आम नागरिकों की सुरक्षा पर गंभीर चिंता पैदा कर रही हैं। बीते कुछ महीनों से जालंधर में गोलीकांड, मारपीट और धमकियों जैसे मामलों में तेज़ी से इज़ाफा हुआ है, जिससे शहर के लोगों में दहशत का माहौल व्याप्त है। ताज़ा मामला शहर के पॉश इलाके मॉडल टाउन का है, जहां एक जिम से बाहर निकल रहे आरटीआई एक्टिविस्ट पर दो अज्ञात हमलावरों ने गोली चलाने की कोशिश की। गनीमत रही कि पिस्तौल में गोली फंस जाने के कारण बड़ा हादसा टल गया। घटना की पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो चुकी है और पुलिस जांच में जुटी है। इससे पहले भी जालंधर में एक के बाद एक हिंसक घटनाएं सामने आ चुकी हैं - चाहे वो सड़क पर सरेआम फायरिंग हो या फिर किसी व्यापारी या सामाजिक कार्यकर्ता पर हमले की वारदात। स्थानीय लोगों और समाजिक संगठनों ने पुलिस प्रशासन से मांग की है कि शहर में फैल रहे इस तरह के असामाजिक तत्वों पर तुरंत सख्त कार्रवाई की जाए। वह ऐसे गुंडा तत्वों के खिलाफ समय रहते कड़ा कदम उठाए और कानून-व्यवस्था को बहाल रखे, ताकि नागरिक बिना किसी डर के सामान्य जीवन जी सकें।

मराठी नहीं बोल पाने के कारण मुंबई में दुकानदार से मारपीट

- पुलिस ने सात लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में एक दुकानदार के साथ मारपीट का मामला सामने आया है जिसमे 7 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। बताया जा रहा है ?कि दुकानदार के मराठी नहीं बोल पाने के कारण उस पर हमला किया गया। मारपीट करने वाले महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के कार्यकर्ता थे। इस घटना का वीडियो भी वायरल हो रहा है। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच कर रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार मिठाई की दुकान चलाने वाले 48 साल के बाबूलाल खिमजी चौधरी ने कहा कि कुछ लोग सुबह उनकी दुकान में आए थे। उन्होंने कहा कि कपड़ों पर मनसे के चिह्न बने हुए थे। जब दुकानदार ने उनके साथ हिंदी में बात की, तो बहस शुरू हो गई और मराठी नहीं बोल पाने के कारण दुकानदार के साथ मारपीट की गई। एक अखबार के अनुसार चौधरी ने कहा, दो लोग मेरे पास आए और दोबारा कहा कि अगर मुझे काम करना है, तो मुझे मराठी आनी चाहिए और बहस के बाद पीटा। उन्होंने कहा कि उन लोगों ने इसका वीडियो भी बनाया और सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया। मैंने उन्हें कहा कि मेरे कर्मचारी दूसरे राज्यों से हैं और मराठी ठीक से नहीं बोल पाते, लेकिन उन लोगों ने जोर दिया कि महाराष्ट्र में सभी को मराठी आनी चाहिए। चौधरी ने बताया है कि जब उससे पूछा गया कि महाराष्ट्र में कौन सी भाषा बोली जाती है, तो इस पर जवाब दिया कि सभी भाषाएं बोली जाती हैं। खबर है कि इसके बाद लोग और नाराज हो गए थे।

पाकिस्तान की गलती ने दो भारतीयों की जान ले ली

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पाकिस्तान की गलती ने दो भारतीयों की जान ले ली। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के ड्रोन के टुकड़ों से घायल हुए पंजाब के एक बुजुर्ग की मौत हुई है। वह, डेढ़ महीने से ज्यादा समय से अस्पताल में भर्ती थे। खास बात है कि घायल हुईं उनकी पत्नी का पहले ही निधन हो गया था। रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार को 65 साल से लखविंदर सिंह की लुधियाना स्थिति अस्पताल में मौत हो गई। वे फिरोजपुर जिले के खाई गांव के निवासी थे। इससे पहले 13 मई को पत्नी सुखविंदर कौर की भी मौत हो चुकी है। भारत-पाक संघर्ष के दौरान जम्मू और कश्मीर के बाहर हुई यह पहली आम नागरिक की मौत थी। दरअसल, ऑपरेशन सिंदूर के जवाब में पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ ड्रोन लांच किए थे। भारतीय वायुसेना ने इन्हें तबाह किया था। इनके मलबे से लखविंदर, सुखविंदर और उनका बेटा मोनू झुलस गया था। हालांकि, कुछ समय बाद ही मोनू को अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया था, लेकिन दोनों अस्पताल में गंभीर हालत में भर्ती रहे। शुरुआत में तीनों को फिरोजपुर शासकीय अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन बाद में लुधियाना स्थिति अस्पताल में शिफ्ट कर दिया था।

कमलनाथ सरकार को गिराने में अहम भूमिका निभाने वाले खंडेलवाल, भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में विधायक हेमंत खंडेलवाल को भाजपा का नया प्रदेश अध्यक्ष चुना है। चुनावी प्रबंधन में माहिर खंडेलवाल 22 साल की उम्र से चुनाव अभियान को बखूबी संभाल रहे हैं। 2020 में कमलराज के खिलाफ विद्रोह से सत्ता में आई भाजपा में उनकी समन्वय की बड़ी भूमिका रही। 2024 के लोकसभा चुनाव में उन्हें प्रदेश चुनाव समिति का संयोजक नियुक्त किया गया था, जहां भाजपा ने सभी 29 सीटों पर जीत हासिल की। पिता के निधन के बाद राजनीति में उतरे खंडेलवाल 2013 में बैतूल विधानसभा सीट से पहली बार विधायक बने थे।

22-23 साल की उम्र में वे अपने पिता विजय खंडेलवाल का चुनाव अभियान पर्दे के पीछे से संचालित करते रहे। 2018 के विधानसभा चुनाव में सत्ता गवां चुकी भाजपा 2020 में कमलराज के खिलाफ जिस विद्रोह से सत्ता में आई, उसमें समन्वय की बड़ी भूमिका खंडेलवाल की भी रही। दरअसल सिंधिया गुट को साधकर कमल खिलाने में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

बता दें कि ज्योतिरादित्य सिंधिया के नेतृत्व में कांग्रेस के कुछ विधायकों द्वारा किए गए विद्रोह को भाजपा ने साधा और अपने साथ शामिल कर नई सरकार बनाने की कवायद शुरु की। उन्हें टूटने से बचाने के लिए भाजपा शासित कर्नाटक के बेंगलुरु ले जाया गया। कांग्रेस के सिंधिया के गुट और भाजपा नेतृत्व के बीच समन्वय की जिम्मेदारी जिन नेताओं को मिली, उसमें प्रदेश भाजपा के तत्कालीन संगठन चुनाव प्रभारी हेमंत खंडेलवाल प्रमुख थे।

भाजपा का अभियान सफल रहा और शिवराज सिंह चौहान चुनाव हारने के बाद भी मुख्यमंत्री बनने में सफल हुए। सभी 29 सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की। इसके बाद से ही केंद्रीय नेतृत्व बड़े चुनाव प्रबंधन में इनकी जिम्मेदारी बढ़ाता गया। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में उन्हें प्रदेश चुनाव समिति का संयोजक बनाया। यहां की सभी 29 सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की। खंडेलवाल ने वर्ष 2014 से 2018 तक पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष का दायित्व भी निभाया। वर्ष 2010 से 2013 तक उन्होंने भाजपा के बैतूल जिलाध्यक्ष का दायित्व भी संभाला।

खंडेलवाल वर्ष 2007 में पिता के निधन के बाद हुए उप चुनाव में लोकसभा का प्रत्याशी बनकर उतरे। यहां से उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने उन्हें बैतूल विधानसभा सीट से उतारा। वे जीत भी गए। वर्ष 2018 के चुनाव में उन्हें दोबारा टिकट मिला, लेकिन जीत नहीं पाए। तीसरी बार वर्ष 2023 के चुनाव में पार्टी ने एक बार फिर उन्हें टिकट देकर मैदान में उतारा और वे जीतने में सफल रहे।

सामाजिक दायित्व निभाने में भी आगे

खंडेलवाल सामाजिक दायित्व निभाने में भी पीछे नहीं रहते हैं। बैतूल जिले के ग्रामीण अंचलों तक साधनों के अभाव के कारण कई बार बैतूल के जिला अस्पताल से लोगों को घर तक स्वजन का शव ले जाने के लिए बेहद परेशानी का सामना करना पड़ता था। यह देखकर खंडेलवाल ने अपने पिता की स्मृति में वर्ष 2015 में शांति वाहन सेवा की शुरुआत की। इसके माध्यम से दुख के समय पीड़ित परिवार के सहयोगी के रूप में सबसे आगे खड़े रहकर वाहन की मदद से अब तक 3300 शवों को स्वजन के साथ घर तक पहुंचाया गया।

थानाध्यक्ष ने टेंपो चालक को पीटा, ब्राह्मण मेरा दुश्मन कहकर थूक चटवाकर माफी मांगवाई

पटना। बिहार के शेखपुरा जिले में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां एक थानाध्यक्ष पर टेंपो चालक से थूक चटवाने और उसकी बेरहमी से पिटाई करने का आरोप लगा है। पीड़ित टेंपो चालक, मेंहुस गांव निवासी अजय मिश्रा के 26 वर्षीय पुत्र प्रद्युम्न कुमार के मुताबिक थानाध्यक्ष प्रवीण चंद्र दिवाकर ने साइड न देने पर टेंपो चालक को रोका, थाना ले जाकर पीटा, फिर उसकी जाति पूछी और ब्राह्मण मेरा दुश्मन है जैसे शब्द कहे, जिसके बाद थूक चटवाकर माफी मांगने को कहा।

पीड़ित टेंपो चालक ने बताया कि वह सवारी उतार कर घर जा रहा था, तभी पीछे से बुलेट पर आ रहे थानाध्यक्ष ने साइड न मिलने पर रोककर लाठी से पीटा। इसके बाद टेंपो जब्त कर थाना ले जाकर फिर उसकी पिटाई की गई। हालांकि, थानाध्यक्ष ने आरोपों से इंकार कहा कि टेंपो चालक ने गश्ती कर रही महिला सिपाही को देखकर सीटी मारी थी, इसकारण थाने लाकर पीटा गया था। पीड़ित ने बरबीघा विधायक सुदर्शन कुमार से संपर्क किया, जिन्होंने घटना सुनकर तुरंत एसपी से बात की। विधायक ने एसपी से जांच कर कार्रवाई करने का भरोसा मिलने की बात कर घटना की निंदा करते हुए कहा कि पुलिस को आम लोगों के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार नहीं करना चाहिए। उन्होंने डीजीपी स्तर तक कार्रवाई की मांग करने और कार्रवाई न होने पर थाना के समक्ष धरना देने की चेतावनी दी।

नए आपराधिक कानूनों से न्याय के प्रशासन में सिर्फ भ्रम पैदा हुआ: चिदंबरम

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व गृह मंत्री पी. चिदंबरम ने बुधवार को कहा कि तीन नए आपराधिक कानून बनाने की कवायद निरर्थक थी और इससे न्यायाधीशों, वकीलों और पुलिस समेत न्याय के प्रशासन में केवल भ्रम पैदा हुआ है।

चिदंबरम ने यह भी दावा किया कि नए अधिनियम ज्यादातर 'कॉपी एंड पेस्ट' वाले हैं और कुछ ही नए प्रावधान जोड़े गए हैं। उनकी यह टिप्पणी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा तीन नए आपराधिक कानूनों के अधिनियमन को स्वतंत्र भारत में सबसे बड़ा सुधार करार दिए जाने के एक दिन बाद आई है।

शाह ने इस बात पर जोर दिया था कि नरेन्द्र मोदी सरकार ने नए कानून - भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) बनाए हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नागरिकों के सभी अधिकार सुरक्षित हैं और कोई भी अपराधी दंड से बच नहीं सकेगा।

सरकार पर निशाना साधते हुए कि चिदंबरम ने कहा कि उसने बार-बार दावा किया है कि तीन आपराधिक कानून आजादी के बाद सबसे बड़े सुधार हैं, जबकि यह बात सच्चाई से कोसों दूर है। पूर्व गृह मंत्री ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''मैंने तीन विधेयकों की जांच करने वाली स्थायी संसदीय समिति को एक असहमति नोट भेजा था, और यह संसद में पेश की गई रिपोर्ट का हिस्सा है।''

उन्होंने कहा, ''मेरे असहमति नोट में संबंधित नए विधेयक के साथ आईपीसी, सीआरपीसी और भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा दर धारा की तुलना करने के बाद मैंने दावा किया था कि आईपीसी का 90-95 प्रतिशत, सीआरपीसी का 95 प्रतिशत और साक्ष्य अधिनियम का 99 प्रतिशत हिस्सा 'कॉपी' करके दिया गया है और संबंधित नए विधेयक में 'पेस्ट' कर दिया गया है।'' चिदंबरम ने कहा कि इन नए कानूनों से न्याय के प्रशासन में सिर्फ भ्रम पैदा हुआ है।

राजनाथ सिंह ने समझाई सच्ची धर्मनिरपेक्षता, विपक्ष पर लगाया मगरमच्छ के आंसू बहाने का आरोप, सीएए का किया जिक्र

पटना (एजेंसी)। भारत के पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यक समुदायों के साथ हो रहे व्यवहार पर चिंता के बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के लागू होने पर इसका विरोध करने के लिए विपक्षी दलों की आलोचना की। राजनाथ सिंह ने विपक्ष पर दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने सीएए का पुरजोर विरोध किया जबकि अल्पसंख्यकों के लिए लगातार मगरमच्छ के आंसू बहाए। सिंह ने कहा कि पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यक समुदायों पर हो रहे अत्याचारों को देखते हुए हमारी सरकार ने सीएए पारित किया, जिसका सबसे ज्यादा विरोध उन राजनीतिक दलों ने किया जो अल्पसंख्यकों के लिए दिन-रात मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं।

रक्षा मंत्री ने पटना में पार्टी की राज्य कार्यकारिणी की बैठक में भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आगामी बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मनोबल बढ़ाने वाला भाषण दिया। बांग्लादेश का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए सिंह ने कहा कि बांग्लादेश में स्थिति काफी खराब होती जा रही है। वहां हिंदू समुदाय के साथ जो कुछ हो रहा है, वह किसी भी सभ्य समाज के माथे पर दाग से कम नहीं है। यह टिप्पणी बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा और व्यवस्थित भेदभाव की परेशान करने वाली रिपोर्टों की पृष्ठभूमि में आई है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा दुनिया की एकमात्र पार्टी है जिसने पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए नागरिकता अधिनियम में संशोधन किया है। इसे ही सच्ची धर्मनिरपेक्षता कहते हैं। मैं धर्मनिरपेक्षता के पैरोकार होने का दावा करने वालों से पूछना चाहता हूँ कि जब 1975 में संविधान में %धर्मनिरपेक्ष% शब्द जोड़ा गया था, तो इसे जम्मू-कश्मीर के संविधान में क्यों नहीं जोड़ा गया? क्या जम्मू-कश्मीर को धर्मनिरपेक्ष नहीं होना चाहिए था? जब हमने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया, तो वह सही मायनों में धर्मनिरपेक्ष हो गया।

उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान एक जीवंत दस्तावेज है। कांग्रेस और आरजेडी इस बार लोगों को गुमराह करने की अपनी कोशिश में सफल नहीं होंगे... धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले लोगों को धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता के संविधान पर अपनी सहमति देनी चाहिए।

मादक पदार्थ तस्करों के खिलाफ मकोका लगाने के लिये सरकार मौजूदा कानूनों में संशोधन करेगी : फडणवीस

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार मादक पदार्थ तस्करों पर महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के तहत कठोर कार्रवाई करने के लिये मौजूदा कानूनों में संशोधन करेगी। उन्होंने कहा कि यह संशोधन राज्य विधानमंडल के चल रहे मानसून सत्र में किया जाएगा। विधान परिषद में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए फडणवीस ने कहा कि मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाती है और वर्तमान में उन पर स्वापक औषधि एवं मनःप्रभावी पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया जाता है। फडणवीस ने हालांकि कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों को जमानत मिल जाती है और वे फिर से अपनी गतिविधियां शुरू कर देते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, 'सरकार कानून में संशोधन कर रही है ताकि इन लोगों को मकोका के तहत गिरफ्तार किया जा सके। राज्य विधानमंडल के चल रहे मानसून सत्र में यह संशोधन किया जाएगा।

कार्तिक महाराज पर दुष्कर्म का आरोप, हाईकोर्ट से एफआईआर रद्द करने की मांग

– टीएमसी ने कहा आरोपी भगवा कैंप के करीबी इसलिए बीजेपी चुप

कोलकाता (एजेंसी)। पद्मश्री से सम्मानित और भारत सेवाश्रम संघ मुर्शिदाबाद इकाई से जुड़े कार्तिक महाराज पर महिला ने दुष्कर्म के गंभीर आरोप लगाए हैं। महिला का कहना है कि 2013 में महाराज ने उसके साथ छह महीने तक दुष्कर्म किया जब वह गर्भवती हो गई तो उसे गर्भपात कराने के लिए मजबूर किया गया। इस मामले में कार्तिक महाराज ने कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की है। उन्होंने कोर्ट से अपने खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने की मांग की है। जस्टिस जय सेनगुप्ता की बेंच ने उनकी याचिका स्वीकार कर ली है। इस मामले पर बुधवार को सुनवाई हो सकती है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कार्तिक महाराज पर महिला ने आरोप लगाए हैं। पुलिस ने कार्तिक महाराज को पूछताछ के लिए बुलाया था। सोमवार को नाबग्राम पुलिस स्टेशन ने भारत सेवाश्रम संघ की मुर्शिदाबाद इकाई को एक नोटिस भेजा था। इस नोटिस में कार्तिक महाराज को मंगलवार को पुलिस स्टेशन में पेश होने को कहा था। हालांकि, कार्तिक महाराज उस समय वहां मौजूद नहीं थे। इसलिए, नोटिस आश्रम के एक प्रतिनिधि को सौंप दिया गया।

मंगलवार को कार्तिक महाराज के वकील जस्टिस सेनगुप्ता की बेंच के पास पहुंचे। उन्होंने पुलिस स्टेशन में पेश होने की समय सीमा समाप्त होने से पहले एफआईआर रद्द करने की गुहार लगाई। याचिका में कहा गया है कि पुलिस ने 13 साल पहले हुई एक घटना के संबंध में महिला की शिकायत के आधार पर बिना किसी जांच के एफआईआर दर्ज कर ली है। कार्तिक महाराज ने शुरुआत से ही आरोपों को गलत बताया था। उनका कहना है कि पुलिस की कार्रवाई सिर्फ उन्हें परेशान करने के लिए की जा रही है। इस मामले को लेकर राजनीति भी गरमा गई हैं। तृणमूल कांग्रेस इस मुद्दे उठा रही है। उनका आरोप है कि बीजेपी इस बलात्कार के मामले पर चुप क्यों है, क्योंकि आरोपी भगवा कैंप के करीबी बताए जाते हैं। दूसरी ओर, पश्चिम बंगाल बीजेपी इकाई ने शिकायत के समय पर सवाल उठाए हैं। बीजेपी नेताओं का कहना है कि कथित दुष्कर्म की घटना के 13 साल बाद शिकायत दर्ज कराई गई है। वो भी ऐसे समय में जब राज्य सरकार और सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज रेप केस को लेकर घिरी हुई हैं। पिछले हफ्ते नाबग्राम पुलिस को दी गई शिकायत में महिला ने आरोप लगाया था कि कार्तिक महाराज ने उसे चानाक आदिवासी आवासीय बालिका विद्यालय में नौकरी का वादा किया था। यह स्कूल आश्रम द्वारा चलाया जाता है। महिला और महाराज की मुलाकात दिसंबर 2012 में हुई थी। पीड़िता ने कहा कि उसे जनवरी 2013 में स्कूल के छात्रावास में रहने की जगह भी दी गई थी। महिला ने कार्तिक महाराज पर जनवरी और जून 2013 के बीच कम से कम 12 बार दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है।

सालाना 6.8 करोड़ टन खाना फेंका जाता है भारत में: रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया में खादय अपशिष्ट के मामले में चीन पहले नंबर पर है जहां हर साल करीब 9.1 करोड़ टन भोजन बर्बाद होता है। इसके बाद भारत का स्थान आता है जहां सालाना लगभग 6.8 करोड़ टन खाना फेंका जाता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की ताजा रिपोर्ट में एशिया में खाद्य अपशिष्ट को लेकर चिंताजनक स्थिति उजागर हुई है। इस आंकड़े के साथ भारत दुनिया में तीसरे स्थान पर है। यह स्थिति उस वक्त और भी गंभीर नजर आती है जब देश में करोड़ों लोग गरीबी और भूख का सामना कर रहे हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारत की कुल खाद्य आपूर्ति का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा उपभोग से पहले ही खराब या बर्बाद हो जाता है। यह सप्लाई चेन की कमजोरियों, भंडारण की समस्याओं और वितरण व्यवस्था की खामियों को भी उजागर करता है।

संयुक्त राष्ट्र ने इस स्थिति को वैश्विक संकट बताते हुए चेताया है कि खाद्य अपशिष्ट न केवल नैतिक और सामाजिक चुनौती है बल्कि इसका पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर भी भारी बोझ पड़ता है। खराब या बर्बाद हुआ भोजन केवल संसाधनों की बर्बादी नहीं है बल्कि इसके उत्पादन में इस्तेमाल पानी, जमीन और ऊर्जा का अपव्यय भी है। साथ ही यह जलवायु परिवर्तन में योगदान देने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को भी बढ़ाता है। भारत सरकार और कई गैर-सरकारी संगठन इस चुनौती से निपटने के प्रयासों में जुटे हैं। 'जीरो फूड वेस्ट' जैसी पहलों के तहत कई शहरों में होटल, रेस्टोरेंट और विवाह आयोजनों से बचा हुआ भोजन गरीबों तक पहुंचाने की योजनाएं बनाई गई हैं। हालांकि विशेषज्ञ मानते हैं कि इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए जन-जागरूकता बढ़ाना, सख्त कानूनी प्रावधान लागू करना और तकनीकी सहयोग को बढ़ाना जरूरी होगा। भारत में फिलहाल करीब 19 करोड़ लोग कुपोषण का सामना कर रहे हैं। ऐसे में खाद्य अपशिष्ट को रोकना सिर्फ एक प्रशासनिक काम नहीं, बल्कि मानवीय जिम्मेदारी है, जिससे भूखमरी और कुपोषण जैसे संकटों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। यह समस्या केवल सरकारी नीतियों से नहीं सुलझेगी, इसमें हर नागरिक की भागीदारी जरूरी है। जब एक तरफ थालियों से भोजन फेंका जाता है और दूसरी तरफ बड़ी आबादी भूख और कुपोषण से ग्रस्त है, तो यह सामाजिक और मानवीय असंतुलन का प्रतीक बन जाता है।

कांवड़ यात्रा को देखते हुए जारी किए कड़े निर्देश, भोजन की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं

–खाद्य लाइसेंस या पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रमुखता से दिखाना होगा

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड सरकार ने आगामी कांवड़ यात्रा को देखकर कड़े निर्देश जारी किए हैं, जिसके तहत यात्रा मार्ग पर स्थित सभी भोजनालयों, होटलों, ढाबों, ठेलों और स्टॉलों के लिए खाद्य लाइसेंस या पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रमुखता से दिखाना होगा। स्वास्थ्य सचिव एवं खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त ने बताया कि उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए इन प्रमाण पत्रों की साफ प्रति प्रतिष्ठान में आसानी से दिखने वाली जगह पर लगी होना चाहिए। छोटे व्यापारियों और ठेला-खोमचा मालिकों को भी अपने पंजीकरण प्रमाण पत्र अपने पास रखने और प्रदर्शित करना होगा। इसके अलावा, होटल, भोजनालय, ढाबे और रेस्तरां को खाद्य सुरक्षा डिस्प्ले बोर्ड भी लगाना होगा, इससे ग्राहक खाद्य गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार व्यक्ति की पहचान कर सकें। अधिकारी ने चेतावनी दी कि इन निर्देशों का पालन न करने वाले व्यवसायों पर खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 की धारा 55 के तहत 2 लाख तक का जुर्माना लग सकता है।

धामी सरकार ने दो टूक कहा है कि पंडालों और सामुदायिक रसोई में श्रद्धालुओं को परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होगा। मिलावट करने वालों और मानकों से छेड़छाड़ करने वालों के खिलाफ तत्काल कानूनी कार्रवाई होगी, क्योंकि श्रद्धालुओं का स्वास्थ्य सर्वोच्च प्राथमिकता है। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के अपर आयुक्त ने बताया कि हरिद्वार, देहरादून, टिहरी, पौड़ी और उत्तरकाशी जिलों में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की विशेष टीमें तैनात की गई हैं। ये टीमें नियमित रूप से पंडालों से दूध, मिठाई, तेल, मसाले और पेय पदार्थों के नमूने एकत्र करेंगी और उन्हें प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजेंगी। यदि कोई नमूना निर्धारित मानकों पर खरा नहीं उतरता है, तब प्रतिष्ठान को तुरंत बंद कर दिया जाएगा। कांवड़ यात्रा 11 जुलाई से शुरू हो रही है, जो श्रावण मास की शुरुआत का प्रतीक है। इस यात्रा में भक्त हरिद्वार, गौमुख, गंगोत्री और सुल्तानगंज जैसे स्थलों से गंगा से पवित्र जल एकत्र कर स्थानीय शिव मंदिरों में चढ़ाते हैं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**